www.terapanthinfo.com

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 8 ■ 16-28 फरवरी, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❒ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❒ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❒ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली--110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

इस अंक में

◆ सर्वधर्म सद्भाव	*आचार्य तुलसी*	3
◆ शांति को पाने की कला	*आचार्य महाप्रज्ञ*	5
◆ स्वस्थ समाज की कल्पना	*डॉ. ज्योति जैन*	9
◆ ऑक्सीजन बार	*जसविंदर शर्मा*	10
◆ ज्ञानी होने का ढोंग	*रामस्वरूप रावतसरे*	12
◆ स्वस्थ जीवन और स्वर संतुलन	*मुनि किशनलाल*	13
◆ बच्चों को सिखाएं बुजुर्गों का सम्मान	*आशीष वशिष्ठ*	16
◆ अणुव्रत पुनर्मिलन	*डॉ. कुसुम लूणिया*	18
◆ नीति नियामकों की निष्ठुरता	*सुषमा जैन*	20
◆ सत्कार से शत्रु भी मित्र	*डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी*	23
◆ उत्साह एवं कर्मण्यता	*सीताराम गुप्ता*	24
◆ उचित नहीं पशुओं पर अत्याचार	*डॉ. चंचलमल चोरडिया*	26
◆ कैसे टिके संयुक्त परिवार?	*डॉ. पी.सी. जैन*	29
◆ शर्मशार हुए रिश्ते	*विजयराज सुराणा*	30

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ राष्ट्र चिंतन	8
◆ झाँकी है हिन्दुस्तान की	17
◆ कविता	22, 25
◆ पाठकों के स्वर	33
◆ अणुव्रत आंदोलन	35-40

सामाजिक व्यवस्थाएं एवं असहयोग का ब्रह्मास्त्र

पिछले अंक में हमने समाज और सामाजिक व्यवस्थाओं से जुड़े बिन्दुओं को उभारा। समाज कैसे स्वस्थ एवं शक्ति-सम्पन्न बने इस पर भी चर्चा आवश्यक है। **जैसा कि मैंने लिखा सामाजिक व्यवस्थाओं का सरलीकरण एवं सादगी ही टूटते समाज को बचा पायेगी! क्या यह संभव है? उत्तर हाँ में है।**

हमारे यहाँ विवाह को पवित्र संस्कार माना गया है। विवाह मात्र स्त्री-पुरुष का मिलन ही नहीं वरन् दो परिवारों का, दो आत्माओं का मिलन है। इसके माध्यम से दो परिवारों दो परम्पराओं का मजबूत गठबंधन होता है और वे आनन्द-प्रसन्नता का अनुभव करते है। संबंध प्रगाढ़ बने, परिवारों की समाज में कीर्ति बढ़े, स्वस्थ एवं संस्कारित परिवार बने और कुल परम्परा आगे बढ़े यही है विवाह की सामाजिक मर्यादा। इन स्वस्थ सामाजिक मर्यादाओं को हम तार-तार कर रहे है जिससे समाज रुग्ण और पथभ्रष्ट होता जा रहा है। अहं, प्रदर्शन और आडम्बर इसके मूल में है। इनके चलते विवाह संस्था टूटन के कगार पर है।

संबंध, सगाई और विवाह समारोह पर हम जिस तरह के नाटक आज कर रहे है उससे अर्थ-सम्पन्न और अर्थ-विपन्न परिवारों की खाई चौड़ी होती जा रही है और जाने-अनजाने समाज वर्ग-संघर्ष की तरफ बढ़ रहा है। अतः विवाह संस्था और समाज को बचाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक आचार संहिता का निर्धारण हो और सभी के लिए उसका पालन अनिवार्य बने। सामाजिक आचार संहिता के संभावित प्रमुख बिन्दु निम्न हैं

- **वैवाहिक एवं सामाजिक अवसरों पर आयोजित भोज में 21 तथा अल्पाहार में 11 से अधिक व्यंजन नहीं हों।**
- **समारोह घर-आंगन अथवा सामाजिक स्थलों पर दिन में ही आयोजित हो।**
- **दहेज की मांग अथवा ठहराव नहीं हो।**
- **आडम्बर एवं प्रदर्शन पर प्रतिबंध हो।**
- **समारोह में उत्तेजक-मादक-नशीले पदार्थों का उपयोग वर्जित हो।**
- **पृथ्वी को बचाने के क्रम में आतिशबाजी पर प्रतिबंध रहे।**
- **उत्तेजक एवं भौंडे नाच-गानों का आयोजन नहीं हो।**
- **धार्मिक आयोजनों में भी सादगी बरती जाए।**

सामाजिक आचार संहिता के ओर भी बिन्दु हो सकते है। निर्धारण के उपरांत इसे प्रभावी ढंग से लागू करना भी हमारे लिए चुनौती है। लेकिन इस चुनौती को स्वीकार करके ही हम आगे बढ़ सकेंगे। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने 1960 में 'नया मोड़' के माध्यम से समाज को नई दिशा दी थी। आवश्यकता इस बात की है कि हम पुनः नया मोड़ लें। जो समाज की मर्यादाओं को तोड़ते हैं उनकी तो हम चर्चा करते है किन्तु जो समाज को बहुमान देते है उनकी चर्चा नहीं करते। चरित्र-सम्पन्न व्यक्तियों को दरकिनार करने की हमारी यह प्रवृत्ति ही उन अर्थ-सम्पन्न लोगों के हौंसले बढ़ा रही है जो सामाजिक मर्यादाओं की लक्ष्मण रेखा को लांघते है। अतः हमें हिम्मत करके अमर्यादित लोगों के विरुद्ध असहयोग करने का क्रम प्रारंभ करना होगा तभी स्वस्थ समाज की संरचना हो पायेगी। इस प्रसंग में उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली की लेखनी से निःसृत उपन्यास 'दीक्षा' का यह संदर्भ दिशा सूत्र है

गुरु विश्वामित्र के आश्रम में अयोध्या के सेनानायक बहुलाश्व और उसके बेटे देवप्रिय का राम ने न्याय करते हुए उन्हें मृत्यु दंड दिया और कहा केवल अपराधी को दंड देने से न्याय पूर्ण नहीं हो जाता बहुलाश्व! अपराधी की रक्षा करने वालों को भी उनके दुष्ट कृत्यों के लिए दंडित किया जाना न्याय के अन्तर्गत है। तुमने पुत्र प्रेम में पड़ कर प्रजा पर अत्याचार करने वाले राक्षसों की रक्षा की है। तुमने अपना कर्त्तव्य पूर्ण नहीं किया, अपने अधिकारों का दुरुपयोग किया। इन अपराधों के लिए तुम्हें कोई कठिन दंड मिलना चाहिए, किन्तु मैं दयावश तुम्हें केवल मृत्युदंड दे रहा हूँ।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के इस नीति वाक्य की गहराई में हम झांके। अपराधी का साथ जब हम सभी दे रहे हैं तो फिर अपराधी तो अपराध करेगा ही, बढ़-चढ़कर करेगा। न्याय करने वाली जनता-जर्नादन ही जब अपराधी का साथ दे रही है तो फिर न्याय कौन करेगा ? इसलिये जो सामाजिक आचार संहिता की धज्जियां उड़ाते है उनका हम साथ नहीं दें, उनके बनाये विविध व्यंजनों का स्वाद नहीं चखे वरन् वहाँ से भूखे पेट लौट आएं, उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं दें और बड़ा आदमी कहना बंद करें। हमारी असहमति और असहयोग का यह ब्रह्मास्त्र सामाजिक मर्यादाओं को पुनर्प्रतिष्ठापित करेगा और टूटती विवाह संस्था का संरक्षण भी।

■ **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

कोई भी सम्प्रदाय बुरा नहीं होता। बुरी होती है सांप्रदायिकता। सम्प्रदाय का अर्थ है गतिशील परम्परा। इसे रूढ़ बनाने से साम्प्रदायिकता का जन्म होता है। सम्प्रदाय, सत्य की उपलब्धि का माध्यम है। माध्यम में उलझने वाले सत्य तक नहीं पहुँच सकते। सत्य तक पहुँचने या सत्य को पाने का एक ही रास्ता है सम्प्रदाय में रहते हुए भी साम्प्रदायिक संकीर्णता से ऊपर उठना। संकीर्णता के संस्कार छटने से ही सब धर्मों के प्रति सद्भावनापूर्ण विचार रखे जा सकते हैं।

सर्वधर्म सद्भाव

आचार्य तुलसी

धर्म, जीवन का शाश्वत मूल्य है। यह एक सार्वभौम सत्ता है। आत्म साक्षात्कार या सत्य के साक्षात्कार की प्रक्रिया का नाम धर्म है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आत्मा ही धर्म है, सत्य ही धर्म है। धर्म, एक अखंड चेतना है। इसे टुकड़ों में विभक्त करना कठिन है। इस विचार बिन्दु की यात्रा करते समय 'सर्व-धर्म-सद्भाव' यह शब्द संकलना सही प्रतीत नहीं हुई। सद्भाव का प्रसंग तब आता है, जब अनेकत्व हो। एकत्व में असद्भाव का बीज बोएगा कौन? यदि हम 'सर्व-धर्म-सद्भावना की चर्चा करते हैं तो वह धर्म का अवमूल्य है क्योंकि निश्चय नय की दृष्टि से धर्म एक ही है।

व्यवहार के धरातल पर धर्म को अनेक भेदों में रूपायित किया जा सकता है। जैसे क्षमा, निर्लोभता, ऋजुता, मृदुता, लाघव, संयम, सत्य, तप, त्याग व ब्रह्मचर्य आदि। इस क्रम से धर्म के हजारों रूप सामने आएँ तो भी उनके प्रति असद्भाव उत्पन्न नहीं होगा, क्योंकि यह तो दर्पण में संक्रांत प्रतिबिम्बों वाली बात है। एक व्यक्ति के अनेक प्रतिबिम्ब हो सकते हैं। वैसे ही एक धर्म के अनेक रूप हो सकते हैं।

सर्व-धर्म-सद्भाव का जो नारा है, वह मजहब को लेकर है क्योंकि एक युग ऐसा आया, जिसमें धर्म अपनी व्यापकता को खोकर सम्प्रदाय अर्थ में ही रूढ़ हो गया। सम्प्रदायों का अस्तित्व किसी युग-विशेष की देन नहीं हैं यह तो विचार-भेद की स्वाभाविक परिणति है। राजनीति और समाजनीति में जिस प्रकार सिद्धांत और नीति के आधार पर अलगाववादी मनोवृत्ति उभरती है, वैसे ही धर्म भी इसका अपवाद नहीं है। यह कोई अनहोनी बात भी नहीं है, क्योंकि मनुष्य यंत्र नहीं है। उसे सोचने-समझने की स्वतंत्रता है। अब तो यंत्र भी सोचते हैं, परामर्श देते हैं, कविता करते हैं और विवेकपूर्वक क्रिया करते हैं फिर मनुष्य की तो बात ही क्या?

किसी भी देश में अनेक जातियों, वर्गों या संप्रदायों का होना कोई समस्या नहीं है। समस्या है अपने को सर्वोच्च मान कर अन्य सम्प्रदायों को छोटा दिखाने या तिरस्कृत करने का मनोभाव। धार्मिक असद्भाव के बीजों का वपन इसी धरती पर होता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो साम्प्रदायिक भावना को उकसाते रहते हैं। इस काम में कट्टरतावादी और असामाजिक तत्त्वों का हाथ रहता है। साम्प्रदायिक भावना जब वैमनस्य और संघर्ष का रूप लेती है, तब खून-खराबे की नौबत आ जाती है। इस साम्प्रदायिक उन्माद ने हजारों-हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दिया है।

दो भिन्न जातियों या सम्प्रदायों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है, वैसे ही एक सम्प्रदाय की दो परम्पराओं में भी उपद्रवी तत्त्वों को खुलकर खेलने का मौका मिलता है। जैन, बौद्ध, मुसलमान, ईसाई, वैष्णव, कोई भी तो संघर्ष की काली छाया से अपना बचाव नहीं कर सके! छोटी-छोटी बातों को लेकर हुए झगड़ों में मानवीय मूल्यों की जो निर्मम हत्या हुई है, वह रोमांच पैदा करने वाली है। पर एक बात स्पष्ट है कि यह समस्या आज की नहीं, प्राचीन है।

कहा जाता है कि महाराज भोज

के समय में एक मजहबी समस्या ने उग्र रूप धारण कर लिया। बात यहाँ तक बढ़ी कि राजा भोज को उसमें हस्तक्षेप करना पड़ा। भविष्य में वैसी समस्या न उभरे, इस बात को ध्यान में रखकर राजा ने सब धर्माधिकारियों को उपस्थित होने का आदेश दिया। प्रमुख-प्रमुख लोग पहुँच गये तो राजा ने उन सबको एक कमरे में बंद कर निर्देश दिया आप सब मिलकर चिंतन करो और एक हो जाओ। एक होने के बाद ही आपको अवकाश मिलेगा।

बात पूरे शहर में फैल गई। वहाँ प्रवासित सूराचार्य को धर्मगुरुओं पर आई मुसीबत की जानकारी मिली। वे राजा के पास पहुँच कर बोले राजन्, हम आपसे एक समस्या का समाधान चाहते हैं। राजा विनम्रता के साथ बोला हमारा पूरा राज्य आपकी सेवा के लिए तत्पर है। कहिए, आपके सामने क्या समस्या है? सूराचार्य ने कहा राजन् बात यह है कि शहर में एक ही चीज की सैकड़ों-सैकड़ों दुकानें हैं। हर दुकानदार अपने माल को अच्छा बताता है। इससे ग्राहकों को मतिभ्रम हो जाता है। अपनी प्रजा के लिए आप एक काम करें। एक समान चीजों वाली अनेक दुकानों को उठा कर एक कर दें।

राजा गंभीर होकर बोला महात्मन्! आपका कथन ठीक है। पर क्या यह संभव है? इस क्रम से व्यापारियों और ग्राहकों, दोनों की समस्या बढ़ेगी। सूराचार्य ने कहा आप मालिक हैं। चाहें तो सब कुछ कर सकते हैं। राजा ने अपनी अक्षमता प्रकट करते हुए कहा यदि ऐसा कुछ हुआ तो विप्लव मच जाएगा। सूराचार्य बोले तो फिर सब धर्म सम्प्रदायों में एकत्व कैसे आएगा? सबकी आस्थाएँ और रुचियां भिन्न-भिन्न हैं। उनको एक ही रास्ते चलाने से विप्लव नहीं मचेगा? बात राजा की समझ में आ गई। उसने तत्काल सब धर्मगुरुओं को मुक्त कर दिया।

आस्था, रुचि या विचार में जो अंतर है, वह समाप्त हो जाए, यह कभी संभव नहीं लगता। संभावना इतनी ही हो सकती है कि व्यक्ति अपनी धार्मिक आस्था के प्रति अडिग रहता हुआ दूसरों के प्रति सद्भाव रखे। प्रश्न हो सकता है कि दूसरों के जो विचार ग्राह्य नहीं है, मान्य नहीं है और जिनका कोई औचित्य भी नहीं है, उनके प्रति सद्भाव कैसे रखा जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर इतना सा ही है कि जो विचार किसी को ठीक न लगे वह स्वीकार न करे। सामने वाले व्यक्ति को प्रेम से समझाएँ। वह समझे तो ठीक, अन्यथा स्वयं तटस्थ हो जाएँ, ज्ञाताद्रष्टा भाव का विकास करें। किसी भी विरोधी विचारधारा को लेकर वैमनस्य रखना, घृणा फैलाना, कलह करना, हिंसा पर उतारू होना, क्रूरता है। धर्म के नाम पर यह सब करना तो किसी भी स्थिति में वांछनीय नहीं है।

कुछ लोग सर्वधर्म सद्भाव के नाम पर गलत तत्त्वों को प्रोत्साहन देते हैं। यह धार्मिक सद्भावना की विडंबना है। मेरे अभिमत से सर्वधर्म सद्भाव का अर्थ इतना ही होना चाहिए कि अपने द्वारा स्वीकृत सही सिद्धांतों के प्रति दृढ़ विश्वास और दूसरों के विचारों के प्रति सहिष्णुता। दूसरों के जो विचार जनता में अंधविश्वास, मिथ्यात्व और गलत अवधारणा के जनक हों, उनके प्रति सद्भावना कैसे होगी? जैसे कोई मजहब या धर्मगुरु हिंसा को प्रश्रय देता है, मांस भक्षण को प्रोत्साहन देता है, अब्रह्मचर्य को साधना का अंग मानता है, इसी प्रकार की अन्य बातें कहता है, उन्हें आँख मूँदकर स्वीकार कर लेना धार्मिक सद्भावना नहीं है। यह तो पतन का रास्ता है। संभव हो सके तो ऐसी अवधारणाओं का अहिंसात्मक प्रतिकार किया जाना चाहिए।

सर्वधर्म-सद्भाव का विचार अनाग्रह की पृष्ठभूमि पर ही फलित हो सकता है। किसी भी सम्प्रदाय के सिद्धांतों पर आक्षेप करना, किसी के प्रति घृणा व तिरस्कार के भाव फैलाना, किसी के साथ अवांछनीय व्यवहार करना, सद्भावना की बाधाएँ हैं। वैचारिक सहिष्णुता का विकास और धर्म के मौलिक सिद्धांतों को लोकजीवन में उतारने का सामूहिक प्रयत्न ये दो बातें ऐसी हैं, जो धार्मिक सद्भावना की निष्पत्ति हो सकती हैं।

कोई भी सम्प्रदाय बुरा नहीं होता। बुरी होती है सांप्रदायिकता। सम्प्रदाय का अर्थ है गतिशील परम्परा। इसे रूढ़ बनाने से साम्प्रदायिकता का जन्म होता है। सम्प्रदाय, सत्य की उपलब्धि का माध्यम है। माध्यम में उलझने वाले सत्य तक नहीं पहुँच सकते। सत्य तक पहुँचने या सत्य को पाने का एक ही रास्ता है सम्प्रदाय में रहते हुए भी साम्प्रदायिक संकीर्णता से ऊपर उठना। संकीर्णता के संस्कार छटने से ही सब धर्मों के प्रति सद्भावनापूर्ण विचार रखे जा सकते हैं।■

सर्वधर्म-सद्भाव का विचार अनाग्रह की पृष्ठभूमि पर ही फलित हो सकता है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

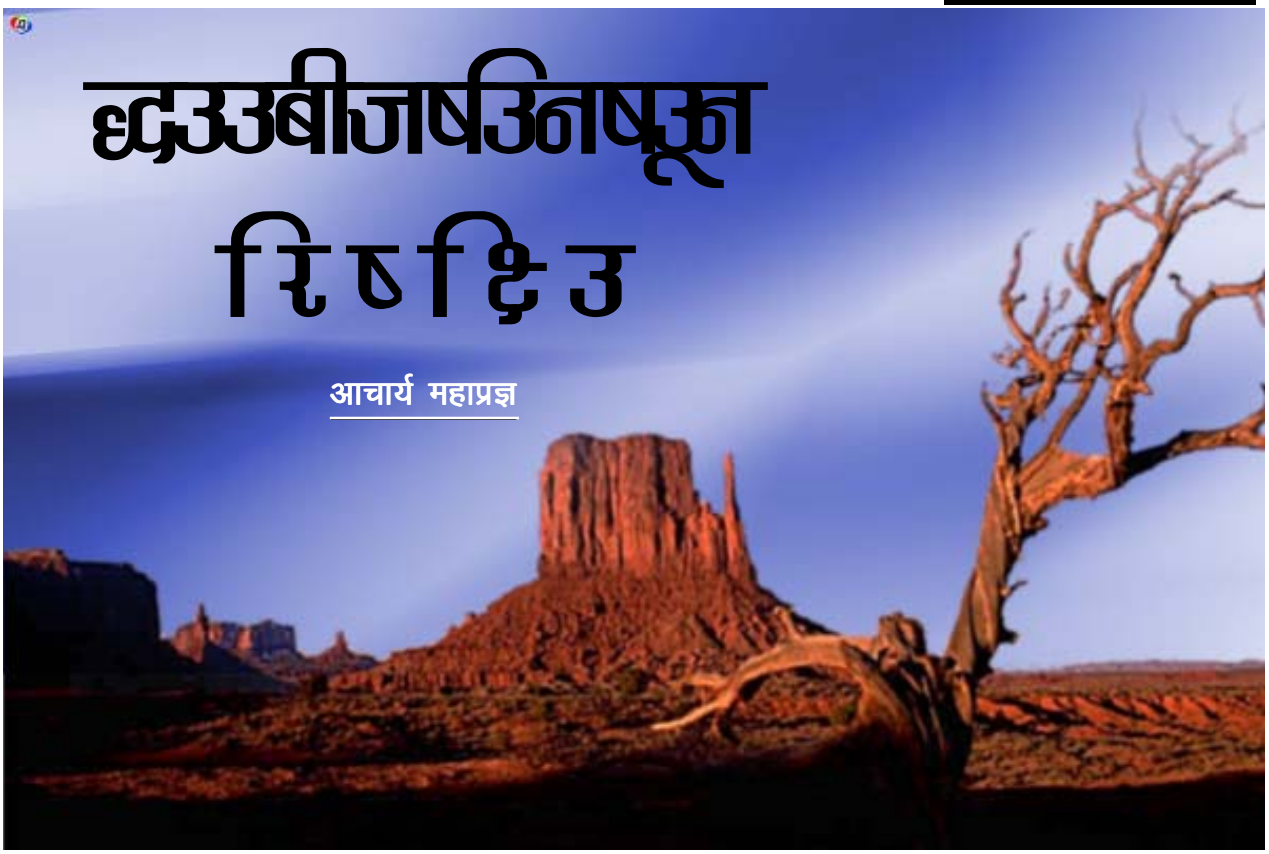

ध्द्रउउबीजषउिनषूज्ञ रिषष्टिउ

आचार्य महाप्रज्ञ

सुख और शांति हमारे शब्दकोष में सबसे ज्यादा प्रिय शब्द हैं। हर आदमी सुख और शांति चाहता है। कोरा सुख नहीं चाहता, शांति चाहता है। क्योंकि वह जानता है कि शांति के बिना सुख का अनुभव नहीं हो सकता। वह सुख और शांति दोनों चाहता है पर शांति नहीं मिलती है और सुख भी नहीं होता। सुख की खोज और सुख की दौड़ सदा चालू रहती है। वह उस वृक्ष को नहीं पा सका, जो सुख और शांति दे सकता है। उस वृक्ष का नाम है कल्पवृक्ष।

भारतीय साहित्य में तीन शब्द बहुत प्रचलित हैं चिंतामणिरत्न, कामधेनु और कल्पवृक्ष। चिंतामणिरत्न को हाथ में लेकर चिंतन करो, वह कार्य पूर्ण हो जाएगा। कामधेनु के सामने कामना करो, कामना पूरी हो जायेगी और कल्पवृक्ष के सामने कल्पना करो, कल्पना पूरी हो जायेगी। जब तक कल्पवृक्ष हाथ में नहीं आता, तब तक शांति नहीं हो सकती। आचार्य सोमप्रभ ने तपस्या के नए कल्पवृक्ष का चिंतन किया 'हर वृक्ष की जड़ होती है और जड़ के आधार पर पेड़ पनपता है उस कल्पवृक्ष की जड़ क्या है? 'संतोषः स्थूलमूलः' संतोष उसकी जड़ है। जो व्यक्ति संतोष करना नहीं जानता, वह कभी शांति का स्पर्श नहीं कर सकता। निरंतर असंतोष बना रहता है।

कवि सुन्दर ने ठीक कहा है 'जब हजार था तो लाख पाने के लिए असंतोष हो गया। जब लाख हो गया तब करोड़ पाने के लिए असंतोष हो गया और जब करोड़ हो गया, तब अरब, खरब पाने के लिए असंतोष हो गया। कहाँ अंत आएगा। ठीक कहा है 'असंतोषस्य नास्त्यंतः' असंतोष का कोई अंत ही नहीं है। उसका कोई चरम बिन्दु नहीं है कि जहाँ जाकर आदमी रुक जायेगा। रुकेगा नहीं और आगे बढ़ेगा, और आगे बढ़ेगा। जब आकांक्षा आगे से आगे बढ़ेगी तब शांति नहीं हो सकती। शांति तो तब हो सकती है जब आदमी यह अनुभव करे कि बस! मुझे जीवन चलाने के लिए जितना चाहिए था उतना मुझे मिल गया। अब भागमभाग करना व्यर्थ है। यह मानसिकता बन जाए तब शांति होती है और संतोष आता है। जहाँ संतोष है वहाँ शांति है। संतोष और शांति, असंतोष और अशांति दोनों समानान्तर रेखा की तरह साथ-साथ चलते हैं।

साधना और तपस्या को हम एक कल्पवृक्ष मान लें। कल्पवृक्ष हमें सब कुछ दे सकता है। पर वह तपस्या कोरा भूखा रहना नहीं है, कोरा उपवास करना भी नहीं है। तपस्या के इस कल्पवृक्ष की जड़ है संतोष। तपस्या करता है, उपवास करता है और असंतोष बढ़ता चला जाता है, वह शांति नहीं देता। हम आखिर कहीं तो जाकर संतोष करें। आदमी कहीं नहीं रुकेगा तो मरते समय

तक दुःखी होगा। एक व्यक्ति जिसके पास दस-बीस अरब की संपत्ति थी पर अंतिम समय में बहुत दुःखी होकर मरा। कभी रुका ही नहीं, थमा ही नहीं, चलता ही चला गया। यह नहीं सोचा कि जीवन एक दिन पूरा हो जायेगा। असंतोष बढ़ता गया, दुःखी होता गया और आखिर नहीं मिली, सुख भी नहीं मिला। पास में बहुत था पर भोग नहीं कर सका।

कल्पवृक्ष का तना है उपशम। अपने क्रोध का नियंत्रण, अहंकार का नियंत्रण, लोभ का नियंत्रण उसका तना है। जब आदमी अपने क्रोध को मुट्ठी में करना नहीं जानता, वश में करना नहीं जानता, क्रोध तत्काल प्रकट हो जाता है, वह व्यक्ति उस कल्पवृक्ष को नहीं पा सकता, उसकी साधना नहीं कर सकता। क्रोध हर आदमी को आता है।

दो प्रकार के लोग होते हैं 'एक व्यक्ति को क्रोध आता है और वह तत्काल उस पर नियंत्रण कर लेता है। एक व्यक्ति को क्रोध आता है वह नियंत्रण नहीं करता और ज्यादा बढ़ता ही चला जाता है। तपस्या के कल्पवृक्ष है उपशम, क्रोध, अहंकार और लोभ को उपशांत रखना। पेड़ की जड़, तना और फिर उसकी शाखाएं निकलती है। उस कल्पवृक्ष की शाखाएं कौन-सी हैं? उसकी पाँच शाखाएं हैं

1 आँख का संयम
2 कान का संयम
3 नाक का संयम
4 जीभ का संयम
5 त्वचा का संयम

तपस्या करने वाला, तपस्या के कल्पवृक्ष को पाने वाला व्यक्ति इन पाँच शाखाओं का विकास करता है। ये पाँच शाखाएं जब पूरी विकसित होती है, आदमी शांति के साथ जीता है। कोई भी आदमी कहे कि मैं दुःखी हूँ तो उसे पहले यह सोचना चाहिए कि मेरा इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं है, नियंत्रण नहीं है इसलिए मैं दुःखी हूँ। अगर अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण हो तो शायद आदमी दुःखी नहीं बनता। समस्या तब आती है जब कोई घटना घटित होती है।

एक आदमी प्रदेश गया हुआ था। बहुत वर्ष हो गये। पुराने जमाने में लोग पैदल चलते थे। कभी-कभी बैलगाड़ी से चलते थे, लंबी यात्राएं होती थी। लंबे समय तक वह प्रदेश में रहा। उसका लड़का थोड़ा बड़ा हो गया, समझदार हो गया। एक दिन माँ के पास आकर बोला मां! मुझे सब लड़के निबापा कहते हैं यानी बिना पिता का पुत्र कहते हैं। इससे मुझे बड़ा कष्ट होता है। माँ ने कहा बेटा! तुम्हारे पिता धन कमाने के लिए प्रदेश गये हुए हैं। कब आयेंगे? इसका तो मुझे भी पता नहीं है। उस समय कोई संचार का माध्यम ही नहीं था, साधन ही नहीं था। कोई संवाद भेजते तो आज का भेजा हुआ दो-चार महिने बाद के बाद पहुँचता। बड़ी विचित्र स्थिति थी। माँ ने कहा मुझे पता नहीं तेरा पिता कब आयेगा। बेटे ने कहा माँ! मैं पिता से मिलने जाऊँगा। तू छोटा है अभी कहाँ जायेगा? बहुत समझाया, पर नहीं माना। आखिर प्रस्थान कर दिया।

संयोगवश रास्ते में दोनों मिल गए। पिता को यह पता नहीं कि यह मेरा बेटा है। बेटे को भी पता नहीं कि यह मेरा पिता है। न उसने देखा, न इसने देखा। बचपन में देखा था, जब वह बहुत छोटा था। एक दूसरे का अता-पता किसी से नहीं लिया। दोनों एक स्थान पर ठहरे। रात का समय। लड़का बहुत जोर-जोर से चिल्ला रहा था। पिता धन कमाकर लाया था साथ में नौकर-चाकर भी थे। उसने अपने एक नौकर को भेजा। पता करो, कौन चिल्ला रहा है? वह आया, आकर बोला कि कोई एक बच्चा चिल्ला रहा है। क्यों चिल्ला रहा है? यह मैंने नहीं पूछा। जाकर पूछो। पूछकर आया और बोला उसके पेट में भयंकर दर्द हो गया है इसलिए चिल्ला रहा है। सेठ ने कहा उसे समझा दो, मेरी नींद हराम हो रही है। आदमी गया, जाकर कहा देखो, सेठजी की नींद हराम हो रही है, चिल्लाओ मत, शांति से रहो।

लड़का दो मिनट शांत रहा। उसे भयंकर दर्द हो रहा था, फिर चिल्लाने लग गया। आखिर उसने नौकर से कहा जाओ, उसका बिस्तर बाहर फेंक दो। उसको धर्मशाला से बाहर निकाल दो, वह यहाँ नहीं रह सकता। नौकर ने वैसा ही कर दिया। उसके साथ वाले आदमी ने बहुत समझाया कि छोटे बच्चे के साथ ऐसा व्यवहार मत करो। पर नहीं माना, बाहर निकाल दिया।

उसने ऐसा क्यों किया? क्या वह उसके लिए उचित था? क्या यह न्याय था? धर्मशाला में सबको ठहरने का अधिकार होता है। अहंकार पर, इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं था। जिसका इन्द्रियों पर अहंकार पर नियंत्रण नहीं होता, वह अन्याय करता है। अन्याय न करे तो आश्चर्य, अन्याय करे तो कोई आश्चर्य नहीं। लोग अपने अहंकार के कारण अन्याय और इन्द्रियों की आकांक्षा के कारण अन्याय करते हैं।

सुबह का समय हुआ और उसके मन में विचार आया कि कोई हल्ला नहीं हो रहा है नौकर से कहा जाओ पता लगाकर आओ कि वह कहाँ से आया है? यह बात पहले ही पूछ लेता तो कितना अच्छा होता। नौकर गये और देखा कि बच्चा तो हमेशा के लिए गहरी नींद में सो गया। अब वह नहीं बोलेगा, नहीं चिल्लायेगा। लोगों ने पूछा यह कहाँ से आया था? गांव का नाम बताया-लक्ष्मणगढ़। जब उसने आकर कहा कि बच्चा तो मर गया और गांव का नाम बताया लक्ष्मणगढ़। यह गांव तो मेरा है जहाँ मुझे जाना है। स्वयं

तत्काल नीचे आया। आकर जो लोग साथ में थे उनसे पूछा बच्चा कौन है? पता चला कि यह तो सेठजी का बेटा है। अपने पिताजी को लाने के लिए जा रहा है। जब सेठ ने सुना तब आकाश-पाताल एक हो गया। यह तो मेरा ही बेटा है और मुझे ही लेने के लिए जा रहा था। अब दुःख का पहाड़ टूट पड़ा।

यह दुःख किसने पैदा किया? अपने अनियंत्रण ने। यदि अपना नियंत्रण होता तो शायद अपने बेटे को अपने हाथों से कभी नहीं मारता। आदमी अपने अनियंत्रण के कारण दुःख पैदा कर लेता है, फिर रोता है, पछताता है, सब कुछ करता है। इसलिए कहा गया है कि तपस्या के कल्पवृक्ष की शाखाएं संयम की शाखाएं हैं, नियंत्रण की शाखाएं है या विजय की शाखाएं हैं। जिस व्यक्ति का अपनी इन्द्रियों पर, मन और क्रोध आदि कषाय के प्रकारों पर नियंत्रण हो जाता है तब तपस्या का कल्पवृक्ष उसकी सारी कल्पनाओं को पूरा करता है, वह जो मांगता है वह बात पूरी हो जाती है।

तपस्या के कल्पवृक्ष का पत्र है अभय। एक तपस्वी व्यक्ति जिसे अपनी तपस्या का कल्पवृक्ष प्राप्त हो जाये, वह कभी भयभीत नहीं होता। बहुत साफ-साफ बात कहने की उसमें ताकत होती है, हिम्मत होती है। एक बार रात्रि में हम दैनिक भास्कर के मालिक रमेश अग्रवाल से बातचीत कर रहे थे। बातचीत में मैंने कहा वे लोग डरते हैं जो कुछ पाना चाहते हैं। जिनके मन में आकांक्षा होती है वे डरते हैं। सही बात नहीं कहते, मन में घबराहट होती है कि सही कहूँगा तो मुझे जिस व्यक्ति को तपस्या का कल्पवृक्ष मिल गया उसे डरने की जरूरत नहीं है उसकी आकांक्षा नहीं है, कुछ पाना नहीं है। जिसे कुछ पाना नहीं है, वह डरता नहीं है, उसे कभी भय नहीं होता।

अभय होना बहुत बड़ी बात है। जीवन में सबसे बड़ा दुःख है भय और सबसे बड़ा सुख है अभय। अभय है तो दुःख के बहुत सारे कारण समाप्त हो जाते हैं। तपस्या के कल्पवृक्ष की प्रवाल है शील। एक शील की संपदा है, एक धन की संपदा है और एक चरित्र की संपदा है। जिस व्यक्ति के पास चरित्र की संपदा होती है वह तपस्या के कल्पवृक्ष से अपनी सारी कल्पनाओं को पूरा करने में समर्थ हो जाता है। इस कल्पवृक्ष पर फल और फूल भी लगते हैं। किसी भी वृक्ष को सींचना जरूरी है, पानी नहीं मिलेगा तो वह भी सूख जायेगा।

श्रद्धा के पानी से वह कल्पवृक्ष सींचा जाता है। कल्पवृक्ष का फूल है स्वर्ग और मोक्ष है उसका फल। निष्कर्ष के रूप में संतोष है इसकी जड़ उपशम उसका तना, इन्द्रिय विजय उसकी पाँच शांखाएं, अभय उसका पता, स्वर्ग उसका फूल और मोक्ष है उसका फल। यह है तपस्या का कल्पवृक्ष। तपस्या करने वाले सोच कि तपस्या में कितनी चीजें साथ में चाहिए, संतोष भी चाहिए, उपशम भी चाहिए, इन्द्रिय विजय भी चाहिए, अभय भी चाहिए, श्रद्धा का जल भी चाहिए। ये सब हैं तो फिर स्वर्ग और मोक्ष की चिंता मत करो, वह तो अपने आप फल के रूप में मिल जायेगा। फल के लिए कभी चिंता करता है, भूमि की चिंता करता है, खाद की चिंता करता है, पानी की सिंचाई की चिंता करता है। यह चिंता कभी नहीं करता कि मक्का, गेहूँ, ज्वार आयेगा या नहीं आयेगा। उसे पक्का विश्वास है कि यदि वह बोयेगा तो सब कुछ मिलेगा। किसान के मन में यह संदेह हो जाए कि जो बीज बो रहा हूँ फल लगेगा या नहीं लगेगा तो सब आदमी भूखे मर जायेंगे। अगर किसान के मन में संदेह हो तो रोटी सबको कहाँ से मिले।

कहा जाता है कि एक बार आकाश में इंद्र की भविष्यवाणी हुई कि अब मैं बारह वर्ष तक नहीं बरसूंगा। पुराने जमाने में बहुत भयंकर अकाल होता था। हिन्दुस्तान में बारह वर्ष के अनेक आकाल हुए। जेठ का महिना आया। किसान अपना हल लेकर खेतों में गये, भूमि को कुरेदना शुरू किया। फिर आकाशवाणी हुई कि जब मैंने भविष्यवाणी कर दी कि बारह वर्ष तक मैं नहीं बरसूंगा तो तुम यह निकम्मा श्रम क्यों कर रहे हो। सब किसान इकट्ठे हुए। एक प्रबुद्ध किसान बोला इन्द्रदेव! आप बरसो या मत बरसो, यह आपकी मर्जी। हम भूमि की जुताई तो करेंगे। क्यों? आप नहीं बरसेंगे और हम यह काम छोड़ देंगे तो अगली पीढ़ी निकम्मी हो जाएगी, वह बुवाई करना नहीं जानेगी। हम तो अपना काम करेंगे, आप करो चाहे मत करो। आखिर इन्द्र को झुकना पड़ा और बरसना पड़ा। जो

हम शांति को पाने की कला सीखें और शांति को पाने का प्रयत्न करें। जैसे ही हमारे जीवन में शांति का अवतरण होता है, सुख का प्रयत्न करें। जैसे ही हमारे जीवन में शांति का अवतरण होता है, सुख का ज्वार आ जाता है, सुख की बाढ़ आ जाती है, फिर दुःख उसके कभी भी सामने नहीं आता, बेचारा दूर से ही चला जाता है। इसलिए हमारा सारा प्रयत्न उस तपस्या के कल्पवृक्ष की छांह में बैठने का हो, जिससे हम शांति का जीवन जी सकें।

आदमी अपनी निष्ठा के साथ सारा काम करता है, अपने संकल्प के साथ काम करता है वह तपस्या के कल्पवृक्ष को पा सकता है। फिर विकास, सुख और शांति का द्वार सदा के लिए उद्घाटित हो जाता है।

हम सब चिंतन करें कि हमें शांति से जीना है, सुखी रहना है तो तपस्या भी करनी है। तपस्या का अर्थ कोरा उपवास करना नहीं होता, अच्छा चिंतन करना भी तपस्या है। अच्छी पढ़ाई करना, स्वाध्याय करना भी तपस्या है, ध्यान करना भी तपस्या है। विनम्रता, अहंकार का विलय करना भी तपस्या है।

अहंकार का विलय करना बड़ा कठिन तप है। छोटे-छोटे आदमियों में अहंकार होता है। छोटे-छोटे प्राणियों में भी अहंकार है। दो चींटियां जा रही थी और सामने से हाथी आ रहा था। एक चींटी ने कहा आज तो मन में आ रहा है कि हाथी के साथ लड़ाई करें। दूसरी चींटी बोली-कैसी भोली बात करती हो। वह अकेला है और हम दो हैं। बेचारा हमारे साथ लड़ेगा ही कैसे? हर छोटे प्राणी में भी अहंकार बोलता है। बड़ा कठिन है विनम्रता का विकास।

विनम्रता बहुत बड़ी तपस्या है, आंतरिक तपस्या है। जिस व्यक्ति में विनम्रता है, सहन करने की शक्ति है, स्वाध्याय है, ध्यान है वह अशांति का जीवन नहीं जीता। जो अशांति में नहीं रहता, वह सदा सुख का जीवन जीता है। इसलिए पदार्थों में जीने वाला आदमी, पदार्थ का भोग-उपभोग करने वाला व्यक्ति यह चिंतन करें कि वह तो मेरे जीवन की अनिवार्यता है। किन्तु अगर मुझे सुखी रहना है तो मुझे शांति से रहना चाहिए, शांति का विकास करना चाहिए। शांति का विकास करना हो तो तपस्या के कल्पवृक्ष की छांह में मुझे बैठना है। इस छांह के नीचे बैठने वाला व्यक्ति सुख का जीवन जीएगा।

जहर के समुद्र में रहता हुआ भी व्यक्ति अमृत की ऐसी घूंट पीता है कि जहर उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। जटिल समस्यओं, परिस्थितियों में रहता हुआ भी वह उससे ऊपर रहता है। सुखी जीवन का यह मंत्र मिल जाए तो हम बड़े आनंद के साथ शांति का विकास कर सकते हैं। ऐसे सुख का अनुभव कर सकते हैं जैसे सुख की कल्पना शायद देवता भी नहीं कर सकता। इसलिए हम शांति को पाने की कला सीखें और शांति को पाने का प्रयत्न करें। जैसे ही हमारे जीवन में शांति का अवतरण होता है, सुख का प्रयत्न करें। जैसे ही हमारे जीवन में शांति का अवतरण होता है, सुख का ज्वार आ जाता है, सुख की बाढ़ आ जाती है, फिर दुःख उसके कभी भी सामने नहीं आता, बेचारा दूर से ही चला जाता है। इसलिए हमारा सारा प्रयत्न उस तपस्या के कल्पवृक्ष की छांह में बैठने का हो, जिससे हम शांति का जीवन जी सकें।■

राष्ट्र चिन्तन

◆ जल्द ही गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों की महिलाओं को सस्ता बैंक कर्ज हासिल हो सकता है। सरकार को गरीब महिलाओं के लिए चार फीसदी की ब्याज दर पर बैंक कर्ज मुहैया कराने की योजना बनानी चाहिए। इससे स्व-सहायता समूहों की महिलाओं को भी स्व-रोजगार चलाने में सहयोग मिलेगा। मौजूदा समय में इन समूहों को प्राथमिकता क्षेत्र के अंतर्गत बैंक कर्ज दिया जाता है। महंगाई पर काबू पाने हेतु रिजर्व बैंक को मनी सप्लाई पर सावधानी बरतनी चाहिए। बैंक कर्ज में अंकुश नहीं लगाने से यह महंगाई दर में और बढ़ोतरी हो सकती है। इसलिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि बैंक कर्ज के मामले में किसी भी उद्योग क्षेत्र या सामाजिक तबके के साथ भेदभाव न हो। खासतौर पर उत्पादक उद्योग क्षेत्रों को कर्ज बढ़ाने की दिशा में ध्यान देने की जरूरत है। आर्थिक संकट से यह सबक सीखने की जरूरत है कि बैंक कर्जों का वितरण बेलगाम नहीं हो और बैंक जोखिम प्रबंधन पर ध्यान दें।

प्रतिभादेवी सिंह पाटिल, राष्ट्रपति

◆ अपराधियों के चुनाव लड़ने पर पूरी तरह रोक लगाई जाए। जिस तरह से पंचायत में महिलाओं को 50 फीसदी आरक्षण दिया गया है उसी तरह से संसद और विधानसभाओं में भी महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था की जाए। चुनाव आयोग बेहतर काम कर रहा है लेकिन अब भी चुनावों में धन बल का इस्तेमाल होता है, अपराधी चुनाव लड़ रहे हैं। कुछ ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि अपराधी चुनाव न लड़ पाएं।

सोनिया गांधी, यूपीए अध्यक्ष

◆ यदि प्रदूषण के कारण किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य या संपत्ति को नुकसान पहुंचता है तो वह इसके लिए मुआवजे का दावा कर सकता है। संसद में लंबित नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के कार्यक्षेत्र में यह प्रावधान भी जोड़ दिया गया है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल प्रदूषण फैलाने वाली कंपनी या सरकार को हर्जाना भरने के निर्देश दे सकता है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल बनने से अब आम आदमी भी प्रदूषण से होने वाली क्षति के लिए मुआवजे की मांग कर सकेगा।

जयराम रमेश, वन एवं पर्यावरण मंत्री

स्वस्थ समाज की कल्पना

डॉ. ज्योति जैन

सुबह होते ही अखबार की सुर्खियाँ पढ़कर लगता है कि क्या हो गया है हमारे पारिवारिक, सामाजिक मूल्यों को? मानवीय संबंधों को जोड़ने वाले, परिवार को सूत्र में बाँधने वाले सभी रिश्ते तार-तार होकर टूट रहे हैं और अपनी मर्यादाएं खोते जा रहे हैं। सुर्खियाँ भी अखबारों की ऐसी लगती हैं कि हम किस संवेदनहीन समाज की ओर बढ़ रहे हैं। मनुष्य का इससे बड़ा पतन क्या होगा, जब हम पढ़ते हैं कि 'बाप ने किया बेटी को गर्भवती', 'एक महिला के साथ हुआ सामूहिक बलात्कार', 'कलयुगी भाई ने किया बहन के पवित्र रिश्ते को तार-तार', 'ससुर ने डाला घर की बहू की इज्जत पर डाका', 'पंद्रह साल के किशोर ने किया बलात्कार', 'दो वर्ष की मासूम हुई हैवानियत का शिकार' आदि न जाने कितनी ही अनैतिक घटनाएं रोज पढ़ने-सुनने को मिलती हैं। आज पुरुष की हवस का शिकार बनने के लिए बालिग होना जरूरी नहीं रह गया है। उसका स्त्री रूप होना ही पर्याप्त है। नारी के यौन उत्पीड़न का इतिहास मानव जीवन के इतिहास की तरह ही पुराना है पर आज जिस तरह से रिश्तों की मर्यादाएं टूट रही हैं और असंयहीनता सामने आ रही है वह हमारी शून्य होती संवेदनाओं को दर्शा रही है।

यह सच है कि मनुष्य काम-भोग का दास बना हुआ है। काम का आकर्षण उसके जीवन को भोगमय बना रहा है। यह भी सच है कि काम वासनाओं से कभी तृप्ति नहीं मिलती और मनुष्य ही संसार का ऐसा प्राणी है जिसके काम सेवन का कोई समय निश्चित नहीं है। समस्त वासनाओं में तीव्र काम वासना है। अन्य इन्द्रियों का दमन करना तो सरल है किन्तु कामेन्द्रिय को वश में करना कठिन है। काम और भोग हमें भटकाने वाला तत्त्व है। इन्द्रिय संयम से कामवासनाओं को जीता जा सकता है। इन्द्रिय संयम ही ब्रह्मचर्य है। आचार्यों, धर्मगुरुओं ने कामवासनाओं को जीतने के लिए ब्रह्मचर्य का उपदेश दिया है।

शीलव्रत स्त्री-पुरुष का शृंगार है। शील का सदैव पालन करना चाहिए। शील के अठारह हजार भेद बताये गये हैं और शील की नौ बाड़ों के द्वारा रक्षा करने के सूत्र भी बताये गये हैं जो इनका पालन करता है वही ब्रह्मचर्य का पालन भी करता है। आचार्यों ने गृहस्थों को 'स्वदार संतोष व्रत' का पालन करने को प्रेरित किया है। अपनी स्त्री से संतोष रखना और अन्य को माँ-बहन-बेटी के समान समझना स्वदार संतोष व्रत (ब्रह्मचर्य) है। हमारी संस्कृति में संयम को ही जीवन कहा गया है 'संयमः खलु जीवनम्'।

हमारे ग्रंथों में सैकड़ों कथानक हैं, जो हमें बताते हैं कि किस तरह ब्रह्मचर्य धर्म का पालन कर लोगों ने अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। ब्राह्मी-सुंदरी ने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया और आज भी प्रेरणा दे रही हैं कि किस तरह नारियाँ यह व्रत धारण कर आत्म कल्याण की ओर बढ़ सकती हैं। स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, आचार्य तुलसी आदि महापुरुषों के जीवन के भी अनेक प्रसंग हैं।

यह विचारणीय व चिंताजनक स्थिति है कि आज हम किस दिशा में जा रहे हैं। भोगवादी अप-संस्कृति, कुत्सित साहित्य, अश्लील फैशन निरंतर बढ़ता जा रहा है। रिश्तों की मर्यादाएं नष्ट हो रही हैं और व्यक्ति का नैतिक, चारित्रिक पतन हो रहा है। गृह मंत्रालय का अपराध रिकॉर्ड बताता है कि हर 47वें मिनट में एक महिला के साथ बलात्कार, 40वें मिनट में अपहरण एवं हर छटे मिनट में किसी न किसी के साथ छेड़छाड़ होती है। ये तो महज दर्ज आंकड़े हैं न जाने कितने अपराध मिनट-दर-मिनट होते रहते हैं।

हमारे सामाजिक, पारिवारिक मूल्यों और मर्यादाओं को चोट पहुँचाने में मीडिया एवं टी.वी. चैनलों, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं ने जो भूमिका निभायी है, उसमें स्त्री रूप को कामुक एवं उपभोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है। हमारे परंपरागत एवं संस्कारित परिवार जिन दृश्यों की कल्पना भी नहीं कर सकते अब वह हमारे ही घरों के बैठक कक्ष के टी.वी. में सुबह से लेकर देर रात तक दिखाये जा रहे हैं। फिल्मी गानों में अश्लील शब्दों की भरमार बढ़ती जा रही है। अब तो चूमा-चाटी के दृश्य व केबल संस्कृति चैनलों में अश्लील फिल्मों का दौर भी चल पड़ा है। इन सबने मिलकर हमारी संस्कृति को चोट तो पहुँचायी ही है साथ ही हमारे बच्चों को समय से पहले बड़ा बना दिया है। चौकाने वाले आंकड़े तो यह हैं कि किशोर वर्ग किस तरह कामुकता के चक्रव्यूह में फंसता जा रहा है। एक तरफ मीडिया का खुलापन देख लोग उसके विरोध में बात करते हैं तो दूसरी तरफ इसके देखने वालों की संख्या भी बढ़ रही है। ये कैसा विरोधाभास है? एक तरफ नैतिकता व संयम की बातें तो दूसरी तरफ उन्मुक्तता व असंयम। आज आम आदमी दिशाहीन होता जा रहा है।

बदलती जीवन शैली में रिश्तों की संयमित मर्यादाएं बनाये रखना हम सब का दायित्व है। यह तभी संभव है जब हम जीवन में संयम के महत्त्व को जानें, धर्म एवं संस्कृति को पहचानें। आज भयंकर बीमारियाँ असंयम के कारण हमें अपना शिकार बना रही हैं। वर्तमान में आवश्यकता है कि हम अपने संस्कारों के साथ संयम का आचरण कर अपने नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों को बचायें। पारस्परिक सौहार्द और मर्यादाओं के साथ रिश्तों को निभायें। तभी एक स्वस्थ समाज की कल्पना साकार होगी।

पो. बॉक्स–20, खतौली – 251201 (उ.प्र.)

गाउत्थदरउभूषमाउरा

जसविंदर शर्मा

उनकी और उनके नजदीकी रिश्तेदारों की सोच में इतना अंतर आ जाएगा, छेदीलाल ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। शुरू के वर्षों में वह ऊँचा उठने के संघर्ष में ही इतने व्यस्त रहे कि कुछ और सोचने-विचारने का कभी ख्याल ही नहीं आया। किसानों के उस बड़े-से कुनबे में इतनी उच्च शिक्षा पाने वाले वह पहले व्यक्ति थे। और स्नातक भी इंजीनियरिंग विषय में।

अस्सी के दशक में इतने इंजीनियरिंग कॉलेज नहीं होते थे कि हर ऐरा-गैरा प्रवेश पा सके। वह मेरिट का दौर था। बच्चा मन से पढ़ने वाला हो और अच्छे परिणाम दिखाने वाला हो तो उसे आकाश छूने से कोई नहीं रोक सकता। छेदीलाल पढ़ाई में इतने मेधावी थे कि उन्होंने सारी पढ़ाई छात्रवृत्ति के आधार पर की।

जिस भी संस्थान में प्रवेश लिया, वहीं सारी फीस माफ। कोई न कोई अनुदान या छात्रवृत्ति उन्हें मिल ही जाती। उनका उदाहरण बड़े शहरों के रईस माँ-बाप देते कि बेटा हो तो छेदीलाल जैसा। छेदीलाल के घर वालों के पास इतनी पूँजी कहाँ थी कि उनकी तकनीकी पढ़ाई पर हजारों रुपए लुटाते। सच पूछो तो उनके घरवाले ठेठ अनपढ़ थे। उन्हें तो पता ही न था कि छेदीलाल किस आकाश को छूने का इरादा रखता है।

छेदीलाल को अच्छी जगह नौकरी मिल गई मगर उसका सपना था आई. आई.एम. संस्थान से एम.बी.ए. करना। परीक्षा में बैठे तो सफल हो गए। वहाँ से निकलते ही छेदीलाल बड़ी कम्पनियों में चर्चित हो गए। हर कहीं से ऐसे सर्वश्रेष्ठ को अपनी कंपनी में रखने की होड़ लग गई। वेतन इतना मिलता कि अकेले संभालना मुश्किल हो जाता।

पहले-पहल वह गांव के लोगों की समस्याओं के प्रति बहुत संवेदनशील हो जाते थे। उन्हें बहुत खलता कि आज के उत्तर-आधुनिक युग में भी उनके गांव जैसे हजारों गांवों में बिजली की सुविधा नहीं है। सरकार की किसी भी कल्याणकारी योजनाओं का फायदा इन पिछड़े हुए क्षेत्र को नहीं मिलता। चिकित्सा, आवागमन या शिक्षा के समुचित साधन उन्हें मुहैया नहीं करवाए जाते। सच पूछो तो इस दिशा में एक दो साल उन्होंने कोशिशें की भी। वह समय उनके अपने भविष्य के उठान का समय था और उनके समय पर बहुत दबाव था। अपनी कंपनी वाले उन्हें बार-बार विदेश भेज रहे थे।

छेदीलाल को शादी के लिए बड़े-बड़े घरों से रिश्ते आ रहे थे। शादी की उम्र निकली जा रही थी। उनके मन में यह संशय भी था कि अगर वह शादी बड़े घर से करेंगे तो पिछली सदी के ख्यालों वाले उनके माता-पिता उनके साथ-साथ कैसे चल पाएंगे। यारों-दोस्तों ने उन्हें समझाया कि गांव के माँ-बाप यहाँ महानगर में आकर खुश नहीं रह पाएंगे। उन्हें वहीं पैसे भेज देने से ही छेदीलाल पितृऋण से मुक्ति पा सकेंगे।

वहीं शादी भी हो गई तो छेदीलाल के कई नए सामाजिक दायरे खुल गये। पत्नी भी उच्च अधिकारी थी। गांव उसके लिए कौतूहल की चीज थी। छेदीलाल का मन रखने के लिए वह दो-तीन बार उनके गांव गई भी मगर फिर खुद छेदीलाल गांव से कन्नी काटने लगे। पहले साल बाद जाते थे। फिर यहीं से कूरियर से घरवालों को उपहार व कपड़े भेजने लगे। फिर यह हालत हो गई कि सारे संबंध ठंडे पड़ते चले गए। गांव वालों से जो दूरी बढ़ी तो बढ़ती ही चली गयी।

एक वह भी दिन था कि पक्के तौर पर गांव छोड़ते हुए छेदीलाल का मन बहुत भारी हो रहा था। यह कई वर्षों के पहले की बात है। अब तो हालात यह

शुरू के कुछेक सालों में जब छेदीलाल कॉलेज से छुट्टी के दिनों में गांव जाते तो शहर के लोगों की खूब बुराइयां करते। गांववाले भी हुमक-हुमक कर अपनी सादगी, खुली आबो-हवा तथा साफगोई की तारीफ करते थकते नहीं थे। धीरे-धीरे छेदीलाल बदलते चले गए। किस्मत तेज थी उनकी। सफलता खुद-ब-खुद उनके कदम चूमती गई। नाम भी बदल गया उनका सी. लाल। रहन-सहन विदेशी हो गया। बहुत बड़ी कोठी, चालक सहित मर्सीडीज गाड़ी, नौकर-चाकर, अमीर घर की आधुनिक पत्नी तेज-तीक्ष्ण बच्चे और बड़ा-सा आधुनिक मिजाजवाला खुले विचार वाला सामाजिक दायरा।

हो गए हैं कि शहर से गांव की ओर जाना और वहाँ कुछेक घंटे रुकना उनके लिए मुसीबत बन जाता है। गांव कब का बहुत पीछे छूट गया था उनका। पहले भी कभी-कभार ही जाना होता था वहाँ। वैसे भी गांव में इन दिनों कौन लोग रह गए हैं बूढ़े, पैंशनभोगी, गरीब मजदूर या अनपढ़ किसान। गांवों में कष्ट भी बहुत हैं बिजली नहीं आती, फल-सब्जी नहीं मिलती व सुख-सुविधा नहीं। वहाँ केबल टी.वी. नहीं है, भीड़-भाड़ नहीं, चकाचौंध नहीं, ठंडी बीयर नहीं मिलती, सायबर कैफे नहीं। ऐसे में सुविधा-सम्पन्न आदमी गांव जाकर सिरदर्दी क्यों मोल ले।

पहले-पहल छेदीलाल को गांव से बहुत स्नेह था व शहरी लोगों से हजारों शिकवे-शिकायतें थीं। उन्हें शिकायत थी कि शहरों में पत्थर-दिल, चालाक वह स्वार्थी किस्म के लोग रहते हैं जो रिश्ते-नातों में पैसों को ज्यादा तरजीह देते हैं। शुरू के कुछेक सालों में जब छेदीलाल कॉलेज से छुट्टी के दिनों में गांव जाते तो शहर के लोगों की खूब बुराइयां करते। गांववाले भी हुमक-हुमक कर अपनी सादगी, खुली आबो-हवा तथा साफगोई की तारीफ करते थकते नहीं थे।

धीरे-धीरे छेदीलाल बदलते चले गए। किस्मत तेज थी उनकी। सफलता खुद-ब-खुद उनके कदम चूमती गई। नाम भी बदल गया उनका सी. लाल। रहन-सहन विदेशी हो गया। बहुत बड़ी कोठी, चालक सहित मर्सीडीज गाड़ी, नौकर-चाकर, अमीर घर की आधुनिक पत्नी तेज-तीक्ष्ण बच्चे और बड़ा-सा आधुनिक मिजाजवाला खुले विचारवाला सामाजिक दायरा।

गांव छूट ही गया। गांव वाले गरीब किसान रिश्तेदार कब तक पीछे भागते। गांव का आम आदमी मुम्बई के नाम से वैसे ही घबराता है। अब छेदीलाल खास-खास मौकों पर गांव के रिश्तेदारों को सिर्फ पैसे भेजकर ही रौब जमा लेते थे। अन्तिम बार वह गांव तब गए थे जब उनके पिता का स्वर्गवास हुआ था। नई विदेशी लकदक कार में भी उन्हें गांव की ऊँची-नीची व टूटी-फूटी सड़कें बहुत अखरी। एकाध घंटा रुककर ही वह वहाँ से खिसक लिए।

जिस दिन उनकी विदेशी कम्पनी ने महानगर में पहले ऑक्सीजन-बार का उद्घाटन किया, उस दिन छेदीलाल बहुत खुश थे। यह उनका ही सपना था जो साकार हो रहा था। महानगर में वातावरण इतना दूषित हो गया था कि शुद्ध हवा उपलब्ध नहीं होती थी।

ऐसे में ऑक्सीजन-बार खोलने का छेदीलाल की स्वप्न-परियोजना बहुत सफल साबित हो रही थी। एक ही साल में तीन जगह इस बार की शाखाएं खुलने से वह बहुत खुश थे। यह बार आधुनिक किस्म का एक रेस्तरां था जिसमें खाने-पीने के साथ-साथ शुद्ध ऑक्सीजन सर्व की जाती थी। दिनभर की दौड़-धूप के बाद धनी वर्ग के लोग यहाँ आकर प्राणशक्ति प्राप्त करते थे। हैरानी की बात थी कि खुद छेदीलाल दिन-रात भागदौड़ करते थे मगर कभी ऑक्सीजन-बार में बैठने की फुर्सत उन्हें नहीं मिलती थी।

एक दिन छेदीलाल का मन भी हुआ कि कुछ देर के लिए इस बार में बैठा जाए। यहाँ के पूर्ण सुकून माहौल में छेदीलाल को अपना भोला बचपन याद आ गया। वह नदी का किनारा, वह आम का बगीचा, खुले खेत-खलिहान और घरों के खुले-खुले आंगन। छेदीलाल पुरानी यादों में खो गए। भूतकाल के अनुभवों को पूरी तरह से खरोंचकर दिमाग से बाहर नहीं फेंका जा सकता। बीता हुआ सुनहरा काल आदमी को पूरे जीवन याद आता रहता है।

उसके बाद तो कई दिन तक छेदीलाल परेशान रहे। कितना लम्बा संघर्ष किया था उन्होंने मगर आखिर में वह किस नियति तक आ पहुँचे। वह सोचते कि ये दिन-रात का तनाव, यह चूहा-दौड़, यह भागमभाग अंत में उन्हें पागल बनाकर रख देगी। गांव में उसके कुनबे के लोग कैसे शांत व बेफिक्र जीवन जीते हैं।

अब तो उनको अतीत की ललक का दौरा कुछ ज्यादा ही पड़ने लगा था। जब भी वह ऑक्सीजन-बार के शांत व निर्मल वातावरण में कुछ पल बैठता, वह परेशान हो जाता। कई बार आधी रात को उसकी नींद उचट जाती। ऑक्सीजन-बार में जाने से वह कतराने लगा। ये कैसी उलझन में फंस गए वह। कंपनी कहती कि और ऑक्सीजन-बार खोलो मगर छेदीलाल सोचते कि इस झूठी चकाचौंध वाली तड़क-भड़क को छोड़कर गांव के प्रदूषणरहित माहौल में जाकर जीवन गुजारे। इस उहापोह से मुक्ति मिलनी अब संभव नहीं दिखती थी।■

5/2–डी, रेल विहार, मंसादेवी
पंचकुला – 134109 (हरियाणा)

परामर्श

ज्ञानी होने का ढोंग

रामस्वरूप रावतसरे

एक पादरी ने सत्य पर व्याख्यान देने से पहले सभा में बैठे श्रोताओं से पूछा कि जिन लोगों ने मैथ्यू का छत्तीसवां अध्याय पढ़ा हो, वे लोग अपना हाथ ऊपर करें। पादरी ने देखा एक व्यक्ति को छोड़कर सभा स्थल पर उपस्थित सभी लोगों ने हाथ ऊपर किया। पादरी को खुशी हुई कि इन सारे लोगों में एक व्यक्ति तो है जो यह जानता है कि मैथ्यू के छत्तीसवें अध्याय को उसने नहीं पढ़ा, क्योंकि मैथ्यू का छत्तीसवां अध्याय है ही नहीं। पादरी ने सोचा यह व्यक्ति इन लोगों के बजाय कुछ तो सत्य के नजदीक है।

पादरी ने एक घंटे तक सत्य पर व्याख्यान दिया और उपस्थित लोगों को बताया कि जिस छत्तीसवें अध्याय को वे पढ़ने की बात कर रहे हैं वह अध्याय है ही नहीं। जब सभा समाप्त हुई तो पादरी उस व्यक्ति के पास गया, जिसने हाथ ही नहीं उठाया था। पादरी ने उस व्यक्ति का धन्यवाद करते हुए कहा ''महाशय! आपने हाथ ऊपर नहीं उठाया, इसका मतलब आप जानते हैं कि मैथ्यू का छत्तीसवां अध्याय है ही नहीं। इतनी बड़ी सभा में एक आप ही व्यक्ति थे जो सत्य को जानते थे। वह व्यक्ति बोला, ''क्षमा कीजियेगा, मैं जरा ऊँचा सुनता हूँ, पहले मैंने आपका प्रश्न ठीक से नहीं सुना था। इसलिए हाथ ऊपर नहीं किया। अब बतायें आप क्या कह रहे थे।'' पादरी ने अपनी बात को पुनः उस व्यक्ति के सामने रखा, वह व्यक्ति बोला, ''हाँ, हाँ मैं मैथ्यू का छत्तीसवां अध्याय तो रोज पढ़ता हूँ। उस व्यक्ति की बात सुनकर पादरी ने अपना सिर पीट लिया। और सोचने बैठ गया कि लोग सत्य को समझने के बजाय दूसरों की देखा-देखी ज्ञानी होने का ढोंग क्यों करते हैं? यही कारण है कि हजारों सालों से महापुरुष सत्य को समझाने का प्रयास कर रहे हैं, उसके बाद भी इन्सान अपनी इस ज्ञानी होने की ढोंगपूर्ण प्रवृत्ति के कारण उसे समझना ही नहीं चाहता।

यही हालत हमारी है, हम कुछ नहीं जानते फिर भी दिखावा इतना करते हैं कि हम से बड़ा ज्ञानी कोई नहीं है, जब भी कहीं कोई बात हो रही होती है या दो व्यक्ति किसी मसले पर बात कर रहे होते हैं तो हम बिना सोचे-समझे ही अपने आप को उनके बीच में फंसाकर बिना मांगे ही सलाह देना शुरू कर देते हैं। या जब भी कोई हमें कुछ बताना चाहता है तो हम अपनी ज्ञानी होने की आदत को पहले सामने रखते हैं और उसकी बात को पूरा सुने समझे बिना ही यह कह देते हैं कि हाँ, हाँ आप जो बता रहे हैं उसके बारे में हमें पूरी जानकारी है। और अपने ज्ञानी होने के प्रमाण भी उसके सामने रखना शुरू कर देते हैं।

यही हमारी सबसे बड़ी भूल है और इसी कारण से हम बहुत-सी बातों को जानने से रह जाते हैं। हमें चाहिये कि हम किसी भी बात को जानने का ढोंग नहीं करें, बल्कि सामने वाला जो कुछ कहने जा रहा है या हमें कुछ बताने जा रहा है उसे हम पहले ध्यान से सुनें। उसके बाद यदि आवश्यक हो तो ही अपनी बात को कहें अन्यथा जो कुछ सामने वाले ने कहा है उसको सामने रखकर अपने विचारों को आगे बढ़ावें। इससे बहुत कुछ लाभ होगा। एक यह कि सामने वाले ने जो कुछ कहा है उसे सुनने से हमें कोई नई बात मिले जिसे हम नहीं जानते हों और वह बात हमारे पूरे जीवन को ही बदल दे। हमें कोई नई दिशा दे दे, जिसे पाकर हम उन्नति के रास्ते पर आगे बढ़ जाएं, या उसका विचार हमारी पूरी दिनचर्या को ही बदल दें। क्योंकि हर व्यक्ति का अपनी बात को कहने का ढंग अलग होता है। प्रत्येक व्यक्ति के पास कोई न कोई जानकारी होती है। जैसे प्रत्येक पौधा एक औषधी होता है उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति में कोई ना कोई गुण होता है।

सामने वाले की बात को पूरा सुने या समझे बिना ही अपनी बात को रखने से सबसे ज्यादा अपना ही नुकसान होता है। एक यह कि जो बात वह हमें बताना चाहता था उससे हम वंचित रह गये। दूसरा यह कि हमने बिना आगंतुक के पूछे ही अपना स्तर उसे बता दिया। जब सामने वाले को यह मालूम हो जाता है कि यह व्यक्ति जानकारी के हिसाब से या ज्ञान के स्तर के आधार पर किस स्तर पर खड़ा है तो वह गूढ़ जानकारी देने की बजाय उसी स्तर की बात करेगा जिस स्तर के हम हैं और आगे बढ़ जायेगा। ऐसे बहुत से उदाहरण भरे पड़े हैं कि महापुरुषों ने लोगों का जीवन ऊँचा उठाने के लिए सलाह देनी चाही और लोगों ने सलाह लेने के बजाय उनका विरोध किया, किन्तु जब उन्हें उस महापुरुष के बारे में असलियत की जानकारी मिली तब वे उसके पीछे दौड़े, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती थी। इसे हमें भी स्वीकार करना है कि हम किसी भी प्रकार से ज्ञानी होने का ढोंग न करें। सामने वाला व्यक्ति जो कुछ कहना चाहता है उसे सहज भाव से सुनें। यह आदत हम में होनी चाहिये। इससे हम अहमक रूप में हमारे मन-दिमाग में आने वाली कई बातों से बचेंगे, वहीं अपनी वैचारिक ऊर्जा का अपव्यय होने से भी रोक सकेंगे। यदि हम अपनी इस आदत को आगे बढ़ाने में सफल होंगे तो निश्चित ही सत्य को समझने में भी सफल होंगे।■

चौपड़ा बाजार, शाहपुरा
जयपुर (राजस्थान)

स्वस्थ जीवन और स्वर संतुलन

मुनि किशनलाल

सफलता के अनेक आयाम हैं। ज्योतिषी मंगल मुहूर्त्त की बात कहते हैं। देवज्ञ भाग्य की बात करते हैं। कालवादी काल की प्रतीक्षा के लिए कहते हैं। स्वरोदयी श्वास प्रवाह के सम्यक् नियोजन की चर्चा करते हैं। निर्यातवाद निर्यात को श्रेय देते हैं। पुरुषार्थवादी पुरुषार्थ की सफलता की भूमिका में अपना श्रम देखते हैं। इन सारे विचारों का एक समवाय बन जाता है। वह सब सामूहिक चिन्तन से शीघ्र सफलता के शिखर पर पहुँच सकते हैं। किस तरह से कौन सफल होता है यह तो नहीं कहा जा सकता किन्तु स्वरोदयशास्त्र तो कहता है सफलता का वर्तमान में श्रेय तो स्वर संचरण को ही दिया जा सकता है। स्वर ज्ञान परमगुह्य है, स्वर ज्ञान परम धन है, स्वर ज्ञान परम ज्ञान है। ऐसा ज्ञान है जो देखा गया है न सुना गया है।

स्वर प्रवाह का ज्ञान

श्वास-प्रश्वास से ही प्राण का संचार होता है। बिना श्वास-प्रश्वास के प्राणों का राजा जीव सदा-सदा के लिए रवाना हो जाता है। प्राणवायु के आवागमन से ही जीवन का प्रवाह चलता रहता है। श्वास-प्रश्वास केवल वायु ही नहीं है इसमें स्वर भी चलता है। यह स्वर चन्द्र स्वर, सूर्य स्वर और सुषुम्ना स्वर के रूप में पहचाना जाता है। चन्द्र स्वर शीतल, सूर्य स्वर उष्ण एवं सुषुम्ना स्वर समसीतोष्ण प्रकृति का होता है। चन्द्र स्वर को समझने के लिए सूर्य स्वर को बन्द करें। बाएं नासारन्ध्र से श्वास तेज चल रहा हो तो चन्द्र स्वर चल रहा है। सूर्य स्वर को समझने के लिए चन्द्र स्वर को बन्द करें। यदि सूर्य स्वर में श्वास-प्रश्वास तेज चल रहा है तो सूर्य स्वर चल रहा है। चन्द्र स्वर में स्थायी, शान्त और बौद्धिक क्षमता वाले कार्य किये जा सकते हैं।

जब श्वास शान्त और दीर्घ होता है, तब आवेश आवेग नहीं आता है। जब श्वास-प्रश्वास लघु होता है तो आयुष्य शीघ्र पूरा होता है। शीघ्र और छोटा श्वास लेने वाले को गुस्सा जल्दी आता है। आवेश और आवेग पर संयम नहीं होने से आयुष्य कर्म क्षणिक अधिक क्षय होते हैं। वे शीघ्रतया भोग लिये जाते हैं। जीवन का समग्र अस्तित्व श्वासोच्छ्वास पर आधारित है। श्वास ही जीवन है। श्वास के अभाव में जीवन समाप्त हो जाता है।

श्वास ही चेतना का बोधक

श्वास के आवागमन पर जब चित्त एकाग्र किया जाता है तब व्यक्ति के मस्तिष्क में एक विकल्प पैदा होता है, श्वास भीतर फेफड़ों में गतिशील हो रहा है फिर बाहर आता है। क्या होगा इस पर चित्त को एकाग्र करने से? श्वास आ रहा है, बाहर जा रहा है। यह जीवन की सामान्य क्रिया है लेकिन जब चित्त एकाग्र होता है, तब वर्तमान में चल रहे श्वास का अवलोकन करता है और श्वास के आवागमन पर ध्यान केन्द्रित करने से चित्त वर्तमान में आ जाता है क्योंकि श्वास-प्रश्वास वर्तमान की क्रिया है। यह न भूतकाल की स्मृति है और न भविष्य का चिन्तन। केवल वर्तमान की स्थिति। इस समय चित्त की वृत्ति राग-द्वेष रहित बन जाती है, वीतरागता की वृत्ति बन जाती है। वीतरागता की यह वृत्ति ही चेतना को निर्मल बनाती है। श्वास भौतिक है, श्वासोच्छ्वास की वर्गणाएं हैं, पुद्गल परमाणु हैं, निर्जीव है लेकिन देखने वाली ज्ञान चेतना सजीव है, ज्ञानवान है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि श्वास चेतना का अवबोधक है। श्वास का अवलोकन करने वाली चेतना ज्ञान में अवस्थित हो जाती है। अनुभवी विद्वानों ने कहा है "श्वास श्वास सुमिरण करे ते प्रभु ने पावे।" आत्माराम को पाने का यह सहज मार्ग है। गर्भस्थ शिशु बाहर आता है तब श्वास क्रिया उसके रोने अथवा हँसने से शुरू होती है, अर्थात् श्वास बाहर से भीतर, भीतर से बाहर आता है या भीतर से बाहर जाता है। श्वास का यह क्रम जन्म से प्रारम्भ होता है और इसके बन्द होते ही मृत्यु घटित हो जाती है। श्वास की सीढ़ियों पर चढ़ने वाला प्राणी इसके रुकते ही धड़ाम से नीचे आ जाता है। लोग भगवान की पूजा करते हैं, पाठ करते हैं, माला फेरते हैं किन्तु श्वास के महत्त्व को भूल जाते हैं। कबीरदासजी कह रहे हैं "माला फेरूँ न कर फिरूँ, जिभ्या कहे न राम, सुमिरन मेरा हरि करे, मैं पाऊँ विश्राम" बड़ी विचित्रता है। भगवान के दर्शन करने लोग कहाँ, कहाँ जा रहे हैं। पहाड़ों पर, नदी किनारे, दरिया के पास परन्तु जो अपने भीतर ज्ञान चेतना बैठी हुई है, उसको पाने का कोई प्रयास न करे तो कैसे मिलेगा अपना राम? स्वयं को खोजो, स्वयं को देखो, स्वयं को पाओ। जो भीतर है, वह बाहर कैसे मिलेगा? बाहर है ही नहीं। समझदार श्वास की सवारी कर भीतर लौट आते हैं अपने आत्माराम के पास।

स्वर विज्ञान और स्त्रियां

स्त्री को वामांगी माना जाता है। पुरुष के शरीर में दोनों अंग होते हैं। दाहिना पुरुष प्रधान, जब सूर्य स्वर चलता है तब पौरूष प्रधान, जब चन्द्र स्वर चलता है तब स्त्री प्रधान। इसी प्रकार स्त्रियों में भी जब सूर्य स्वर चले तब उनमें पौरूष प्रधान, जब चन्द्र स्वर चले तब स्त्री की प्रधानता होती है। ऐसे शरीर रचना की दृष्टि से पुरुष और स्त्री में भिन्नता है किन्तु स्वरोदय विज्ञान का कहना है कि दोनों में कोई भेद नहीं है। जिस प्रकार स्वर का प्रभाव पुरुष पर आता है वैसा ही महिलाओं पर भी आता है। कौन-सा कार्य कब, किस समय और कौन-से स्वर में करना चाहिए? यह पुरुष और महिलाओं की अपनी अपनी व्यवस्था से किया जाता है।

स्वर और कार्य विभाजन

प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य की सफलता चाहता है। कौन-सा कार्य, कब, किस स्वर में किया जाये? कार्य की सफलता के लिए यह ज्ञान होना आवश्यक है। कार्य दो प्रकार के होते हैं। एक चल अर्थात् स्वल्प समय का और दूसरा स्थिर अर्थात् दीर्घकाल के लिए।

चन्द्र स्वर में करणीय कार्य

जब चन्द्र नाड़ी (चन्द्र स्वर) अर्थात् बाएं नासाछिद्र में श्वास-प्रश्वास की प्रधानता हो अर्थात् चन्द्र स्वर से प्राण का प्रवाह हो तब स्थिर प्रकृति के कार्य करने चाहिए। यदि इसमें चन्द्रमा का सहयोग मिल जाये अर्थात् मास का शुक्ल पक्ष हो तो सफलता निश्चित होती है। स्वर विज्ञान के ज्ञान चन्द्र स्वर में प्रायः निम्नलिखित कार्य करने की सलाह देते हैं

1. घर, आश्रम में प्रवेश।
2. वस्तु संग्रह।
3. शान्ति कर्म।
4. पोष्टिक कर्म।
5. शपथ ग्रहण।
6. विद्या आरम्भ।
7. मंत्र साधना।
8. दीक्षा कर्म।
9. पानी पीना।
10. मूत्र त्याग।
11. गुरु उपासना।
12. योगाभ्यास।
13. दूर गमन (दक्षिण या पश्चिम दिशा में जाना हो।)

इन कार्यों को चन्द्र स्वर के साथ पृथ्वी तथा जल तत्त्वों की उपस्थिति में करने से सफलता शीघ्र प्राप्त होती है। चन्द्र स्वर में वायु, अग्नि और आकाश तत्त्व की उपस्थिति में इन कार्यों को नहीं करना चाहिए। पृथ्वी और जल तत्त्व के आगमन की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

सूर्य स्वर में करणीय कार्य

जिस समय श्वास-प्रवाह दाएं स्वर में चल रहा हो। प्राण के प्रवाह की प्रधानता दाएं नासारन्ध्र में हो उस समय कठोर प्रकृति के कार्यों को करना चाहिए। यदि इसमें कृष्ण पक्ष हो तो सफलता निश्चित हो जाती है। सूर्य स्वर में करणीय कार्य

1. कठिन योगाभ्यास।
2. अध्यापन कार्य।
3. विपक्षी को दण्डित करना।
4. षट्कर्मादि साधना।
5. यक्ष, भूत आदि का निग्रह।
6. औषध सेवन।
7. भोजन।
8. सभी तरह के चर कर्म।
9. वीर मंत्र की उपासना।
10. क्रय-विक्रय।

जब बाएं नासा छिद्र से श्वास प्रवाह हो रह हो उस समय पूर्व और उत्तर की ओर नहीं जाना चाहिए। दायां नासाछिद्र से श्वास बह रहा हो तब दक्षिण, पश्चिम की ओर नहीं जाना चाहिए। यदि जाना ही पड़े तो चन्द्र नाड़ी के बहते अपने बाएं पैर को तीन बार आगे रख कर इष्ट स्मरण कर गमन किया जा सकता है।

सूर्य स्वर के साथ मंगलवार, शनिवार, रविवार हो तो सफलता शीघ्र मिलती है। पृथ्वी और जल तत्त्व इसमें सहयोगी होते हैं। इनसे भिन्न तत्त्वों में असफलता मिलने का अवसर रहता है। कुछ आचार्यों का यह भी अभिमत है कि सूर्य स्वर चलता हो तब अन्य तत्त्वों आदि का विचार नहीं करना चाहिए।

सुषुम्ना स्वर में करणीय कार्य

सुषुम्ना नाड़ी अर्थात् जब दोनों स्वर चलते हो, उस समय सौम्य और कठोर कार्य करने से समस्या पैदा होती है और सफलता संदिग्ध होती है। सुषुम्ना में ध्यान, धारणा, प्रभु स्मरण उत्तम रहता है। शिवस्वरोदय रचनाकार का कहना है, शेष कार्यों को यह स्वर नष्ट करने वाला है। इसलिए साधक अपने विवेक को काम में लें, भगवद् भक्ति और ध्यान आराधना करें।

स्वर विज्ञान और शुभाशुभ विचार

स्वर के चलने की प्रक्रिया पीछे बताई गई है। कौन-से दिन, किस समय, कौन-सा स्वर चलना चाहिए? इसका निश्चित निर्णय स्वरोदय प्रकरण में है। किसी के जीवन में शुभ-अशुभ घटना घटने वाली होती है, उस समय स्वर स्वयं बदल जाते हैं। ज्वर होता है तब भी स्वर बदल जायेंगे। स्वर का भीतरी विज्ञान इतना स्वसंचालित होता है कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते। जब सामान्य नियम के विरुद्ध स्वर गतिशील हो तो समझना चाहिए, कुछ अन्यथा घटित होने वाला है। सजग स्वर विज्ञानी उस स्वर को ठीक कर अन्यथा घटना को सामान्य बना देता है। मान लिजिए कि दुर्घटना में हड्डी टूटने वाली थी, स्वर की गति को देख कर आपने अपनी यात्रा स्थगित कर

दी। स्कूटर को एक तरफ खड़ा कर रहे थे, स्कूटर गिर पड़ा और आपके अंगूठे में मामूली चोट आ गई। स्वर परिवर्तन के कारण जो बड़ी घटना घटने वाली थी वह मात्र स्कूटर के गिरने और अगूंठे की मामूली चोट में परिवर्तित हो गई।

शुभ-अशुभ फल

यदि चन्द्र स्वर लगातार 4 घड़ी तक चलता रहे तो किसी अलभ्य वस्तु की प्राप्ति या शुभ घटना घटने वाली होगी। यही स्वर 8 घड़ी तक चलता रहे तो सुख-शान्ति की प्राप्ति होगी। यदि चन्द्र स्वर लगातार 4, 8, 12, 20 दिन रहे तो दीर्घ आयु और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। ऐसा स्वर विज्ञानी कहते हैं।

स्वर द्वारा रोग निवृत्ति

यदि सूर्य स्वर लगातार 4 घड़ी चलता रहे तो किसी वस्तु की हानि या कष्ट होता है। निरन्तर 21 घड़ी चलता रहे तो सज्जन पुरूष का वियोग होता है।

चन्द्र स्वर 1-2-3 दिन लगातार चलता रहे तो कोई रोग पैदा होता है। एक महिने लगातार चले तो धन का विनाश होता है।

रोगों की उत्पति के कारण

स्वर की जो निश्चित प्रक्रिया है उसके विरुद्ध स्वर चले तो समझना चाहिए, शरीर से विजातीय तत्त्व बाहर आना चाहते हैं। विरुद्ध चल रहे स्वर को बंद कर सही स्वर चलाने से रोग की उत्पति नहीं हो पाती है।

शुक्ल अथवा कृष्ण पक्ष में स्वर विपरीत चल रहा हो तो स्वर की सूचना है कि कोई समस्या आने वाली है। सजग स्वर साधक जो विपरीत स्वर चल रहा है उसे बंद कर दूसरा सही स्वर चलाने का प्रयास करता है। इससे रोग की उत्पति की संभावना कम रहती है। फिर भी भूल से रोग उत्पन्न हो जाये तो घबराने की आवश्यकता नहीं अपितु रोग में जो स्वर चल रहा है उसे बंद कर दूसरा स्वर चलाएं। ज्वर और कमजोरी महसूस हो रही हो तो सजगता से स्वर का प्रयोग प्रारम्भ करें। जिनको अजीर्ण, बदहजमी रहती हो उन्हें चन्द्र स्वर में भोजन नहीं करना चाहिए। भोजनोपरान्त वज्रासन में बैठकर 10 मिनट सूर्य स्वर को चालू रखें। सीधे लेटकर आठ श्वास, दायीं करवट लेटकर सोलह श्वास-प्रश्वास, बायीं करवट लेटकर 32 श्वास-प्रश्वास करें। इससे पाचनतंत्र पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार आकस्मिक दर्द हो जाये तो जो स्वर चल रहा हो उसे बंद करें और दूसरे स्वर को चालू करें। गर्मी हो तो शीतली और शीतकारी प्राणायाम किया जा सकता है।

यात्रा में स्वर विवेक

वामाचार प्रवाहेन न गच्छेत् पूर्व उत्तरे ।
दक्ष नाड़ी प्रवाहेतु न गच्छते याम्ये पश्चिमे।।

जब बाएं नासा छिद्र से श्वास प्रवाह हो रहा हो उस समय पूर्व और उत्तर की ओर नहीं जाना चाहिए। दायां नासाछिद्र से श्वास बह रहा हो तब दक्षिण, पश्चिम की ओर नहीं जाना चाहिए। यदि जाना ही पड़े तो चन्द्र नाड़ी के बहते अपने बाएं पैर को तीन बार आगे रख कर इष्ट स्मरण कर गमन किया जा सकता है।■

भ्रष्टाचार

?

शिष्टाचार बन रहे नासूर भ्रष्टाचार

से जुड़े बिन्दुओं को समाहित करता अणुव्रत पाक्षिक का विशेष अंक।

भ्रष्टाचार-शिष्टाचार विशेषांक

1-31 मार्च, 2010 संयुक्तांक

बच्चों को सिखाएं बुजुर्गों का सम्मान

आशीष वशिष्ठ

बदलते समय के साथ बुजुर्गों का मान-सम्मान घटता जा रहा है। नयी पीढ़ी नये सोच के घोड़े पर सवार होकर जल्द से जल्द आसमान को छूना चाहती है परिणामस्वरूप वो अपनी सभ्यता संस्कृति को भूलती जा रही है। आज बुजुर्गों को भी पुराना सामान समझा जाने लगा है और बच्चे बुजुर्गों का सम्मान करना भूल रहे हैं। वास्तविकता यह है कि पिछले दो-तीन दशकों में हमारी सामाजिक व्यवस्था व सोच में परिवर्तन आया है। समाज में नव रंग परिवार की अवधारणा व सोच तेजी से पनप रही है। संयुक्त परिवार प्रणाली धीरे-धीरे समाप्त हो रही है या यूँ कहिए कि खत्म होने की कगार पर है। आज बच्चे के लिए परिवार का अर्थ मम्मी-पापा ही है। और दूसरे रिश्ते अंकल-आंटी पर ही खत्म हो जाते है।

अपने बचपन को याद करिए एक परिवार में औसत दस या बारह लोग हँसी खुशी जीवन बिताते थे। ऐसे में बच्चें को रिश्तों की समझ, पहचान और उनका यथायोग्य आदर-सत्कार के संस्कार घुट्टी में ही पिला दिए जाते थे। और बचपन में रोंपे गए संस्कारों के बीज जीवन पर्यन्त उसी भावना के साथ मन में बसे रहते थे तब संयुक्त परिवार को लोग श्रेष्ठतम समझते थे लेकिन भौतिकवादी सोच के चलते आदमी आत्म केंद्रित होता चला गया और समाज में धीरे-धीरे एकल परिवार की कल्पना साकार रूप लेने लगी न्यूक्लर परिवार मे मम्मी-पापा व बच्चों के अलावा किसी दूसरे रिश्ते व रिश्तेदार की गुजाइश नहीं होती है। ऐसे में समाज में संस्कारहीनता का परिवेश पनप रहा है। आज बच्चों को न तो रिश्तों की समझ है और न ही बचे-खुचे संयुक्त परिवारों में बच्चे अपने बुजुर्गों का सम्मान करते है।

आठ साल का शिवम अपने मम्मी पापा के साथ अकेला ही रहता था मम्मी-पापा दोनों ही कामकाजी थे। ऐसे में शिवम की परवरिश शिशुगृह में ही पराए हाथों में हुयी थी साल भर में छुट्टियों के दौरान ही वह दिल्ली अपने दादा-दादी के घर जाता था। शुरू से अकेले रहने के कारण एक तो शिवम का स्वभाव रूखा था वहीं उसे दादा-दादी, चाचा-चाची आदि रिश्तों की न तो ज्यादा समझ थी और ना ही वह अपने बुजुर्ग दादा-दादी को उचित सम्मान ही दे पाता था। दादा-दादी को वह पराया व बाहरी समझता था और उनसे वह अपने स्कूली दोस्तों के अंदाज व भाषा में बात करता था। असल में जब बच्चा घर परिवार से दूर रहेगा तो उसे पता ही नहीं चलेगा कि बड़े बुजुर्ग का जीवन में क्या महत्त्व होता है और उनका आदर मान कैसे किया जाता है। दादा-दादी की भांति घर व आसपास के दूसरे बुजुर्गों के साथ भी शिवम रूखा व्यवहार ही करता था। दरअसल शुरू से ही शिवम का व्यवहार व चरित्र ऐसा बन चुका था कि वह घर व आसपास मम्मी-पापा के अलावा किसी और से हिल मिल नहीं पाता था और बाहरी दुनिया से सम्पर्क के नाम पर केवल उसके स्कूल के दोस्त ही थे, कारणवश वह बड़े-बुजुर्गों की इज्जत, उनसे बातचीत का सलीका जानता ही नहीं था। शिवम का व्यवहार उसके मम्मी-पापा को बुरा लगता था पर देखा जाए तो इसके लिए असली दोषी भी वही थे।

दस साल की कृतिका अपने दादा-दादी व नाना-नानी से के साथ सामान्य व्यवहार नहीं करती थी। उसके मन में घर के बुजुर्गों के प्रति सम्मान का भाव नहीं था। अकेले में वो अपनी मम्मी को कहती थी कि देखो दादी की चमड़ी कैसी लटक रही है। दादी के चेहरे पर कितनी झुर्रियां हैं। अर्थात कृतिका अपने हमजोलियों की तरह ही दादी को चिढ़ाती व उनकी नकल कर उनका अनादर करती थी। दादी जब भी प्यार से पोती को पुचकारने व सहलाने की कोशिश करती तो कृतिका मुहं बनाकर उनसे दूर चली जाती। बेचारे दादा-दादी तो अपनी पोती को प्यार, दुलार करना चाहते थे लेकिन शुरू से अलग रहने के कारण कृतिका के मन में दादा-दादी व नाना-नानी के लिए तनिक भी प्यार व सम्मान नहीं था। कृतिका तो दादा-दादी व नाना-नानी के घर पहुँचते ही वो वापिस घर जाने के लिए छटपटाने लगती। कृतिका का बचपन अकेले टीवी देखते या शिशुगृह में ही

बीता था ऐसे में दादा-दादी, नाना-नानी व घर परिवार के दूसरे रिश्तों की उसकी समझ ही नहीं थी। और ये सच्चाई है कि जब आपको किसी रिश्ते की समझ ही नहीं है तो आप उसका आदर मान क्या करेंगे।

संयुक्त परिवारों का टूटना, माता-पिता दोनों का कामकाजी होने के कारण माता-पिता व अभिभावक बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं। आज मम्मी-पापा के पास इतना समय नहीं है कि वह दो मिनट आराम से बैठकर बच्चें को संस्कार दे पाएं। उन्हें रिश्तों के बारे में बता पाएं और उन्हें ये समझा सके की इन्हीं बुजुर्गों ने हमें पाल-पोस कर बड़ा किया है। इन्हीं के कारण धरती पर हमारा अस्तित्व है। और बुजुर्ग हमारी कृपा के नहीं बल्कि उचित मान-सम्मान के हकदार हैं। लेकिन भागदौड़ भरी जिन्दगी में किसके पास इतना समय है जो अपने बच्चों को बुजुर्गों का आदर-मान करने का सलीका सिखा पाएं। ऐसा भी नहीं है कि एकल परिवारों में ही बच्चें बुजुर्गों का सम्मान नहीं करना जानते है। बदलती सामाजिक व पारिवारिक व्यवस्था में सयुक्त परिवारों में पलने वाले बच्चों में भी बुजुर्गों के प्रति आदर का भाव कम हुआ है। क्योंकि अब बच्चे दादा-दादी व नाना-नानी की कहानियां सुनना नहीं चाहते हैं उन्हें टीवी पर प्रसारित होने वाले कार्टून सीरिज, कम्प्यूटर, वीडियो व मोबाइल पर खेल ही लुभाते हैं। परिणामस्वरूप स्कूल से आने के बाद बच्चे अपना ज्यादातर वक्त टीवी व अन्य साधनों के साथ ही बिताते है। उनका घर के सदस्यों से संवाद नाममात्र का या फिर काम से संबंधित रह जाता है। किसी भी रिश्ते की समझ, प्यार व मान- सम्मान तभी पैदा होता है जब उस रिश्ते के साथ रहे, उसके साथ उठे-बैठे, बातचीत करे लेकिन जब बच्चे बड़े बुजुर्गों के साथ रहते ही नहीं हैं तो उनके मन में बुजुर्गों के प्रति न तो कोई प्यार है और न ही उन्हें बुजुर्गों का मान सम्मान पता है।

बदलती परिस्थितियों व सामाजिक परिवेश में बुजुर्ग बेकार व फालतू समझे जाने लगे हैं। ऊपर से माता-पिता व अभिभावकों की भागदौड़ से भरपूर जिन्दगी, एकल परिवारों की बढ़ती संख्या, बच्चों को बुजुर्गों से दूर कर रही है। वास्तविकता यह है कि बुजुर्ग के पास अनुभव का अपार खजाना उपलब्ध है। और अगर बच्चे बुजुर्गों की छत्रछाया में अपना जीवन गुजारें तो उनमें सभ्यता-संस्कृति की समझ के साथ असंख्य अन्य गुण व आदते भी सीख जाएंगे। ये हमारी जिम्मेदारी है कि हम बच्चों को बुजुर्गों का सम्मान करना सिखाएं और उन्हें यह भी बताएं कि देश एवं उनके लिए बुजुर्ग कितने आवश्यक तथा मूल्यवान हैं।■

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के बेमेतारा में एक 60 वर्षीय आदमी के पेट में से दो वर्ष बाद कैंची निकाली गयी है। दिसंबर 2007 में एक निजी चिकित्सक ने शल्य चिकित्सा पूर्ण करने के बाद कैंची उनके पेट में ही छोड़ दी थी। जिससे मरीज को पिछले दो साल से तेज दर्द की शिकायत रहती थी। दुर्ग के एक सरकारी अस्पताल में इस मरीज का तीन घंटे तक ऑपरेशन चला। ऑपरेशन के बाद मरीज का स्वास्थ्य अब ठीक है।

- सन् 2001 की जनगणना के समय भारत में लगभग 2.19 करोड़ विकलांग थे। जो कुल आबादी का 2.13 फीसदी था। सरकारी दस्तावेजों के अनुसार अभी हमारे देश में विकलांगों की संख्या 2.44 करोड़ है। इनमें 75 फीसदी विकलांग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं।

- हिन्दू विवाह अधिनियम के तहत तलाक के प्रमुख आधार इस प्रकार हैं
  - *व्यभिचार :* विवाहेत्तर संबंध।
  - *क्रूरता :* किसी भी प्रकार की मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना।
  - *परित्याग :* अगर पति-पत्नी में कोई बिना किसी सूचना के 2 साल के लिए छोड़ देता है।
  - *धर्म परिवर्तन :* अगर पति-पत्नी में से कोई अपना धर्म परिवर्तन कर लेता है।
  - *बीमारी :* किसी जानलेवा बीमारी जैसे मानसिक रूप से कमजोरी, कोढ़ या संक्रामक रोग से पीड़ित होने पर।
  - *संशय :* अगर सात साल तक कोई गायब हो जाए और उसके जिंदा होने पर संशय लगातार सात साल तक कायम रहे।
  - *साथ नहीं रहना :* कोर्ट द्वारा पति-पत्नी को एक साथ रहने के आदेश के बाद भी यदि पति-पत्नी में से कोई साथ में रहने से इंकार करे।
  - वर्तमान में भारत में तलाक की दर 1.1 फीसदी है, जो विश्व में न्यूनतम है।

अणुव्रत पुनर्मिलन

डॉ. कुसुम लूणिया

प्रस्तुत संवाद वर्तमान उच्चशिक्षित उच्च तकनीक युवावर्ग हेतु अणुव्रत की उपयोगिता पर आधारित है। एक प्रतिष्ठित कॉलेज के कुछ भूतपूर्व विद्यार्थी कॉलेज द्वारा विशेष समारोह में आमंत्रित किये जाते हैं। समारोह में सम्मिलित होने से पूर्व उनका वार्तालाप यहाँ प्रस्तुत है

पात्र-परिचय : प्रवेश के क्रम से

अरुण	**अणुव्रत का कार्यकर्ता**
संजय	**समाजसेवी**
पंकज	**पत्रकार**
सचिन	**शिक्षक**
नवीन	**राजनीतिज्ञ नेता**
वतन	**व्यापारी**
परेश	**एम.बी.ए.**

अरुण, संजय, पंकज व सचिन का बातचीत करते हुए मंच पर प्रवेश

अरुण मैंने बहुत दर्शन पढ़े हैं अनेकों धर्म गुरुओं से मिला, पर सच कहुँ जो संतुष्टी आचार्य तुलसी से मिली और कहीं नहीं मिली।

संजय अरुण, शायद इसलिए ही हमारी दोस्ती आज तक कायम है। मैंने भी बहुत समाज-सुधारक आन्दोलनों का व समाज-सुधारकों का अध्ययन किया। लेकिन ''सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा'' जैसा स्पष्ट उद्घोष कहीं सुनने को नहीं मिला।

पंकज संजय, सच कहूँ तो आचार्य तुलसी व इनके अणुव्रत आन्दोलन ने एक वैचारिक क्रान्ति की लहर पैदा कर दी। इसकी सकारात्मक तरंगों से तरंगित होकर मीडिया ने भी सर आँखों पर लिया और अणुव्रत को बहुत कवरेज दिया।

सचिन आजकल तो हमारे स्कूल के विद्यार्थियों में अणुव्रत गीत-गायन, अणुव्रत निबंध लेखन एवं अणुव्रत चित्रकला प्रतियोगिताओं के लिए भी बहुत उत्साह है।

अरुण हम चारों में दो बातें सामान्य हैं। प्रथम हम एक नैतिक विचारधारा अणुव्रत को बहुत महत्त्व देते हैं, और दूसरी जिसके कारण हम इस प्रांगण में उपस्थित है।

संजय हाँ हम श्रीराम कॉलेज के कभी न कभी विद्यार्थी रहे हैं और इसलिए आज कॉलेज प्रशासन ने हम सभी भूतपूर्व विद्यार्थियों को पुनर्मिलन दिवस समारोह पर आमंत्रित किया है।

पंकज अरे हाँ आज तो हो सकता है, हमारे अनेक पुराने सहपाठी मिले।

(क्रमशः नेता, व्यापारी व प्रोफेशनल का प्रवेश। सब आपस में हाथ मिलाते हैं, या गले मिलते हैं।)

नवीन भई वाह! क्या बात है? प्रवेश करते ही चार-चार अजीज दोस्तों से मुलाकात हो गई।

वतन चार नहीं पाँच कहो दोस्त।

परेश ओह - सारे महारथी आज यहां एक साथ हैं, आज तो बड़ी यादगार मुलाकात रहेगी।

अरुण नवीन आजकल तो तुम्हारे चर्चे चहुँओर है, युवापीढ़ी तुम्हारी बड़ी चहेती हो गई है, कहती है नेता हो तो नवीन जैसा...

संजय जरा हम भी तो सुने तुम्हारी सफलता का राज?

नवीन जब से मैंने राजनीति में प्रवेश किया है, दो महापुरुषों को गहराई से पढ़ा है एक तो महात्मा गांधी दूसरे आचार्य तुलसी।

पंकज आचार्य तुलसी से राजनीति में सफल होने का कौन-सा सूत्र पाया तुमने?

नवीन मैंने उनके आध्यात्मिक दर्शन से पाया कि मानवीय समस्याओं का हल राजनैतिक स्तर पर नहीं खोजा जा सकता।

वतन यार नवीन, इन समस्याओं का हल और कहाँ खोजा जा सकता है?

नवीन वह तो धर्म की बुनियाद में ही खोजा जा सकता है, धर्म मानवता में भेद नहीं करता और प्राणीमात्र की समानता में विश्वास करता है।

सचिन वो तो ठीक है, पर आचार्य तुलसी ने कौन-सी तुम्हें जादू की छड़ी पकड़ा दी थी, जो तुम इतने लोकप्रिय नेता बन गये।

नवीन सचिन सच पूछों तो है जादू की छड़ी, आचार्य तुलसी का अणुव्रत आन्दोलन - यह सही अर्थ में मानव धर्म का प्रतीक है। मैं अपनी व जनता की समस्याओं के समाधान में, भविष्य की योजना निर्माण में व उसकी क्रियान्विति में उसी मानव धर्म का पालन करता हूँ परिणाम तुम्हारे सामने हैं।

संजय हाँ, नवीन तुमने सही राह चुनी है। मैंने भी अपनी एल.एल.बी. के दौरान कानून की पुस्तकें पढ़ते हुए जाना कि कानून व्यक्ति को खोलता नहीं बल्कि बाँधता है।

पंकज भाई संजय कानून व्यक्ति को बाँधेगा तो खोलेगा कौन?

संजय पंकज साफ है व्यक्ति को यदि कानून के कटघरे से मुक्त होना है तो हृदय परिवर्तन का सहारा लेना ही होगा। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा देश की जनता को हृदय परिवर्तन का सन्देश दिया।

वतन तभी तो चहुँ और अणुव्रत

के चर्चे अनुगुंजित हो रहे हैं। लेकिन संजय एक बात तो तय है कि माटी का दिया जलता है तो अपनी सामर्थ्य अनुसार ही अन्धकार दूर कर सकता है।

अरुण तुम फिर क्यों आस लगाये बैठे हो वतन, नन्हा-सा मिट्टी का दीप क्या अन्धकार का नाश कर सकेगा?

वतन नहीं भई नहीं - यह कोई गर्वोक्ति नहीं है, बस खुशी इस बात की है कि सम्पूर्ण अन्धकार न मिटाने की स्थिति में भी दीप जल रहा है, इसी आशा में कि विभिन्न स्त्रोतों से संरक्षण मिले और अनैतिकता को निरकुंश साम्राज्य स्थापित करने का अवसर न दे।

सचिन वैसे मूल रूप में शैक्षणिक दृष्टिकोण से देखें तो अणुव्रत अभियान संस्कार निर्माण का अभियान है। इसमें व्रतों से सहज संस्कार प्रस्फुटित होते हैं। एक वाक्य में कहा जाये तो अणुव्रत बदलने का दर्शन है।

पंकज यार सचिन, आज अपेक्षा है अणव्रतों का सन्देश व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुँचे। मैं चाहता हूँ सूचना क्रान्ति के इस युग में हम संचारवादी साधनों का सही व व्यवस्थित उपयोग करें।

वतन पंकज ठीक कह रहे हो आज ही तो नैतिकता के पुनर्जागरण की आवश्यकता है क्योंकि यहाँ नैतिक मूल्यों का संकट है। भौतिक वस्तुओं का मूल्य दिनोदिन बढ़ रहा है किन्तु सत्य, सदाचार व सरलता का मूल्य घट रहा है। श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण अर्थात व्यक्ति का चरित्र निर्माण ही अणुव्रत दर्शन का मूल आधार है। इसी से आर्थिक समृद्धि समाज में स्थायी हो सकती है।

परेश वतन, मैं स्थायी आर्थिक समृद्धि का मतलब समझा नहीं।

वतन परेश, जो गत वर्ष वैश्विक आर्थिक मंदी के दौर में अमेरिका में हुआ वह अस्थायी समृद्धि है क्या और अधिक स्पष्ट करूँ?

परेश अरे यार समझदार को इशारा काफी है। और मैं ठहरा आई. आई.एम. से एम.बी.ए., मैं तुम्हारे कथन की गहराई तक पहुँच गया हूँ।

संजय कौन-से आई.आई.एम. से हो?

परेश अहमदाबाद से।

संजय फिलहाल क्या कर रहे हो?

परेश एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में मैनेजर के पद पर हूँ, इसकी भी रोचक दास्तान है।

अरुण जरा हम भी सुने हमारे जिगरी दोस्त की रोचक दास्तान।

परेश वास्तव में हमारी कम्पनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी भी जैन हैं, उन्होंने बड़े कायदे से कम्पनी की नीतियाँ बनाते समय अणुव्रत का विशेष ध्यान रखा है।

सचिन अणुव्रत से कम्पनी को कोई फायदा हुआ?

परेश हाँ मैंने देखा है सामाजिक स्थिति भी मजबूत हुई है और लाभ भी बढ़ गये हैं।

पंकज लेकिन एक बात समझ में नहीं आ रही है। तुम्हारे कार्यग्रहण और अणुव्रत का क्या लेना-देना है?

परेश जब मैं ग्याहरवीं कक्षा का विद्यार्थी था तब स्कूल में कुछ अणुव्रत के कार्यकर्ता आये थे - मैंने एक व्रत स्वीकारा था कि परीक्षा में अवैध तरीके से काम में नहीं लूंगा। कैंपस प्लेसमेंट के लिए जब यह प्रतिष्ठित कम्पनी हमारे संस्थान में आयी तब परीक्षा हॉल में इन्होंने गुप्त वीडियो कैमरे लगा दिये थे। परीक्षा भवन से निरीक्षक दो बार पाँच-पाँच मिनट के लिए बाहर चला गया था। लगभग सभी परीक्षार्थियों ने इधर-उधर तांका-झांका बातचीत की, लेकिन मैं अपने लिखने में व्यस्त रहा।

अरुण तुम्हें यह बात कैसे पता चली? यह तो कम्पनी की गोपनीय योजना होगी।

परेश लिखित परीक्षा के पश्चात् साक्षात्कार के लिए जब मुझे बुलाया गया तब मुझे पता चला।

वतन इसका मतलब है कि हम अणुव्रत को वर्तमान का सत्य मान सकते हैं।

परेश हाँ-हाँ क्यों नहीं?

अरुण परेश तुमने और तुम्हारे मुख्य कार्यपालक ने प्रायोगिक रूप से अणुव्रत को जीवन में उतार कर सफलता प्राप्त की है।

परेश हाँ अरुण, मेरी भी व्यक्तिगत राय है कि अणुव्रत देश की वर्तमान जटिल समस्याओं का समाधान है।

वतन मुझे लगता है कि हम जैसे युवकों के लिए यह वरदान है।

पंकज फिर तो हम सभी इसे अपनाकर अपनी समस्याओं से निपट सकते हैं।

सचिन हाँ हम इससे दूसरों की भी मदद कर सकते हैं।

नवीन दोस्तों आपके विचार तो बहुत श्रेष्ठ है पर इसे क्रियान्वित कैसे किया जाये?

संजय इस हेतु ठोस योजना तो हमारे अणुव्रती मित्र अरुण ही प्रस्तुत कर सकते हैं?

अरुण हाँ भाईयों हम आज कॉलेज के पुनर्मिलन दिवस पर अपना भी 'अणुव्रत : पुनर्मिलन क्लब' बनाते हैं। हम सात सदस्यों से इसका शुभारम्भ करते हैं।

सब हाँ, हाँ क्यों नहीं?

अरुण आज तो हमारे पास समय की कमी है, भविष्य की सारी योजनाओं के लिए हम इंटरनेट पर मिलते हैं। निकट भविष्य में वेवकेम से चेटिंग द्वारा परिसंवाद करते रहेंगे। आओ अभी समारोह स्थल पर चलते हैं।

समवेत स्वर हाँ हाँ चलो।

(सब मंच से चले जाते हैं।)■

बी–66, सूर्यनगर,
गाजियाबाद, उ.प्र.

नीति नियामकों की निष्ठुरता

सुषमा जैन

स्वयं के ज्योतिषी न होने का दावा करने वाले केन्द्रीय कृषि मंत्री शरद पवार आखिर दो दिन बाद ही इतने बड़े भविष्यवेत्ता कैसे हो गये कि उन्होंने हफ्ते भर में महंगाई से राहत मिल जाने की घोषणा कर डाली। चार माह पूर्व ही उन्होंने जनवरी तक चीनी के दाम कम न होने का ऐलान कर जनता को आतंकित कर दिया था, फिर उन्होंने मूल्यों में कमी को अगले दो साल तक टालने का बयान देकर अपने निकम्मेपन का सबूत दिया, उसके बाद तो वे महंगाई के मुद्दे पर अपने हाथ में जादुई छड़ी न होने का ढिंढोरा पीट जमाखोरों, मुनाफाखोरों तथा सट्टेबाजों के साथ खड़े नजर आये। इसे सरकार की निष्क्रियता, निष्ठुरता और नाकारापन ही कहा जायेगा कि वह देश की 85 प्रतिशत से भी अधिक बिलबिलाती जनता की भावनाओं से खिलवाड़ कर उनके जख्मों को उधेड़-उधेड़ कर उन पर नमक छिड़कने का काम कर रही है।

सन् 2007 में ही अर्जुन सेन गुप्ता समिति ने देश की बद् से बद्तर होती स्थिति का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया था कि 77 प्रतिशत जनता 20 रुपये प्रतिदिन से भी कम पर गुजर-बसर करने को विवश है। अब प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष सुरेश तेंदुलकर की अध्यक्षता में गठित एक विशेषज्ञ समिति ने अपनी रिपोर्ट में खुलासा किया है कि भारत में 37.2 प्रतिशत लोग गरीब हैं। जाहिर है कि यह स्थिति 2004-05 में किये गये 27. 5 प्रतिशत के सर्वेक्षण से लगभग 10 प्रतिशत अधिक है। यानि तकरीबन 11 करोड़ लोग और गरीबी रेखा के नीचे धकेल दिये गये हैं। यही समिति और भी अधिक भयावह आंकड़े प्रस्तुत कर रही है कि 41.8 प्रतिशत जनसंख्या मात्र 447 रुपये प्रति व्यक्ति प्रतिमाह पर गुजर बसर कर रही है। स्पष्ट है, लगभग 45 करोड़ लोग केवल साढ़े चौदह रुपये रोज पर ही जीवित हैं। हैरत तो इस बात की है कि सरकार ने इन गरीबों को गरीबी रेखा से नीचे नहीं माना। क्या केवल कीड़े-मकोड़े की तरह रेंगते लोग ही गरीबी रेखा के नीचे आयेंगे? सरकार बताएगी कि 14.50 रु. से भी कम कमा पाने वाले आखिर किस प्रकार 20 रु. किलो आटा, 50 रु. किलो चीनी, 100 रु. किलो दाल तथा 250 रु. किलो चायपत्ती खरीद सकेंगे? देश की तीन चौथाई से अधिक जनता भुखमरी के कगार पर है और सरकार है कि गरीबी पर ही आंकड़ेबाजी कर कान में तेल डाले पड़ी है।

मैं यह नहीं मानती कि देश में औद्योगिक उत्पादन नहीं बढ़ा है, विकास दर नहीं बढ़ी है। परन्तु मेरा स्पष्टतः मानना है कि जब इसके लाभ के वितरण की बात आती है तो यह माननीयों तक ही सीमित होकर आर्थिक विषमता की खाई को और चौड़ा कर रही है। तकरीबन 50 लाख लोग ही पूर्ण धनवैभव और सहूलियतों से सराबोर होते नजर आ रहे हैं, और 5 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुँचाया जा रहा है। देश की 90 प्रतिशतः से भी अधिक जनता ठगी-सी एक और खड़ी निहार रही है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने चालू वित्त वर्ष के लिए महंगाई की दर 6.5 प्रतिशत पर रहने का अनुमान लगाया था, परन्तु चीनी, दाल और आलू सब्जियों जैसी सामान्य उपभोग की प्राथमिक चीजों के लगातार महंगे होने के कारण सभी प्रकार की वस्तुओं के थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति, आर. बी. आई. के अनुमानों को धत्ता बताते हुए दिसंबर 2009 में उछल कर 7.31 फीसदी तक पहुँच गई। कीमतें तेजी से बढ़ने का अनुमान इसी से लग जाता है कि यह नवंबर 2009 में 4.78 प्रतिशत थी और दिसंबर 7 फीसदी का आंकड़ा पार कर गई। विशेषज्ञों का मानना है

कि यदि इसकी बढ़ोतरी पर लगाम नहीं लगाई गई और महंगाई बढ़ने की यही रफ्तार रही तो यह मार्च के अंत तक 8.5 प्रतिशत तक बढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

सरकार कभी बाढ़, कभी सूखा, कभी आपूर्ति पर भारी पड़ती मांग, कभी अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बढ़ती कीमतें और कभी कालाबाजारियों व जमाखोरों को नियंत्रण करने में राज्य सरकारों की विफलता का रोना रोकर अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने में लगी है। यदि राज्य सरकारें विफल है तो क्या वे बताएंगे कि उन्होंने जमाखोरी रोकने के लिए क्या कदम उठाए हैं? क्या कांग्रेस शासित प्रदेशों से सभी मुनाफाखोर दुम दबाकर भाग गये हैं? अकेले दिल्ली में ही प्रधानमंत्री कार्यालय की आँख के नीचे ही मुनाफाखोरी जमकर हो रही है।

एक साधारण खुदरा व्यापारी से लेकर बड़ी खुदरा कंपनियां भी 400 प्रतिशत तक कमीशन वसूल कर मुनाफा बटोर रही हैं। राज्य सरकारों पर कालाबाजारियों पर अंकुश में विफलता का आरोप लगाने वाली केन्द्र सरकार क्या नहीं जानती कि आखिर इतनी बड़ी तेजी से पूरे देश में जमाखोरों का जाल कैसे फैल गया। इसके लिए उसी के मंत्रियों के वे गैर-जिम्मेदाराना ब्यान जिम्मेदार हैं जिनसे कालाबाजारियों, सटोरियों और जमाखोरों के हौंसले बुलंद हुए है, और वे निरंकुश होकर दोनों हाथों से जनता को लूटने में जुटे हैं। सच्चाई तो यह है कि हमारी अर्थनीति से लेकर विदेश नीति तक में कई छिद्र हैं जिसका खामियाजा देश की जनता को कष्टों से जूझकर चुका ही रही है, विदेशों में रहने वाले भारतीयों पर भी लगातार मुसीबतों के पहाड़ टूट रहे हैं।

इसी मुनाफाखोरी की कोख से मिलावटखोरी का घृणित धंधा जन्म लेकर पूरे बाजार को अपनी जकड़ में ले चुका है। दूध, घी, तेल, दालें, मसाले आदि के अतिरिक्त अब शायद कोई भी ऐसी वस्तु नहीं बची है जिसमें भारी मात्रा में मिलावट न की जा रही हो। कुछ दिन दिखावे के लिए मिलावटखोरी नियंत्रण करने का अभियान चलता है फिर अधिकारियों की कृपादृष्टि से सभी कुछ सामान्य हो जाता है। प्रथम तो महंगी वस्तुएं ही खरीदना मुश्किल, ऊपर से मिलावट की मार आखिर जनता जिए तो कैसे?

देश के नेता चुनावों के समय जनता को हर कष्ट से मुक्ति का आश्वासन देते हैं। जीतने के बाद हर मंच से भारत को विश्वगुरु बनाने के दावे ठोकते हैं। जिस देश की दो तिहाई जनता बुनियादी आवश्यकताओं तक से वंचित हो, वहाँ यह दावा कितना हवाई और जनता को मूर्ख बनाने की तिकड़म है, यह आसानी से सोचा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र की मानव विकास सूचकांक रिपोर्ट 2009 क्या भारत के विश्व गुरु बन जाने की ओर इशारा करती है जिसमें 182 देशों की सूची में भारत 134 वें स्थान पर दम तोड़ रहा है? संयुक्त राष्ट्र के विश्व खाद्य कार्यक्रम के अनुसार ही भुखमरी में भारत 119 देशों की सूची में 94 वें स्थान पर चमक रहा है।

आज भी देश में कई इलाके ऐसे है जहाँ न पानी की सुविधा है न शिक्षा की, न बिजली की व्यवस्था है न चिकित्सा की, रोटी की व्यवस्था तो बहुत दूर की बात है। देश का बचपन ही चिकित्सीय सुविधाओं, तथा पौष्टिक आहार के अभाव में असमय ही काल के मुंह में समा रहा है। एक अनुमान के अनुसार भारत में पैदा होने वाले 1000 बच्चों में से 53 तो एक साल से पहले ही मर जाते हैं तथा प्रति वर्ष 20 लाख बच्चे अपने जीवन के 5 वर्ष भी पूरे नहीं कर पाते। इसकी मुख्य वजह बेरोजगारी से उत्पन्न आर्थिक कठिनाइयां तथा उन पर सरकारी उदासीनता ही है।

एक बात तय है कि जिस प्रकार सरकार की आर्थिक नीतियां, आर्थिक विषमता को तेजी से बढ़ा रही हैं और पीड़ित जनता में दिनोंदिन आक्रोश बढ़ता जा रहा है उससे स्पष्ट झलकता है कि भारत को अपराधों का देश बनते देर नहीं लगेगी। उपेक्षित जनता का आक्रोश यदि फट गया तो इसके गंभीर परिणाम सभी को भुगतने पड़ेंगे।■

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार
न्यू कृष्णा नगर, जैन बाग,
वीरनगर, सहारनपुर - 247001 (उ.प्र.)

महंगाई से एक मुलाकात

वीना ढींगरा

स्वपन में एक दिन
हमें महंगाई मिल गई।
देखकर उसकी अपार छवि
इक मुस्कान सी खिल गई।

प्रत्यक्ष देख हम बोले
भारत आई हो कब से?
क्या परिचय है तुम्हारा?
मायका समझ अपना यहाँ
सदा विचरण करोगी?

मंद-मंद मुस्कान से
मनमोहिनी रूप धरने लगी,
जनमानस के घर-घर में
वास तुम करने लगी,
भारत-भ्रमण अब समाप्त करो।
परदेशी बन सदा के लिए प्रस्थान करो।

महंगाई बोली.....
यहाँ बचपन बीता
बड़ी हुई, सुखद जवानी के स्वप्न लिये,
मन ने ली अंगड़ाई, पग घुंघरू बाँध लिए,
विवाह कर, कब विदा करोगे?

कभी कांग्रेस, कभी जनता दल, कभी समाज दल
छाई है चारों ओर सब दलों की दल-दल।
हुआ इनका गठबंधन, न हुआ मेरा विवाह गठबंधन
फंस गई मैं अबला नारी,
मैं रह गई कुंआरी।

उस समय को कोसती क्यों यहाँ पैदा हुई?
समय बदला - बदली दुनियां,
निरन्तर बढ़ती देख दहेज की मांग
अधूरा रहा स्वप्न, भरी न मेरी मांग।
बिखरे सपने, परिस्थिति बदली
मनःस्थिति भी बदली।
बढ़ती उम्र, रूठ गई तकदीर
सोचती हूँ यह पावन धरती जननी है मेरी
यहीं रह यहीं मरूँगी
यही बाबुल, यही ससुराल है मेरा
इससे दूर अब रह न सकूंगी।

चुनावी दंगल में, मुख्य मुद्दा मैं बनती
चौसर की बिसात पर मात देते
कौरव-पांडव दल
हर चुनाव में कौरव बने विरोधी दल
कर रहे महंगाई - बनाम द्रौपदी चीर-हरण
कोई कृष्ण भवसागर से पार कर, दूर करे यह ग्रहण

सब के आँख की किरकिरी बन नहीं रहना यहाँ,
मर्म न समझ सकी,
मेरे जन्मदाता भ्रष्टाचार को गले लगाते यहाँ
सुरसा सा मुख फाड़े,
मंदी बढ़ रही यहाँ-वहाँ
बिन रोज़गार छटनी से जीना दूभर हुआ यहाँ-वहाँ
देती हूँ आज चुनौती, सब स्वीकार करो।
हों बुलन्द हौसले, तो विदा करो।

नफरत अब असहनीय है यहाँ
बस अलविदा कहो
बन धरती का बोझ नहीं रहना यहाँ।
सब अलविदा कहो
कटाक्ष, परिहास कर निर्मम न बनो
उल्लास से डोली विदा करो
तनिक इतना तो, तुम प्रयास करो।

2234, सेक्टर–42–सी, चंडीगढ़

सत्कार से शत्रु भी मित्र

डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

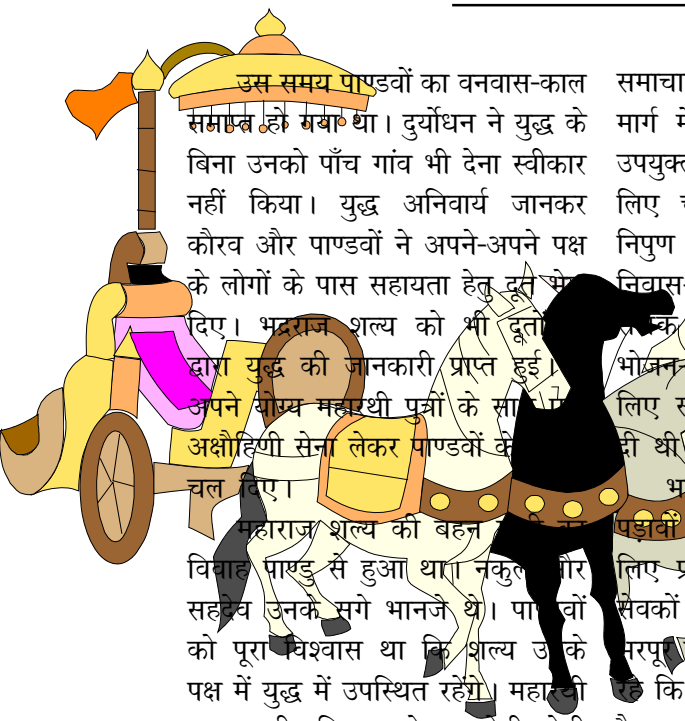

उस समय पाण्डवों का वनवास-काल समाप्त हो गया था। दुर्योधन ने युद्ध के बिना उनको पाँच गांव भी देना स्वीकार नहीं किया। युद्ध अनिवार्य जानकर कौरव और पाण्डवों ने अपने-अपने पक्ष के लोगों के पास सहायता हेतु दूत भेज दिए। भद्रराज शल्य को भी दूतों द्वारा युद्ध की जानकारी प्राप्त हुई। वे अपने योग्य महारथी पुत्रों के साथ एक अक्षौहिणी सेना लेकर पाण्डवों के पास चल दिए।

महाराज शल्य की बहन माद्री का विवाह पाण्डु से हुआ था। नकुल और सहदेव उनके सगे भानजे थे। पाण्डवों को पूरा विश्वास था कि शल्य उनके पक्ष में युद्ध में उपस्थित रहेंगे। महारथी शल्य की विराट सेना थोड़ी-थोड़ी दूर पर पड़ाव डालती धीरे-धीरे चल रही थी।

दुर्योधन को शल्य के आने का समाचार पहले ही मिल गया था। उसने मार्ग में जहाँ-जहाँ सेना के पड़ाव के उपयुक्त स्थान थे, पानी तथा पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था कर दी थी, निपुण कारीगर भेजकर सभा भवन एवं निवास-स्थान बनवा दिए थे, चतुर लोग सभी जगह नियुक्त थे। भोजन-सामग्री रखवा दी। शल्य के लिए समस्त सुख-सुविधाएं मुहैया करा दी थी।

भद्रराज शल्य को मार्ग में सभी पड़ावों पर दुर्योधन के सेवक स्वागत के लिए प्रस्तुत मिले। उन सिखलाए हुए सेवकों ने बड़ी सावधानी से भद्रराज का भरपूर सत्कार किया। शल्य यही समझते रहे कि सम्पूर्ण व्यवस्था युधिष्ठिर ने की है। इस प्रकार विश्राम करते हुए वे आगे बढ़ रहे थे। लगभग हस्तिनापुर के निकट पहुँचने पर उन्हें जो विश्राम-स्थान प्राप्त हुआ, वह अति सुंदर था। उसमें नाना प्रकार की सुखोपभोग की सामग्रियां उपलब्ध थीं। उस स्थान को देखकर शल्य ने वहाँ उपस्थित कर्मचारियों से पूछा, ''युधिष्ठिर के किन कर्मचारियों ने मेरे मार्ग में ठहरने की उत्तम व्यवस्था की है? उन्हें ले आओ। मैं उन्हें पुरस्कार देना चाहता हूँ।''

दुर्योधन स्वयं छिपा हुआ वहाँ शल्य के स्वागत की व्यवस्था कर रहा था। शल्य की बात सुनकर और उन्हें प्रसन्न देखकर वह सामने आ गया और हाथ जोड़कर प्रणाम करके बोला, ''मामाजी! आपको मार्ग में कोई कष्ट तो नहीं हुआ?''

महाराज शल्य चौंक उठे, और बोले ''दुर्योधन! यह सब व्यवस्था क्या तुम्हारी ओर से थी?''

नम्रतापूर्वक दुर्योधन बोला ''गुरुजनों की सेवा करना तो छोटों का कर्त्तव्य ही है। यह मेरा सौभाग्य है कि आपने मुझे सेवा करने का अवसर दिया।''

शल्य प्रसन्न हो उठे। उन्होंने कहा, ''अच्छा! तुम कोई हमसे अच्छा पुरस्कार मांग लो।''

दुर्योधन ने मांगा ''आप सेना के साथ युद्ध में मेरा साथ देते हुए संपूर्ण सेनापति का दायित्व निभाएं।''

यह प्रस्ताव शल्य को स्वीकार करना पड़ा। यद्यपि उन्होंने युधिष्ठिर से भेंट की, नकुल-सहदेव पर आघात न करने की अपनी प्रतिज्ञा दुर्योधन को बता दी और युद्ध में कर्ण को हतोत्साह करते रहने का वचन भी युधिष्ठिर को दे दिया, परन्तु युद्ध में उन्होंने दुर्योधन का पक्ष लिया। यदि शल्य पाण्डव-पक्ष में जाते तो दोनों दलों की सैन्य-संख्या बराबर रहती; किन्तु उनके कौरव-पक्ष में चले जाने से कौरवों के पास दो अक्षौहिणी सेना अधिक हो गयी।

86/323, देवनगर
कानपुर – 208003 (उ.प्र.)

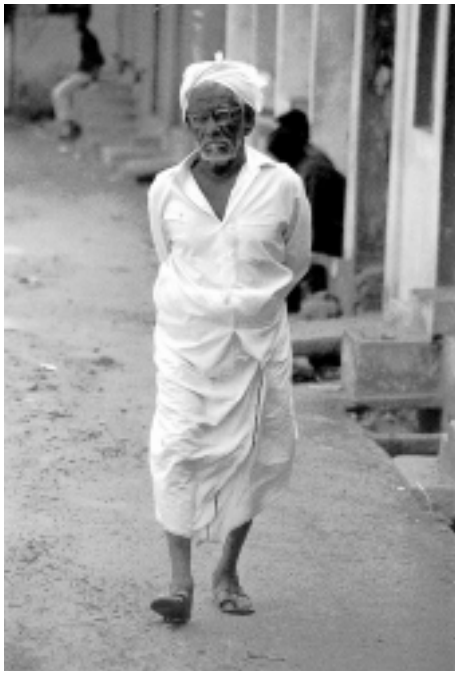

उत्साह एवं कर्मण्यता

सीताराम गुप्ता

लोग प्रायः कहते हैं कि सेवानिवृत्ति के बाद सक्रिय जीवन का अवसान हो जाता है मगर मैं पूछता हूँ कि किसी महीने की अंतिम तारीख तक तो आप एकदम सक्रिय रहे लेकिन अगले महीने की पहली ही तारीख को प्रातः उठते ही आप कैसे निष्क्रिय हो गए? ये वास्तव में हमारी सोच का दोष है। हमारी इसके लिए कंडीशनिंग हो चुकी है। इस स्थिति से उबरना ज़रूरी है। रिटायर हम नहीं होते रिटायर होता है हमारा कमज़ोर मन और उसमें उत्पन्न विकार जो हमें रिटायर कर देते हैं।

सेवानिवृत्ति एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन है। एक नए जीवन की शुरूआत ही नहीं बल्कि पुनर्जन्म है सेवानिवृत्ति। ये हमारी ही मान्यता है कि साठ वर्ष के उपरांत व्यक्ति की कार्यक्षमता कम हो जाती है अतः सेवानिवृत्ति हो जानी चाहिए। सेवानिवृत्ति किसी अवस्था विशेष की स्थिति नहीं है बल्कि अधिवर्षिता तो हर क्षण घटित होने वाली स्थिति है। जब भी मौक़ा मिले रिटायर हो जाइए लेकिन अपने कमज़ोर मनोभावों तथा विकारों से। सेवानिवृत्ति एक नई शुरूआत है, एक बेहतर और नए जीवन जीवन की शुरूआत।

सेवानिवृत्ति स्वयं को जानने तथा उत्तरदायित्वों के पुनः आबंटन का ही अवसर है। नए जीवन की नए ढंग से जोरदार शुरूआत कीजिए। जीवन की इस अंतिम पारी को अभूतपूर्व आनंद और उत्साह के साथ पूरा कीजिए।

एक कहानी याद आ रही है। एक राजा को सुंदर-सुंदर इमारतें बनवाने का बेहद शौक था। राजा शिल्पियों का आदर भी करता था और उन्हें उचित पारिश्रमिक के अलावा पुरस्कार भी देता था। इन्हीं शिल्पियों में एक अत्यंत अनुभवी शिल्पी भी था जो अब वृद्ध हो गया था। उसने वर्षों तक राज्य की सेवा करते हुए अनेक उत्कृष्ट भवनों का निर्माण किया था। राजा उसे बहुत मानते थे। शिल्पी ने एक दिन राजा से कहा, ''महाराज मैंने जीवन भर राज्य की सेवा की है लेकिन अब में वृद्ध हो गया हूँ इसलिए मुझे राज्य की सेवा से मुक्त करने की कृपा करें।''

राजा ने शिल्पी की बात बड़े ध्यानपूर्वक सुनी और उससे कहा, ''शिल्पीश्रेष्ठ आपकी सेवाओं के लिए मैं ही नहीं पूरा राज्य तुम्हारा ऋणी है। आपको सेवानिवृत्त होने का पूरा अधिकार है लेकिन मेरी ख़्वाहिश है कि सेवानिवृत्ति से पहले आप मेरे लिए एक भवन और बनाएँ जो आज तक बने सभी भवनों से श्रेष्ठ व उत्कृष्ट हो।'' शिल्पी भवन बनाने के काम में जुट गया लेकिन बेमन से। उसने उस श्रेष्ठता व उत्कृष्टता का परिचय नहीं दिया जिसकी उससे अपेक्षा थी। बस किसी तरह भवन पूरा कर दिया और एक दिन फिर राजा के सामने जा खड़ा हुआ और राजा से प्रार्थना की, ''महाराज मैंने आपकी आज्ञा के अनुसार नया भवन भी तैयार कर दिया है इसलिए अब मुझे राज्य की सेवा से शीघ्र मुक्त करने की कृपा करें।''

हाँ आज से आप राज्य की सेवा से मुक्त हुए। मैं आपकी कला से अत्यंत प्रभावित हूँ और आपको विशेष रूप से पुरस्कृत करना चाहता हूँ और इसीलिए मैंने आपसे इस उत्कृष्ट भवन का विशेष रूप से निर्माण करवाया है ताकि आपको पुरस्कार स्वरूप ये भवन दे सकूँ। शिल्पी प्रसन्न तो हुआ लेकिन उसे इस बात का बेहद अफ़सोस भी हुआ कि उसने इस भवन का निर्माण पूरे मन से नहीं किया और उसमें अनेक कमियाँ रह गईं।

हमारी सेवानिवृत्ति के बाद की अवस्था भी प्रायः कुछ ऐसी ही होती है जहाँ हम अपनी श्रेष्ठता को नज़रअंदाज़ कर अनमने से होकर कार्य करते लगते हैं जबकि इस दौरान किया जाने वाला कार्य ही हमारा वास्तविक पुरस्कार होता है। अकर्मण्यता अथवा अनुत्साह के कारण हम स्वयं अपना पुरस्कार खो देते हैं। हममें अदम्य उत्साह और ऊर्जा है। ज़रूरत है तो सिर्फ उसको जानने की और उसका उपयोग करने की। दुष्यंत कुमार ने ठीक ही कहा हैः

एक चिंगारी कहीं से ढूँढ लाओ दोस्तो!
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034

आओ फूलों सा महका लें

रजनीकांत शुक्ल

शहर आपका एक कूड़ाघर,
बुरा लगा सुनकर तो फिर क्यों,
खाकर पान थूक देते हो,
केले खाकर छिलके सारे,
टॉफी खाकर उसका रैपर,
मूँगफली खा उसके छिलके,
बीड़ी पीकर उसके टुकड़े,
सिगरेट पीकर उसके टोटे,
किसी सड़क पर, कभी कहीं भी,
जानबूझकर, नासमझी में,
फैंक शहर में कूड़ा भरते,
माँ का आँचल मैला करते,
देश के प्रति क्या ये भक्ती है,
नहीं रही हममे शक्ती है
जो हम थोड़ी मेहनत करके,
ये कूड़ेदानों में डाले,
जो ऐसा करते हैं अक्सर,
उनको टोकें उन्हें सुधारें
घर के सब कमरों को झाड़ा,
दरवाजे पर कूड़ा सारा,
अपने दरवाजे को झाड़ा,
बीच सड़क पर कूड़ा सारा,
जमा कहीं कूड़ा गर पाया,
आग लगाकर उसे जलाया,
करके वातावरण विषैला,
उसको भी गन्दा कर डाला,
ये देखो पशु पक्षी सारे,
कितनी साफ सफाई रखते,
पढ़े लिखे होकर भी हम सब,
हर पल कितना गंदा करते
ध्यान नहीं देते है बिल्कुल
कहता है कोई हमसे गर,
देखेगा जो बोलेगा ही
शहर आपका एक कूड़ाघर।

शहर आपका या मूत्रालय,
सुनकर चौंके, बुरा लगा क्या?
मैं कब कहता ये दिखता है,
जो दिखता है, वो कहता है,
कोई कहीं भी कोना लेकर,
मूत्र विसर्जित करने लगता,
कहीं न कोई जगह बनाई,
जहाँ कहीं हम हल्के होकर,
जल्दी से बाहर आ जाए,
पुरुष और महिलाएँ सारे,
बड़ी परेशानी से होते,
कई जगह पर 'जगह' नहीं है,
इसीलिए सब बैठ खड़े हों,
ये सब कुछ करने लगते हैं,
अगर कहीं मूत्रालय है भी,
तो वह इतना गंदा होता,
हम सब उसके बाहर से ही
होकर खड़े शुरू हो जाते,
ये सब कुछ कितना भद्दा है,
देख बड़ी ही घिन आती है,
हम सब ही इसके आदी है,
पर जो पहली बार शहर में,
आकर देखे बोलेगा ही
शहर आपका एक मूत्रालय।

शहर आपका एक शौचालय,
छिः ये क्या तूने कह डाला,
होश ठीक हैं? क्या बोला बे,
जुबान संभाल लगाऊँ क्या दो?
गुस्सा क्यों होते हो भाई,
अपने देश की जीवन रेखा,
उस पर यात्रा नहीं करी क्या?
बूढ़े बच्चे जवान सारे,
इस स्तर पर समान सारे,
बिटिया, चाची, मौसी, ताई,
भईया, दद्दा और भौजाई,
सुबह शाम बैठे मिलते हैं,
रेलवे ट्रैक किनारे अक्सर,
सच्चा समाजवाद उतरा हो,
ऐसा लगता भारत भू पर,
शर्म नहीं क्या हमको आती,
अपनी भी जिम्मेदारी है,
अच्छे को जब अपना कहते,
गन्दे से कैसे बच सकते,
वो भी अपना, ये भी अपना,
है यथार्थ नहीं कोई सपना,

अगर देश के प्रति भक्ती है,
हम सब में ही वो शक्ती है,
सारा देश बगीचा होगा,
जिसको हमने सींचा होगा,
कभी कहा था गांधी जी ने,
आजादी के लिए लड़े जब,
अच्छी बातें ले सकते हैं,
दुश्मन से भी अगर मिले जो,
हैं अंग्रेज हमारे दुश्मन,
पर हम उनसे भी ले सकते,
समय का पालन, साफ-सफाई,
होंगी ये जो साथ अगर तो,
जीवन में प्रतिक्षण प्रगती है,
यही देश के प्रति भक्ती है,
आओ इनको हम अपना लें,
देश को सुंदर स्वच्छ बना लें
जिन रस्तों पर चलते हैं हम,
उनको फूलों सा महका लें।

एफ–380–एफ, सेक्टर–12,
विजयनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

उचित नहीं पशुओं पर अत्याचार

डॉ. चंचलमल चोरडिया

आज राज्याश्रय के कारण हमारी संस्कृति जो मुगलों एवं अंग्रेजों के शासन काल में भी जितनी प्रभावित नहीं हुई उतनी स्वतंत्र भारत में नष्ट हो रही हैं हमारी गलत नीतियों के कारण आज हम ऐसी स्थिति में पहुँच गये हैं कि तनिक भी लापरवाही एवं उपेक्षावृत्ति से हमारा अध्यात्म स्वरूप पूर्णतः नष्ट हो सकता है। जो भारत भूतकाल में विश्व का आध्यात्मिक गुरु था। अहिंसा, सत्य, प्रेम, करुणा, दया, परोपकार जैसी वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का संदेशवाहक था, उसी भारत से आज हिंसा, क्रूरता, अनैतिकता एवं पशुओं के साथ विश्वासघात का निर्यात हो रहा है।

आज चारों तरफ हिंसा, आतंक, लूट, क्रूरता, निर्दयता एवं बदले की भावना तीव्र गति से क्यों पनप रही है? सरकार के सारे प्रयास अपेक्षित परिणाम लाने में क्यों असफल हो रहे हैं? जिस पर पूर्वाग्रह छोड़ सम्यक् चिंतन की आवश्यकता है? सरकार मांसाहार प्रचार एवं भारतीय संस्कृति की मूल अहिंसा की भावना को नष्ट करने वाली कंपनियों को ताजा मांसाहार उपलब्ध कराने हेतु आमंत्रित कर रही है, ताकि गांव-गांव और घर-घर में चाय, बीड़ी, सिगरेट की भांति ताजा मांस उपलब्ध कराया जा सके। विदेशी मुद्रा के लालच में नये-नये यांत्रिक बूचड़खाने खोल मांसाहार का निर्यात करने तथा पशुधन को विदेशों में मांस की खपत को पूरा करने, बेचने जैसे अमानवीय, अकरणीय, घृणित कार्यों में हमारी लोकप्रिय कहलाने वाली सरकार अत्याधिक रुचि लेकर प्रोत्साहन दे रही है। भविष्य में पशुओं के पड़ने वाले दुष्काल की तरफ सरकार बेखबर है। संसद में जब मांसाहार को प्रोत्साहन देने की योजनाओं पर चर्चा हो उस समय हमारे जन-प्रतिनिधि स्वार्थवश दलों के निर्देशानुसार मूक श्रोता बन रहे हैं तो ऐसे जनप्रतिनिधि जनभावनाओं का कितना प्रतिनिधित्व करते हैं? हमारा कर्त्तव्य है कि ऐसे राजनेताओं को सजग करें ताकि वे अपना दृष्टिकोण बदल दलगत भावनाओं से ऊपर उठ मानवीय भावना का आदर करना सीखें। भगवान् से हम प्रार्थना करें कि उन्हें सद्बुद्धि दे तथा उनकी सुषुप्त आत्मा को जगाये ताकि सदैव अमर रहने का उनका भ्रम समाप्त हो। राष्ट्र की स्थिति का चित्रण करते हुए कवि ने मार्मिक शब्दों में अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति करते हुए कहा

खूनियों के पंजे में उलझ गया देश,
गोलियों की गर्मी से झुलस गया देश।
फिर भी मुझे जीतना है, वोट चाहिये,
मुझको मेरा कर्त्तव्य नहीं, कुर्सी चाहिये।।

कानून की विसंगतियां :

सरकार पशुओं के कल्याण हेतु जनचेतना जागृत करने के लिए प्रतिवर्ष 14 जनवरी से 29 जनवरी तक राष्ट्रीय स्तर पर पशु कल्याण पखवाड़ा मनाती है। पशु क्रूरता निवारण समितियां इन दिनों में बच्चों की रैलियों, भाषण प्रतियोगिताओं, निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन कर अपना कर्त्तव्य पूर्ण समझ रही है। पशु कल्याण विभाग बना हुआ है, जिसके अंतर्गत पशु क्रूरता निवारण समितियां कार्यरत हैं। अहिंसा प्रेमियों द्वारा पशुओं के संरक्षण हेतु सैकड़ों स्वयंसेवी संस्थाएं संलग्न हैं। फिर भी दिन-प्रतिदिन भारत में पशु-क्रूरता तीव्र गति से बढ़ रही है। **भारत में पशु-क्रूरता निवारण कानून बना हुआ है। जिसके अंतर्गत पशुओं पर हो रहे अत्याचारों, क्रूरता, बर्बरता, निर्दयता करने वालों पर दण्ड का प्रावधान है। परन्तु इन मूक, बेबस, बेसहारा प्राणियों को उन कानूनों का लाभ नहीं मिल रहा है। कानून के अंतर्गत पशुओं को प्रताड़ित करना, उनके साथ क्रूरता करना, उन पर अधिक बोझ लादना, ट्रकों में ठूंस-ठूंसकर भरना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते समय उनको कष्ट पहुँचाना कानूनी अपराध है। परन्तु आश्चर्य इस बात का है कि उनको जान से मार देने पर कोई दण्ड का प्रावधान नहीं है। बूचड़खाने पशु-क्रूरता कानूनों का खुला उल्लंघन हैं। पशु मेलों से बूचड़खानों तक पशुओं को पहुँचाने के पूर्व अधिकारियों से वध करने योग्य पशु का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने एवं पशुओं के वध करने की जो प्रक्रिया है, वह सब कानून की धज्जियां उड़ा रही हैं। मानों खेत ही बाड़ को खा रहा है। कानून बनाने एवं उसकी रक्षा हेतु जिम्मेदार सरकार खुले आम पशु-क्रूरता कानून का गला घोंट रही है। कभी-कभी तो मांसाहार करने वाले या पशुओं पर दया न रखने वाले पशु कल्याण विभाग के उच्च पदाधिकारी बन जायें तो भी आश्चर्य नहीं। कानून की विसंगतियों एवं कार्य के अनुरूप योग्यता का मापदण्ड न होने से हमारे राष्ट्र में पशु कल्याण विभाग का कार्य संभालने वाले सर्वोच्च पदाधिकारी को**

मांस निर्यात को प्रोत्साहन देने वाले विभाग का दोहरा दायित्व दे दिया जाये तो भी आश्चर्य नहीं।

पशु-पालन विभाग पशु-मारण की योजना बना रहे हैं। पश्चिम का अंधानुकरण कर आज खरगोश, मछली, अण्डों की खेती जैसी भ्रामक शब्दावली बनाकर जानवरों के प्रति करुणा, दया व प्रेम की भावना मिटाई जा रही है। आश्चर्य तो इस बात का है कि ये सारे कार्य कानून की आड़ में किये जा रहे हैं।

प्रकृति की उपेक्षा असंगत

भारतीय संविधान में भारत के नागरिकों को मनपसंद व्यवसाय करने का प्रावधान है। 23 अप्रैल 1956 का दिन भारत के पशु जगत् के लिये काला दिन था। इस दिन भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने मानव की करुणा, दया, संवेदना, अहिंसा, प्राणीमात्र के प्रति सभी महापुरुषों द्वारा मैत्री एवं प्रेम के उपदेश तथा जीयो और जीने दो के संदेश का अनदेखा कर पशुवध को भी अपने मनपसंद व्यापार के अंतर्गत स्वीकार कर लिया। परंतु पशु-हत्या व्यापार और व्यवसाय नहीं हो सकता। यह मानवता पर कलंक है। पाश्विकता का द्योतक है। **यदि पशु-हत्या मनपसंद व्यापार है तो फिर भविष्य में विदेशों से अवैध रूप से विदेशी सामान लाना, जुआ-खोरी, वेश्यावृत्ति, चोरी, डकैती, आतंक जैसे अमानवीय कार्यों को भी मनपसंद व्यापार की श्रेणी में बतलाया जावे तो भी आश्चर्य नहीं? संविधान की ऐसी विसंगतियों को सजग जनप्रतिनिधियों द्वारा दूर करवाना चाहिये और हत्या, क्रूरता, बर्बरता, निर्दयता, अत्याचार जैसे शब्दों की सरकार को स्पष्ट व्याख्या करनी चाहिए। जो प्राण हम दे नहीं सकते उन्हें लेने का किसी को अधिकार नहीं। सरकार संविधान की आड़ में मायाचार, अनैतिकता, हिंसा को प्रोत्साहन न दे। पद एवं पैसों के लिए असहाय मूक पशुओं की निर्मम हत्या को बढ़ावा अज्ञानता का प्रतीक है। जब किसी का आशीर्वाद हमारा मंगल कर सकता है तो मृत जानवरों की बद्दुआएं राष्ट्र के अमन-चैन का सत्यानाश करने का हेतु बने तो आश्चर्य नहीं। जानवर बेजुबान भले ही हों, बेजान नहीं हैं।**

धार्मिक भावना की उपेक्षा अनुचित

महात्मा गांधी ने परतंत्र भारत को अहिंसात्मक आंदोलन द्वारा आजाद कराया। आज हम स्वतंत्र हैं। हमें वाणी की स्वतंत्रता हैं हमारे संविधान का स्वरूप धर्म-निरपेक्षता का है। किसी की धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाना कानूनी अपराध है। तब क्या हिंसा का प्रचार कर, टी.वी. पर अण्डों एवं मांसाहार का विज्ञापन कर सरकार स्वयं अहिंसक धर्मावलम्बियों की भावना को आघात पहुँचा संविधान एवं कानून का उल्लंघन तो नहीं कर रही है? जिसकी तथ्यपरक जांच आवश्यक है। नये-नये बूचड़खाने खोल, जानवरों को खेती के रूप में मान्यता दे, खरगोश की खेती, अण्डों की खेती, मछली की खेती जैसी भ्रामक शब्दावली का सहारा ले हिंसा को बढ़ावा दें, भारतीय संस्कृति के अध्यात्म स्वरूप को बर्बाद कर अहिंसक धर्मावलम्बियों की भावना का अनादर करे, कहाँ तक न्याय संगत है? क्या अहिंसक समाज की भावना का संविधान में कोई महत्त्व नहीं?

हिंसा का विस्तार क्यों?

आज हम विज्ञापन के युग में जी रहे हैं। टी.वी., रेडियो तथा विज्ञापन के अन्य साधनों द्वारा प्रचारित व्यावसायिक विज्ञापनों ने इन्द्रिय-विषयों के सेवन की भूख और मांग बढ़ाई है। आवश्यकताएं इच्छाएं बनकर पुकार रही है। जिनकी पूर्ति हेतु मानव करणीय-अकरणीय का विवेक खोकर येन-केन-प्रकारेण पद एवं पैसा प्राप्त करने की अंधी दौड़ में मस्त हो रहा है। मानवीय मूल्यों की वह अपने अनुकूल व्याख्यायें कर रहा है। उसका सारा चिंतन स्वार्थ, लोभ एवं अहं पोषण से ओतप्रोत हो रहा है तथा हिंसा, क्रूरता, अनैतिकता, मायावृत्ति, अन्याय, अत्याचार, शोषण, दूसरों को दुःखी देखकर प्रसन्न होने जैसी पाश्विक वृत्तियां भी बुरी नहीं लग रही हैं। उसके जीवन का अंतिम लक्ष्य क्या है? वह कहाँ से आया? क्यों आया? कहाँ जाना है? क्या साथ में लाया एवं मरने के पश्चात् क्या साथ लेकर जायेगा, जैसे मूल प्रश्नों का चिंतन नहीं कर रहा है, फलतः जीवन के सच्चे सुख एवं शांति से वंचित हो रहा है। मानव

का यही अज्ञान बढ़ती हुई हिंसा का मूल कारण है। जब तक उसको अमूल्य जीवन की विशेषताओं, मानवीय गुणों के महत्त्व को नहीं समझाया जायेगा, गलत प्रवृत्तियों को रोकना कठिन होगा।

हिंसा के विविध क्षेत्र

करुणा, प्रेम, दया, सहानुभूति, परोपकार, वात्सल्य आदि के अभाव में आज मानव स्वार्थी, लोभी हृदयहीन, क्रूर, निर्दयी, क्रोधी एवं कठोर बनता जा रहा है। वह सहयोग, प्रेम एवं अहिंसा के स्थान पर संघर्ष व हिंसा को शक्ति का प्रतीक मानने की भूल कर रहा है। अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा में सहयोगी बन रहा है।

पशुओं की हिंसा एवं उन पर अत्याचार मांसाहार के लिये हों अथवा सौंदर्य प्रसाधनों एवं उपभोग के विभिन्न उत्पादकों हेतु, अनुचित है। पाठशालाओं में टी.वी., मॉडल, कम्प्यूटर के वैज्ञानिक युग में पशुओं का विच्छेदन अनावश्यक है। दवाइयों अथवा अन्य उत्पादकों के परीक्षण हेतु क्रूरता हो या उपचार हेतु काम में आने वाली दवाइयों, इंजेक्शनों के रूप में हो अथवा कुर्बानी, पशु-बलि जैसे धार्मिक अंधविश्वासों के पोषण से संबंधित हों, न्यायसंगत नहीं। शिकार, जानवरों को लड़ाना, बंधक बनाना, उन पर पटाखे बाँधना, चुनाव प्रचार में उनका दुरुपयोग करना जैसे मनोरंजन के लिये हो अथवा पौष्टिकता के नाम पर खाद्य पदार्थों में मिलाने हेतु हो या आर्थिक लाभ और विदेशी मुद्रा अर्जित करने का लालच ही क्यों न हो, हिंसा बुरी है। मानवता पर कलंक है। मानवीय गुणों का संहार करने वाली है। अतः अकरणीय है, त्याज्य है, कदापि अनुमोदनीय नहीं हो सकती। हिंसा रोकने हेतु सरकार एवं जनता को अग्रांकित बिन्दुओं पर चिंतन कर अहम् भूमिका निभानी चाहिए।

हिंसा रोकने हेतु जनता का कर्त्तव्य

1. जिन वस्तुओं में अण्डे, मांस, मछली एवं पशुओं के अवयवों का उपयोग हो, उनके उपयोग से अपने आपको अलग रखें।

2. हम उन सभी प्रवृत्तियों से बचें जिसमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष पशु क्रूरता अथवा हिंसा होती है।

3. जिन कंपनियों, कारखानों में उत्पादन अथवा परीक्षण हेतु पशुओं पर अत्याचार होते हों ऐसी कंपनियों के शेयर न खरीदें।

4. बूचड़खाने के साप्ताहिक एवं घोषित अवकाश दिनों का दृढ़ता से पालन करावाएं।

5. पाठशालाओं में टी.वी., मॉडल आदि का उपयोग कर अनावश्यक पशुओं का विच्छेदन बंद किया जाये।

6. जो जन-प्रतिनिधि एवं राजनैतिक दल हिंसा का खुले रूप से समर्थन करते हों उन्हें तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति हेतु किसी प्रकार का सहयोग न दिया जाये।

हिंसा रोकने हेतु सरकार का दायित्व

1. मांस निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध लगावें।

2. सरकारी संचार माध्यमों का हिंसा एवं प्रदूषण को प्रोत्साहन देने हेतु दुरुपयोग न किया जावे।

3. **वर्तमान में आयोजित प्रायः अधिकांश पशु मेलों के माध्यम से बूचड़खानों के एजेन्टों द्वारा सरकारी नियमों के विरुद्ध पशु क्रय कर बूचड़खानों में हजारों की संख्या में भिजवाये जा रहे हैं, जिस पर प्रशासन, पुलिस एवं सतर्कता विभाग विशेष ध्यान रखे।**

4. सरकार अण्डों की खेती, मछली की खेती जैसी भ्रामक शब्दवाली पर तुरंत प्रतिबंध लगावे, क्योंकि ये पदार्थ जमीन में बोकर नहीं पैदा किये जाते।

5. **अहिंसक करदाताओं के पैसों का उपयोग जलकल्याण के लिए हो, न कि बूचड़खाने, मुर्गीपालन, मछली उत्पादन जैसे हिंसक उद्योगों में, ताकि अहिंसक करदाताओं के मूल अधिकारों का हनन न हो।**

6. पशु क्रूरता कानून को तर्कसंगत बनाया जाये एवं सभी प्रकार के पशु-वध बंद हों, इस हेतु सरकार द्वारा कानून में आवश्यक संशोधन किया जाये।

7. पैट्रोल का दुरुपयोग रोका जाये, जिससे विदेशी मुद्रा को बचाया जा सके, ताकि विदेशी मुद्रा प्राप्ति के लिए पशुओं का वध और मांस का निर्यात बंद किया जा सके।

अहिंसा की उपेक्षा अनुचित

हिंसा के लिए परिस्थितियां मुख्य नहीं, हमारी असजगता, निष्क्रियता, उदासीनता, तटस्थता मुख्य हैं, जिसके कारण हमारा आचरण अपने कर्त्तव्यों को निभाने में कायरों जैसा हो गया है। कायर कभी अहिंसक नहीं हो सकता?

अहिंसक और कायर में बहुत अंतर होता है। अहिंसक जहाँ सदैव निर्भय, तनाव-मुक्त, प्रसन्न रहता है एवं सजग रहता है, वहीं कायर सदैव भयभीत, तनावग्रस्त, असजग एवं दुःखी रहता है। अन्याय सहने वाले अन्याय करने वालों से ज्यादा गुनहगार होते हैं। अत्याचार का प्रतिकार करना हमारा कर्त्तव्य है। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष पशुओं पर अत्याचार एवं हिंसा करने वाले एवं करवाने में सहयोग देने वालों का समर्थन करने वाले सभी हिंसा हेतु जिम्मेदार हैं।

अहिंसा में विश्वास रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि अपने समय, श्रम, साधनों एवं प्राप्त अधिकारों का अधिकाधिक उपयोग हिंसा को रोकने में लगावें। मौत से लड़ा जा सकता है, भागा नहीं जा सकता। समस्याओं का समाधान किया जा सकता है, उन्हें टाला नहीं जा सकता। कठिनाइयों का सामना किया जा सकता है, उनकों रोका नहीं जा सकता। फिर महावीर, बुद्ध और महात्मा गांधी की इस पावन पुण्य-भूमि पर ऐसी कौन-सी परिस्थितियां एवं कारण हैं कि हिंसा का विरोध करने वाले उसको रोकने में अपने आपको असहाय अनुभव कर रहे हैं। उनकी वाणी, चिंतन एवं प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं ला पा रहे हैं। आज हिंसा अहिंसा पर हावी हो रही है। करुणा, दया, क्रूरता, निर्दयता के सामने पराजित हो रही है। मानवीय गुणों पर दानवीय प्रवृत्तियां अधिकार जमा रही हैं। अन्ततः ऐसा न कभी हुआ है और न कभी हो सकता है। कहीं मूल में भूल तो नहीं हो रही है। जब तक अंगारे के ऊपर राख का आवरण है उसकी शक्ति का पता नहीं चलता। एक चिंगारी लाखों टन घास के ढेर को राख करने की क्षमता रखती है। जो समस्याएं हमें बहुत जटिल एवं डरावनी लगती हैं उनका समाधान मामूली एवं सरल होता है। आवश्यकता है अहिंसा में विश्वास रखने वाले सक्रिय, सजग, निःस्वार्थी चिंतनशील कार्यकर्ताओं, विद्वानों, लेखकों, चिंतकों, न्यायविदों, प्रशासनिक अधिकारियों, राजनेताओं एवं जन-प्रतिनिधियों को संगठित कर उनमें आत्मविश्वास जगाकर इस महत्त्वपूर्ण कार्य हेतु उनकी क्षमताओं का उपयोग लेने की। उनमें उदासीनता, तटस्थता, उपेक्षावृत्ति, असजगता को दूर कर कर्त्तव्यों का बोध कराया जाए। जब सिंह जागृत हो जाता है तो उसके साथ खिलवाड़ करने का किसी को साहस नहीं होता। हम भी अपना खोया हुआ सिंहत्व जगायें तो अन्याय, अत्याचार की दानवीय प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देने वालों को निश्चित रूप से परास्त होना पड़ेगा।

चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर,
जोधपुर – 342003 (राजस्थान)

कैसे टिके संयुक्त परिवार ?

डॉ. पी.सी. जैन

अकेलेपन का दंश भुगतते हुए भी परस्पर त्याग की भावनाएं तिरोहित होती दिखती है। परिवार में कोई कितना भी त्याग कर लेवे तो भी अपना समय आने पर दूसरा त्याग नहीं करना चाहता, फिर कैसे संयुक्त परिवार टिक सकते हैं? एक दूसरे के सुख-दुःख में सम्मिलित होने के लिए समय एवं धन दोनों का त्याग करना पड़ता है पर इस अर्थ युग में इन दोनों का त्याग करना न तो परिवार में सिखाया जाता न ही विद्यालयों में। जब व्यक्ति को अपने लिये ही समय नहीं है तो वह परिवार में सिखाया जाता न ही विद्यालयों में। जब व्यक्ति को अपने लिये ही समय नहीं है तो वह परिवार के अन्य सदस्यों को समय कैसे दे सकेगा?

ऐसे त्याग करने वाले व्यक्ति के मन में भी त्याग न करने 'भाईपन' नहीं 'बाजारपन' हावी होने लगा है। हर परिवार में अब हर काम का जब 'बाजारभाव' होने लगा है जिसमें सभी बराबरी नहीं कर सकते है तभी तड़क रहे हैं संयुक्त परिवार।

अब अगर संयुक्त परिवार जीवित रखने हैं तो सभी को इस प्रेम भावना को जीवित रखना होगा अपने बच्चों में भी यही भावना विकसित करनी होगी। दूर रहकर भी साथ रहने का भाव बनाये रखना होगा और एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी बने यह भाव परिवार में सभी में बनाये रखना होगा। तभी जीवित रह पायेंगे संयुक्त परिवार क्योंकि रिश्ते 'बाजारभाव' आधारित नहीं 'प्रेमभाव' आधारित होते हैं।

3, अरविन्द नगर, सुंदरवास

शर्मशार हुए रिश्ते

विजयराज सुराणा

पिछले कुछ वर्षों से क्रोध, हिंसा, आवेश व लालच, लोभ आदि इस कदर बढ़ते जा रहे हैं। जो मानवीय एवं पारिवारिक रिश्तों की भी अनदेखी करते हुए, ऐसा कुछ कर जाते हैं कि मानवता शर्मशार हो जाती है। 18 जनवरी 2010 के नवभारत टाइम्स में ''फिर हुआ रिश्तों का खून'' एवं ''छोटे भाई ने ही मार डाला बड़े को'' शीर्षक से तीन ऐसी ही घटनाओं का वर्णन दिया है, जिसे पढ़कर ही हम सहम जाते हैं।

पहली घटना में रामेश्वर पार्क स्थित परवीन का अपने ही मुहल्ले के ताहिर से प्रेम प्रसंग शुरू हो गया। जो धीरे-धीरे काफी बढ़ गया अंततः आपस में शादी करना तय कर लिया। जब बात घर वालों के पास पहुँची तो दोनों ही परिवार इकट्ठा हो गये। काफी कोशिश के बाद भी जब स्वीकृति नहीं मिली तो दोनों ही चुपचाप घर से चले गये एवं कोर्ट में शादी कर ली। लड़का कार्यरत था एवं आमदनी भी थी, अतः दोनों ही परिवार से अलग रहने लगे एवं एक बच्चा भी हो गया। लड़की वालों ने पुलिस में लड़के के विरुद्ध, लड़की को भगाने की शिकायत दर्ज करवा दी।

दो साल बीत जाने के बाद उन्होंने सोचा कि परिवार वालों का गुस्सा अब तो ठंडा हो गया होगा, दोनों ही घर लौटे। पिता ने घर की छत से दूर से ही लड़की को आते देख लिया एवं घर में घुसते ही लोहे की मोटी रोड़ से लड़की के सिर पर वार कर दिया। इससे लड़की की मौके पर ही मौत हो गयी। अब उसका पिता हत्या के जुर्म में पुलिस हिरासत में है।

फिर हुआ रिश्तों का खून

प्रेम विवाह करने पर पिता ने की बेटी की हत्या

प्रॉपर्टी के विवाद में बेटे ने मां की जान ली

आखिर क्या हासिल हुआ? नाराजगी एवं गुस्से की भी एक सीमा होती है। दोनों वयस्क थे, अपनी खुशी से जब शादी करके, अपनी गृहस्थी बसा ही ली तो परिवार वालों को उसकी मान्यता दे देना ही उचित था। यदि लड़की मामूली चोट खाकर बच जाती तो शायद अपने बाप को माफ कर सकती थी, लेकिन वो दामाद उसे कैसे माफ करेगा। क्योंकि उसे भी काफी चोट आ गयी थी। आवेश में हत्या के इस जुर्म में उसे तो फांसी या आजीवन कारावास की सजा भोगनी ही पड़ेगी।

दूसरी घटना में थाना दौराला के पल्लवपुरम निवासी एक पिता ने आपसी पारिवारिक अनबन एवं बेटे के अनुचित व्यवहार से तंग आकर अपने बेटे भानु को अलग कर दिया था। जो विवाहित था व शास्त्रीनगर में रहने लगा था। कुछ समय बाद पिता की मृत्यु हो गयी थी, एवं मकान अपने छोटे अविवाहित बेटे भरत को दे गया था, जो अपनी माँ के साथ रह रहा था। पिता की मृत्यु के बाद एक रात भानु अपने दो दोस्तों के साथ अपने छोटे भाई के घर पर आया एवं अपना हिस्सा मांगने हेतु वाद-विवाद करने लगा। वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े में बदल गया और मारपीट होने लगी। इस स्थिति में जब माँ ने बीच-बचाव करने की कोशिश की तो बड़े बेटे भानु ने अपने दोस्तों की मदद से अपनी माँ को ही मार दिया। भाई को भी काफी घायल कर दिया।

अब मकान में तो हिस्सा मिलने वाला है ही नहीं, बल्कि उसे दोस्तों के साथ मिलेगी जेल में कैदी की हिस्सेदारी या उससे भी बड़ी सजा। लालच व लोभ के आवेश में क्या हासिल हुआ? अपनी ही जन्म देने वाली माँ को अपने हाथों हत्या की एवं स्वयं की जिन्दगी भी बरबाद कर ली। पत्नी व बच्चों की क्या स्थिति होगी, एक भयंकर कल्पना की जा सकती है।

तीसरी घटना है गाजियाबाद की है। जिसमें एक किशोर ने अपने बड़े भाई की बेरहमी से हत्या कर दी और दूसरे भाई के साथ मिलकर लाश को ठिकाने लगा दिया। गाजियाबाद के घंटाघर कोतवाली कैंपस में फायर स्टेशन ऑफिसर (एमएसओ) ए.पी. सिंह के सरकारी फ्लैट में हुई वारदात का राज पुलिस ने खोलने का दावा किया है। पुलिस ने ए.पी. सिंह के दूसरे बेटे किशोर (बदला हुआ नाम) के बयान के

आधार पर अब दावा किया है कि बड़ा बेटा हेमंत हत्या का आरोपी नहीं है, बल्कि उसकी हत्या हुई है। पुलिस का दावा है कि किशोर और उसके छोटे भाई ने हत्या के बाद मिलकर शव हिंडन नहर में फेंक दिया। पुलिस ने खून से सने कपड़े और शव को ठिकाने लगाने में इस्तेमाल की गयी कार बरामद कर ली है।

गौरतलब है कि फ्लैट में खून के धब्बे मिलने के बाद मर्डर मिस्ट्री की शुरुआत हुई थी। तब किशोर ने पुलिस को बताया था कि अपने दोस्त को परेशान करने वाले एक लड़के लक्की की हेमंत ने हत्या की और लाश को नदी में बहा दिया। अगले दिन पुलिस ने बताया कि बारहवीं कक्षा में पढ़ने वाले किशोर ने बड़े भाई की हत्या की साजिश लगभग 10 दिन पहले ही रच ली थी। पुलिस के अनुसार उसने 300 रुपये में गंडासा भी खरीद लिया था। किशोर ने स्वीकार किया कि उसने अपने बड़े भाई की गंडासा मारकर हत्या की थी। हत्या के बाद वह छोटे भाई को भी अपने पिता के वशुंधरा स्थित घर से बुला लाया था। दोनों भाइयों ने शव को कंबल में लपेटा और हिंडन नदी में फेंक दिया। घर लौटने पर उन्होंने फ्लैट में फैले खून को साफ किया और खून से सने अपने कपड़े गांधीनगर के एक ट्यूबवेल पर फैंक दिये। ये कपड़े पुलिस ने बरामद कर लिए हैं।

एसपी सिटी ने बताया कि हेमंत लापता था और उसका फोन भी बंद था, इसलिए पुलिस ने किशोर की कहानी को सच मान लिया। देर रात जब पुलिस ने हेमंत के मोबाइल कॉल विवरण के आधार पर उसके दोस्तों से पूछताछ की तो किशोर की कहानी झूठ निकली। दिल्ली के किसी युवक के फ्लैट में आने की पुष्टि नहीं हुई। इसके बाद पुलिस ने किशोर से दोबारा पूछताछ की।

मर्डर में इस्तेमाल कार और खून से सने कपड़े बरामद

छोटे भाई ने ही मार डाला बड़े को

वरिष्ठ संवाददाता ॥ गाजियाबाद

गाजियाबाद की श्रीधरपुर कोतवाली कैंपस में जमर स्टेशन ऑफिसर (एसएसओ) ए.पी. सिंह के सरकारी फ्लैट में हुई वारदात का राज पुलिस ने खोलने का दावा किया है। इसके साथ ही कहानी पूरी तरह पलट गई है। पुलिस ने ए.पी. सिंह के दूसरे बेटे किशोर (बदला हुआ नाम) के बयान के आधार पर अब दावा किया है कि बड़ा बेटा हेमंत हत्या आरोपी नहीं है, बल्कि उसकी ही हत्या हुई है। पुलिस का दावा है कि किशोर और उसके छोटे भाई ने हत्या के बाद मिलकर शव हिंडन नहर में फेंक दिया। पुलिस ने खून से सने कपड़े और शव को ठिकाने लगाने में इस्तेमाल की गई कार बरामद कर ली है। एसपी सिटी राहुल यादवेंदु ने बताया कि पीएसी के 14 गोताखोर नहर की तलाश में लगातार जुटे हैं।

गौरतलब है कि मंगलवार को फ्लैट में खून के धब्बे मिलने के बाद मर्डर मिस्ट्री की शुरुआत हुई थी। तब किशोर ने पुलिस को बताया था कि अपनी दोस्त को परेशान करने वाले एक लड़के लक्की की हेमंत ने हत्या की और लाश को बहा दिया।

बुधवार को पुलिस ने बताया कि बारहवीं में पढ़ने वाले किशोर ने बड़े भाई की हत्या की साजिश लगभग 10 दिन पहले ही रच ली थी। पुलिस के अनुसार उसने 300 रुपये में गंडासा भी खरीद लिया था। पुलिस का दावा है कि किशोर ने स्वीकार किया कि उसने अपने बड़े भाई की गंडासा मारकर हत्या की थी। हत्या के बाद वह छोटे भाई को भी अपने पिता के वसुंधरा स्थित घर से बुला लाया था। दोनों भाइयों ने शव को कंबल में लपेटा और हिंडन नदी में फेंक आए। घर लौटने पर उन्होंने फ्लैट में फैले खून को साफ किया और खून से सने अपने कपड़े गांधीनगर के एक ट्यूबवेल पर फेंक आए। ये कपड़े पुलिस ने बरामद कर लिए हैं।

एसपी सिटी ने बताया कि हेमंत लापता था और उसका फोन भी स्विच ऑफ था, इसलिए पुलिस ने किशोर की कहानी को सच मान लिया। मंगलवार देर रात जब पुलिस ने हेमंत की कॉल डिटेल्स के आधार पर उसके दोस्तों से पूछताछ की तो किशोर की कहानी झूठ निकली। दिल्ली के किसी युवक के एफएसओ के फ्लैट में आने की पुष्टि नहीं हुई। इसके बाद पुलिस ने किशोर से दोबारा पूछताछ की।

पुलिस को किशोर ने बताया कि पिता उसके भाई हेमंत को ज्यादा प्यार करते थे, जबकि उसे और सबसे छोटे बेटे को मारते-पीटते थे। हेमंत भी उन्हें मारता था। पिता ने बाइक के लिए किशोर की मांग अनदेखी कर दी और बड़े बेटे हेमंत को पल्सर बाइक दिलवा दी। इसके बाद उसने हत्या की साजिश रची।

किशोर ने बड़े भाई की बेरहमी से हत्या कर दी

दूसरे भाई के साथ मिलकर लाश को ठिकाने लगाया

ये तीनों घटनाएं क्रोध एवं आवेश की पुष्टि करती हैं। समाचार पत्रों में आए दिन इस तरह की पाँच-सात घटनाएं पढ़ने को मिल जाती हैं एवं पूरे देश में रोजाना ऐसी अनेकों घटनाएं होती रहती हैं। आवेश, आवेग, लोभ, क्रोध व हिंसक प्रवृत्ति दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। जब तक इन पर कोई आध्यात्मिक या नैतिक नियंत्रण नहीं होगा एवं उसे नहीं अपनाया जायेगा ये घटनाएं बढ़ती ही रहेंगी। इन्हीं प्रवृत्तियों को रोकने हेतु आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत का पहला ही नियम है ''मैं किसी भी चलते फिरते निरपराध प्राणी की हत्या नहीं करूँगा।'' अणुव्रत आंदोलन का प्रमुख घोष है ''संयमः खलु जीवनम्'' अर्थात् संयम ही जीवन है।

देश में बढ़ती इस प्रकार अनैतिक की घटनाओं को रोकने में अणुव्रत आंदोलन बहुत प्रासंगिक है, उसे समझना, समझाना व फैलाना हम सबका पुनीत कर्त्तव्य है। अणुव्रत के प्रमुख घोष ''संयम ही जीवन है'' को अपनाने में ही इन समस्याओं का समाधान है।

9/62 बगीची गली,
विश्वासनगर, दिल्ली–110032

राजसमंद में महिला कार्यशाला

राजसमंद, 1 फरवरी। महिला मंडल राजसमंद के तत्वावधान एवं साध्वी विद्यावती 'द्वितीय' के सान्निध्य में द्विदिवसीय मेवाड़ स्तरीय परिवार सशक्तिकरण प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला में राजसमंद की विधायक किरण महेश्वरी, अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष कनक बरमेचा एवं सहमंत्री मंजु बैद प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

साध्वी विद्यावती 'द्वितीय' ने संभागियों को संबोधित करते हुए कहा परिवार में सुख, शांति से जीने के लिए सहिष्णुता, विनम्रता एवं वात्सल्य की भावना के बीज बोना बहुत आवश्यक है। परिवार सशक्तिकरण में महिलाओं की अहम भूमिका रहती है। महिलाओं के रचनात्मक एवं सृजनात्मक विचारों से परिवार में संस्कार पल्लवित होते हैं। पारिवारिक समन्वय आज की महत्ती आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी ने कहा परिवार को सशक्त और सद्संस्कारी बनाना युग की आवाज है और यह कार्य महिला ही कर सकती है। वह माँ, पत्नी, बहन, भाभी, सास, बहू, देवरानी, जेठाणी के रूप में परिवार को संस्कारित एवं समन्वयवादी बनाने का प्रयास करें, तो अनेक समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। उन्होंने महिला संभागियों को कन्या भ्रूण हत्या रोकने का संकल्प दिलाया।

कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष कनक बरमेचा ने कहा महिलाएं आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के अवदानों को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका का निर्वहन करें। आज आवश्यकता परिवार सशक्तिकरण की है। यदि परिवार सशक्त होगा, तो समाज एवं राष्ट्र स्वयं सशक्त हो सकेगा।

महिला मंडल राजसमंद की अध्यक्ष मंजु बड़ोला ने समागत अतिथियों एवं महिला प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा बोधि भूमि राजसमंद में मेवाड़ स्तरीय महिला प्रशिक्षण कार्यशाला में आप सभी का स्वागत करते हुए अत्यंत हर्ष है। वर्तमान में परिवार एवं समाज की जो स्थितियां बन गयी हैं उन्हें सुलझाने में महिलाओं को अपने दायित्व बोध का अनुभव करना होगा।

कार्यशाला के प्रायोजक कान्तिलाल परमार, मुख्य अतिथि किरण माहेश्वरी, अध्यक्ष कनक बरमेचा, विशिष्ट अतिथि मंजु बैद का एवं अन्य अतिथियों का शॉल एवं साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। कार्यशाला के विभिन्न सत्रों का संयोजन मंजु बड़ोला, मंजू दक, सीमा कावड़िया, रितु धोका, निर्मला कोठारी, नीना कावड़िया, रितु दक ने किया। भिक्षु बोधि स्थल के अध्यक्ष सुरेश गणपत धर्मावत, पूर्व अध्यक्ष सुरेश कावड़िया, मंत्री मांगीलाल मादरेचा, विजेन्द्र मादरेचा, पारसमल परमार, अशोक डूंगरवाल इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

महादेवलाल गंगादेवी सरावगी फाउंडेशन द्वारा पुरस्कार राशि में अभिवृद्धि

कोलकाता। महादेवलाल गंगादेवी सरावगी फाउंडेशन द्वारा प्रदत्त आचार्य तुलसी अनेकांत दर्शन एवं आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान, महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषा पुरस्कार एवं गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार के अंतर्गत दी जाने वाली सम्मान राशि वर्ष 2010 से बढ़ाई गयी है। उक्त पुरस्कार प्रतिवर्ष उन मनीषियों को समर्पित किये जाते हैं, जिनका अहिंसा दर्शन, अनेकांत दर्शन एवं जैन दर्शन साहित्य के निर्माण एवं प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

फाउंडेशन के ट्रस्टी शासन सेवी गोविंदलाल सरावगी के अनुसार आचार्य तुलसी अनेकांत दर्शन तथा आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान में प्रतिवर्ष अब एक लाख 50 हजार रुपये की सम्मान राशि भेंट की जायेगी। इसी तरह से महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषा पुरस्कार तथा गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार के अंतर्गत प्रतिवर्ष एक लाख रुपये की सम्मान राशि भेंट की जायेगी। उक्त चारों पुरस्कार जैन विश्व भारती लाडनूं की सहभागिता से महादेवलाल गंगादेवी सरावगी फाउंडेशन प्रतिवर्ष प्रदान करता है।

अणुव्रत आंदोलन के 62 वें स्थापना दिवस पर अणुव्रत पाक्षिक का मार्च 2010 माह का संयुक्तांक **भ्रष्टाचार-शिष्टाचार विशेषांक** के रूप में आगामी 15 मार्च को प्रकाशित हो रहा है। यह अंक लगभग 140 पृष्ठों से युक्त रहेगा। अतः अणुव्रत पाक्षिक का 1-15 मार्च 2010 का नियमित अंक प्रकाशित नहीं हो पायेगा।

सर्व अणुव्रत समितियों से अनुरोध है कि मार्च 2010 माह के प्रथम सप्ताह में भ्रष्टाचार विरोध दिवस की स्थानीय स्तर पर आयोजना कर भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज बुलंद करें। इस दिन रैली, धरना, संगोष्ठी, सम्मेलन इत्यादि का विशेष रूप से आयोजन करें।

महामंत्री, *अणुव्रत महासमिति*

www.terapanthinfo.com

पाठकों के स्वर

◆ ''अणुव्रत'' पाक्षिक का 16-31 जनवरी 2010 का जो अंक आया है वह अभिनंदन के योग्य है। सभी विज्ञ व्यक्ति चिंतित हैं कि देश की स्वतंत्रता के बाद देश के कर्णधारों ने देश को जिस तरह चलाया है, उससे स्वतंत्रता नहीं तो उसके अनेक अनिवार्य अवयव संकट में पड़ गये हैं। यही नहीं, जो भारतीयता भारत में हजार सालों के आक्रमणों और आधिपत्यों के उपरांत भी विखंडित नहीं हुई, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जिस तरह भारतवासियों में भारत पर अभिमान बना रहा, और भारत का सम्मान संसार में होता रहा, वह सब विलोपित हुआ जा रहा है। सरकारें जिन दुर्बलताओं और दुष्टताओं को दूर करने के लिए होती हैं, उन्हीं का अतिरंजन शासनकर्ताओं में बढ़ रहा है। यह अंक इसकी ओर इंगित, विवेचन तथा इससे अभिमुक्ति के उपाय, आदर्श और आह्वान लेकर आया है।

स्वरूप में सुंदर और सामग्री में ''अणुव्रत'' उन आवश्यकताओं के अनुरूप रहता है जो इस समय भारतीय पत्रकारिता के लिए उचित हैं।

मेरी परिपूर्ण सराहना और हार्दिक शुभकामना स्वीकार करें। आपकी शक्तियां आने वाली सभी चुनौतियों के सामने के लिए समर्थ बनी रहें, यह मेरी कामना और प्रभु से प्रार्थना है।

राजेन्द्र शंकर भट्ट, जयपुर (राजस्थान)

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक दिसंबर 2009 का अंक पढ़ने को मिला। बहुत ही पीड़ा और दर्द हुआ। ''तार-तार हुआ लोकतंत्र'', विधायकों द्वारा लोकतंत्र के साथ खिलवाड़ राष्ट्र के लिए शर्म की बात है। ऐसे विधायकों पर कार्यवाही होनी चाहिए। जबकि हमारे देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी होते हुए भी ऊंचे दर्जे के नागरिक ही हिन्दी की दुर्गति या अपमान करें यह चिंतन का विषय है। संपादकीय आलेख पैनी कलम से लिखा गया है कि लोकतंत्र की अक्षुण्णता के लिए आवश्यक है कि धनबल, बाहुबल, जातिबल, भाषा बल, धार्मिक बल, क्षेत्र बल इत्यादि को खुले रूप से नकारा जाए। तथा जो भी ताकतें देश के संविधान की मर्यादा पर हमला करते हैं। ऐसे तथाकथित बाहुबलियों को धूल चटाई जाए। राष्ट्र की हिफाजत व भारत के भविष्य के लिए बहुत जरूरी है। दिशा-दर्शन में आचार्य तुलसी के भाव महिलाएं युग को सही दिशा दें। जिससे भारत का 50 प्रतिशत भाग पुरुष के समकक्ष कंधे से कंधा मिलाकर अतोःदीपोः भवः के माध्यम से आगे बढ़कर प्रगति के शिखर तक पहुंच सके।

भेरूलाल नामा, बालोतरा

'अणुव्रती बनाओ अभियान'

◆ अणुव्रत आंदोलन सन् 1949 में शुरू हुआ, आज सन् 2009! 6 दशक का सफर पूर्ण हो चुका है। कोई भी आंदोलन तात्कालिक उद्देश्यों के लिए होता है। उद्देश्य प्राप्ति के साथ ही आंदोलन भी संपूर्ण हो जाता है, या कुछ समय बाद खत्म हो जाता है। आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित यह आंदोलन इतना लंबा सफर अनेक उतार-चढ़ाव के साथ अपनी मंथर गति से आज भी जनमानस को उद्वेलित करता है लोग जुड़ते-बिछुड़ते यह कारवां चल रहा है। यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शाश्वत मूल्यों को लेकर जो आंदोलन चलता है वह सर्वव्यापी, सर्वकालीन, भूत-वर्तमान, भविष्य में उसकी उपयोगिता सिद्ध होती है। गरीब की झोंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक इसकी गूंज है। आम से खास तक इससे सहमत है। यह तो स्पष्ट है अणुव्रत अपने उद्देश्य व लक्ष्य के प्रति सुचिंतित, सुविचारित सर्वमान्य, सबके लिए सुलभ आचार संहिता है। अणुव्रत का सुनहरा इतिहास उज्जवल भविष्य वर्तमान में अणुव्रत की समीक्षा चाहता है। इस दिव्य आदर्श आचार संहिता को जनमानस अपने दैनिक जीवन, कार्यों में किस तरह अपनायें ऐसा हम क्या करें, हमसे क्या अपेक्षा है। अणुव्रत से हमें जो मिलना चाहिए क्या हमें मिल रहा है। हम उसके उद्देश्यों व लक्ष्यों को प्राप्त कर रहे हैं। उसका मूल्यांकन करने का मापदंड व प्रस्तुतिकरण हम कर पा रहे हैं? समाज में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है? ऐसे कुछ सवाल हमें अपने आप से करने होंगे। जवाब भी हमें स्वयं खोजना होगा।

अणुव्रत का प्रस्तुतिकरण कितना प्रभावी है। प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति कैसा है? अणुव्रत अपनाने में आने वाली कठिनाइयों का समाधान हम दे पा रहे हैं? अणुव्रत साधना एवं प्रयोग का रास्ता हमने बताया है। अणुव्रत के लिए हमारे पास कितना समय व संसाधन हैं।

समस्या और समाधान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आवश्यकता है समग्रता से देखने समझने की। कुछ बिन्दु, आप अपने उत्तर खोज सकें प्रस्तुत करना चाहता हूं

- आज तक जो नहीं हुआ वह अब हो सकता है यदि उसके पीछे निष्ठा और तीव्र प्रयत्न हों।
- अच्छा काम स्वयं से शुरू करें, बाद में दूसरों को कहें।
- सही काम सही ढंग से किया जाए तो परिणाम संभव है।
- बुराइयां इसलिए नहीं मिटती कि बुरे आदमी ज्यादा बोलते हैं। बल्कि इसलिए कि भले आदमी चुप रहते हैं।
- सफल व्यक्ति बड़े कामों से महान नहीं बनता बल्कि छोटे कामों को महान ढंग से करता है।
- सिद्धांत कितने ही अच्छे क्यों न हों पर जीए बिना सफल परिणाम नहीं मिल सकता।

अणुव्रत कार्यकर्ताओं द्वारा अनेक स्थानों पर अनेक कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं, परन्तु उनका एकीकृत परिणाम हम हासिल नहीं कर पा रहे हैं। शक्ति व संसाधन भी लग रहा है। क्या उतना प्रभावी लक्ष्य प्राप्त हो रहा है? निश्चित रूप से कहीं तो कमी है। हमारे सघन प्रयास, गहन संकल्प, निरंतरता आदि में कहीं भी कमजोरी हो सकती है। हमें अपने संगठन, हमारे द्वारा किये जा रहे कार्यों की पुनः समीक्षा करनी होगी। हम स्वयं बदलें औरों को प्रेरित करें। हमारे आस-पास अनेक लोग अणुव्रत की जीवन शैली से जीवनयापन करने वाले मिल जायेंगे। उन्हें अणुव्रत से जोड़ने का कार्य आरंभ करें। देखते-देखते आपका कारवां चल पड़ेगा। आज से अभी से जुट जाएं। ''अणुव्रती बनाओ अभियान'' शुरू करें। अणुव्रत समाज की स्थापना के इस महायज्ञ में अपनी आहूति दें।

सम्पत सामसुखा, (भीलवाड़ा-राजस्थान)

बढ़ें संयम पथ पर

Golchha Organisation
INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE

लोकमान्य गोल्छा
अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)
फोन नं. : 4250001/4249939 (D)
फैक्स : 00977-1-4249723

जीवन एक यात्रा है : आचार्य महाप्रज्ञ

श्रीडूंगरगढ़, 23 जनवरी। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा जीवन एक यात्रा है। स्थूल जगत में यात्रा कभी-कभी करते हैं, पर सूक्ष्म जगत में देखें तो हमारी यात्रा निरंतर चल रही है। श्वास, रक्त और हृदय प्रत्येक क्षण गति करते हैं। यह यात्रा प्राकृतिक है। जब जान-बूझकर यात्रा की जाती है तो उसका कोई लक्ष्य होता है, उद्देश्य होता है। हमारी भी यात्राएं होती हैं। पर हम यात्रा क्यों करें यह प्रश्न हो सकता है। इसका समाधान महावीर ने बहुत सुन्दर दिया है "तिन्नाणं तारयाणं" अर्थात् अपना कल्याण करो और साथ में दूसरों का भी कल्याण करो का सूत्र दिया। सबको इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि केवल दूसरों का ही कल्याण करेंगे तो यह धोखा होगा। खुद में कुछ नहीं है और दूसरों को देने में निकल जायेंगे तो क्या मिलेगा? वहां सिर्फ शून्यता ही रहेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा सबसे महत्वपूर्ण बात है स्वयं में अहिंसा, मैत्री, करुणा और व्रतों की साधना हो। जब ऐसी साधना होगी तब लोग अपने आप चले आयेंगे शांति पाने के लिए। साधना से जो प्राप्त किया है उसको लोगों में बांटना चाहिए। इस बात को नजरअंदाज करने पर कमी रह जाती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने आगे कहा हिन्दुस्तान धार्मिक देश है। यहां भ्रष्टाचार का नाम भी नहीं होना चाहिए। परन्तु आज भ्रष्टाचार की सूची में अग्रिम पंक्ति के देशों में भारत का नाम आता है। देश का बीमारी से कायाकल्प हो गया है। जहां दूध कभी बिकता नहीं था वहीं आज नकली दूध बिकने लग गया है। जहां इतनी अप्रामाणिकता, अनैतिकता रहती है उस समाज, ग्राम, नगर, देश को धार्मिक कहने में क्या संकोच नही होता? आचार्य महाप्रज्ञ ने धर्म के तीन रूप बताते हुए कहा नैतिकता, उपासना और अध्यात्म यह धर्म के तीन अंग है। वर्तमान में धर्म की जो स्थिति है वह पंख विहीन तड़पते हुए पक्षी की तरह है। आज केवल उपासना, पूजा-पाठ को ही धर्म मान लिया गया है। नैतिकता और अध्यात्म इन दोनों पंखों को काट दिया है। मुझे नैतिकताविहिन धर्म स्वीकार नही है। जो धर्म इस लोक को नहीं सुधार सकता वह इहलोक को क्या सुधारेगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा दुरात्मा, सदात्मा, महात्मा ये तीन तरह के व्यक्ति होते हैं। जिनके मन में जो होता है वही वाणी में होता है और वही आचरण में होता है वह महात्मा होते हैं। और दुरात्मा व्यक्ति की कथनी और करनी में अन्तर होता है। विद्या को विवाद बढ़ाने में लगाने वाला दुरात्मा और उसी विद्या से संवाद स्थापित करने वाला महात्मा होता है। इस मौके पर साध्वी विनम्रप्रज्ञा ने कविता प्रस्तुत की। कलकत्ता हाईकोर्ट के एडवोकेट एल.सी. बिहानी ने अणुव्रत को विज्ञान करार देते हुए विश्वव्यापी बनाना जरूरी बताया। भोजराज बैद ने बिहानी का परिचय दिया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के संरक्षक बनेचंद मालू एवं मुख्य परामर्शक कन्हैयालाल छाजेड़ ने साहित्य द्वारा बिहानी का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन पन्नालाल पुगलिया ने किया।

अणुव्रत पुरस्कार

नैतिकता, अहिंसा एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना और समाज के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रतिवर्ष दिया जाने वाला अणुव्रत पुरस्कार दिल्ली की मुख्यमंत्री के पूर्व मुख्य सचिव एस. रघुनाथन को दिया जायेगा। पुरस्कार स्वरूप जय तुलसी फांउडेशन के द्वारा राशि एक लाख 51 हजार रूपये, प्रशस्ति-पत्र एवं साहित्य आदि प्रदान किये जाते हैं। अणुव्रत पुरस्कार के लिए एस.रघुनाथन के चयन की घोषणा करते हुए विकास परिषद् के संयोजक लालचंद सिंघी ने बताया कि एस. रघुनाथन ने अणुव्रत के क्षेत्र में बहुत व्यापक काम किया है। एस. रघुनाथन अणुव्रत से जुड़ी हुई हैं और जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं की कुलपति रह चुकी हैं।

विवेक धर्म है

श्रीडूंगरगढ़, 24 जनवरी। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि बुद्धि और विवेक दोनों शब्द बहुत महत्वपूर्ण हैं। आज बौद्धिक विकास बहुत हो रहा है। पर बुद्धि से बड़ा विवेक है। हम प्रयत्न करें कि विवेक चेतना का विकास हो। विवेक बहुत बड़ी शक्ति है, धर्म है। आचार्यश्री कस्बे के सभा भवन में जनमेदिनी को संबोधित करते हुए बोल रहे थे।

उन्होंने आगे कहा विवेक से ही हम धर्म की आराधना करते हैं और सत्य की साधना करते हैं। आज आई क्यू पर ध्यान दिया जाता है, पर विवेक का मानदण्ड नहीं किया जाता। विवेक से हम अपनी वृत्तियों पर नियंत्रण स्थापित कर सकते हैं। जिसकी विवेक चेतना जागृत नही है, वह अपनी कमियों को दूर नहीं कर सकता। आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी विज्डम वर्ल्ड की चर्चा करते हुए कहा कि प्रज्ञा, प्रतिभा, धृति और विवेक चेतना के जागरण का प्रशिक्षण विज्डम् वर्ल्ड में दिया जायेगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा सराग और वीतराग दो तरह के मुनष्य होते हैं। मोह-माया से ग्रस्त सराग होता है। जो राग-द्वेष से छुटकारा पा लेता है वह वीतराग बन जाता है। वीतराग बनने की साधना साधु करते हैं। साधु अभय दाता पुरुष होते हैं। जो शांत होता है वह संत होता है। साधु न किसी को भयभीत करते हैं और न ही भयभीत होते हैं। संत वह होता है जिनका क्रोध एवं अहंकार मर जाता है।

आचार्य महाप्रज्ञ का दीक्षा दिवस

श्रीडूंगरगढ़, 25 जनवरी। सभा भवन सभागार में उल्लास के साथ आचार्य महाप्रज्ञ का 80वां दीक्षा दिवस युवा-दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की दीक्षा 79 वर्ष पूर्व सरदारशहर में आचार्य कालू गणी के कर-कमलों से हुई। कालूगणी ने मुनि नथमल को मुनि तुलसी के पास नियोजन के लिये रखा। मुनि तुलसी जागरूक प्रशिक्षक थे। उनका निर्माण किया

शिष्टाचार बन रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाइये

अणुव्रत आंदोलन

संगठनों के बिखराव का कारण है आग्रह

और आज आचार्य महाप्रज्ञ महान् व्यक्तित्व के रूप में प्रख्यात हैं। संत भगवान के प्रतिनिधि होते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ महान् संत है। आचार्य महाप्रज्ञ धर्मसंघ में सबसे बड़ी उम्र में बनने वाले युवाचार्य एवं आचार्य हैं तथा पहले मुनि हैं जिनका 80वां दीक्षा दिवस मनाया गया हो। आज भी आचार्य महाप्रज्ञ 90वर्ष की अवस्था में ऊर्जावान हैं, कार्य क्षमता से परिपूर्ण हैं। साधना का अपना बल होता है।

उन्होंने कहा श्रीकृष्ण को वह भक्त प्रिय और इष्ट है जो शुचिता सम्पन्न, दक्ष व्यक्ति है, पक्षपात रहित है, चंचलता रहित है, आरंभ का त्यागी व हिंसा से मुक्त है, आकांक्षा से मुक्त है। उत्तराध्ययन व गीता महान् ग्रंथ है जो महत्वपूर्ण दिशा दर्शन करती है। साधना आराधना व भावनात्मक विशुद्धि को उजागर करती है।

इस अवसर पर भीकमचंद, सुशीला पुगलिया, मुनि राजकुमार, मुनि देवेन्द्रकुमार, मुनि प्रशांत कुमार, विजयसिंह बोथरा व अमित मालू ने भी आचार्य महाप्रज्ञ की अभ्यर्थना गीत तथा वक्वव्य के माध्यम से की। प्रारंभ में मुनि दिनेशकुमार ने भी विचार रखे।

श्रीडूंगरगढ़, 16 जनवरी। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टियों, सामाजिक संगठनों और धर्मसंघों में बढ़ते बिखराव का कारण आग्रहवृत्ति को बताते हुए कहा ''मैं जैसा चाहता हूं वैसा हो जाये तो राम राजी हैं।'' इस आग्रहपूर्ण मनोवृति के कारण देश के प्रतिष्ठित संगठनों में दरार पैदा हो रही है और पारस्परिक संबधों में कटुता बढ़ रही है। जो मैं सोचता हूं वही सही है इस चिंतन को बदलने पर ही संगठन को दीर्घजीवी बनाया जा सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ कस्बे के सभा भवन स्थित प्रज्ञा समवसरण में वर्धमान महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर जनसमुदाय को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा संगठन का आधार है मर्यादा और मर्यादा का आधार है विनय। जहां विनय का महोत्सव नहीं मनाया जाता उसे मर्यादा का महोत्सव बनाने का भी अधिकार नहीं है। वर्धमान महोत्सव विनय का महोत्सव है। आचार्य भिक्षु ने मर्यादा का निर्माण किया पर उन पर लिखा संकल्प और विनय पर स्वतंत्र ग्रंथ लिखे। जयाचार्य ने भी विनय के विभिन्न पहलुओं पर अपनी लेखनी चलाई। उस पर अगर गहराई से अन्वेषण किया जा सके तो समाज को नया मोड़ दिया जा सकता है। आचार्य तुलसी ने भी विनय पर बहुत बल दिया है। उन्होंने जैनागम दसवें आलियां सूत्र में आचार, तप, श्रुत और विनय की चर्चा करते हुए कहा कि अनुशासन को सुनना, सम्यक् ग्रहण करना, निर्देश की आराधना करना और अनाग्रह मनोवृत्ति का विकास करना ये चार सूत्र विनय समाधि के हैं। जो इन सूत्रों को आत्मसात कर लेता है वह संगठन हजारों वर्षों तक मर्यादा महोत्सव मनाने का अधिकार पा लेता है। आचार्य तुलसी जैसी विनम्रता व ग्रहणशीलता मैंने अन्यत्र कहीं नहीं देखी।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा वर्धमान महोत्सव के माध्यम से जीवन को वर्धमान बनाने की प्रेरणा लें। यह गौरवशाली इतिहास है। इसकी वर्तमान विशेषताओं को संपोषित करने का प्रयत्न करें।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा हीयमान, अवस्थित और वर्धमान यह तीन स्थितियां है। जो हीयमान होता है वह मूल स्थिति को सुरक्षित नहीं रख पाता है और तल में चला जाता है। जो अवस्थित होता है वह संगठन अपनी मूल स्थिति पर ही कायम रहता है। जो वर्धमान होता है वह निरंतर विकास करता रहता है। धर्मसंघ वर्धमान है, गतिशील है और प्रगति के नये मापदण्डों पर निरंतर आरोहण कर रहा है। वर्तमान युग में भौतिक विकास बहुत हुआ है पर आध्यात्मिक विकास की रफ्तार धीमी होने के कारण अनेक समस्याओं का जन्म हो रहा है।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने वर्तमान पक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वलिखित गीत का संगान किया। शासन गौरव साध्वी राजीमति ने खून पसीना एक कर संघ की सेवा करने का आह्वान करते हुए संघ के विलक्षण अतीत पर प्रकाश डाला। साध्वी सोमलता ने संघर्ष की कहानी अपनी जुबानी पर अतीत को रेखाकिंत किया। साध्वी आरोग्यश्री ने विकास का आधार शुद्ध आचार और शुद्ध व्यवहार को बताया। साध्वी सुव्रता ने अपने विचार रखे। साध्वी समुदाय ने सामूहिक गीत ''वर्धमान महोत्सव पर नव संकल्प सजाएं'' की प्रस्तुति दी। मंगलाचरण स्थानीय महिला मण्डल ने गीत द्वारा किया। संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

चिकित्सा शिविर

जयपुर। दैनिक भास्कर एवं मानव हितार्थ संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में महिला मंडल (शहर) जयपुर द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन 19 दिसंबर 09 से 21 दिसंबर 09 तक परिषद् भवन में किया गया। शिविर में आँख, नाक, कान, गला, खांसी, जुकाम, हड्डी रोग, चर्म, मधुमेह से संबंधित रोगों की जांच एवं सामान्य चिकित्सा करायी गयी। साथ ही विभिन्न प्रकार की जांचें भी करवायी गयीं। रक्तदान के लिए भी सुविधाएं उपलब्ध करवाई गईं। शिविर में 3 दिन की दवाइयां निःशुल्क दी गयी। सेवा के इस जज्बे में मंडल का अनुदान अविस्मरणीय है। महिला मंडल (शहर) द्वारा समय-समय पर आयोजित किये गये शिविरों में हजारों मरीजों ने विभिन्न प्रकार की सेवाओं का लाभ लिया।

जीवन विज्ञान पुस्तकों का वितरण

मंडिया। साध्वी अशोकश्री ठाणा-4 मंडिया से करीब 7 किमी. दूर कोमेरहल्ली विश्व मानवा विद्या संस्थान में पधारीं। वहां महाप्रज्ञ जीवन विज्ञान सभागार में कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थापक स्वामी श्रद्धानंद ने साध्वीवृंद की अगवानी की। इस अवसर पर स्थानीय सभा की ओर से 450 बच्चों को जीवन विज्ञान की पुस्तकें वितरित की गयीं।

विद्यालय की प्राध्यापिका शांता देवी ने साध्वीवृंद एवं विशिष्ट अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। साध्वीश्री ने कहा आज हम इस विद्या संस्थान में आये हैं। यहां करीब 4000 बच्चे अध्ययनरत हैं। इस संस्थान की पूरी सार-संभाल एवं कुशल व्यवस्था स्वामी श्रद्धानंद बड़ी जागरूकता से कर रहे हैं। जीवन विज्ञान शिक्षा के द्वारा बच्चों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास संभव है। स्वामी श्रद्धानंद ने भी जीवन विज्ञान शिक्षा की सराहना की।

इस अवसर पर विनोद भंसाली, साध्वी चिन्मयप्रभा, साध्वी मंजुयशा ने विचार रखे। संयोजन शिक्षक हरीश ने किया।

www.terapanthinfo.com

भीलवाड़ा में अणुव्रत कार्यशाला एवं अणुव्रत व्याख्यानमाला

भीलवाड़ा 10 जनवरी। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के तत्वावधान में मेवाड़ अंचल के अणुव्रती कार्यकर्ताओं की एक दिवसीय कार्यशाला साध्वी शान्ताकुमारी के सान्निध्य में प्रज्ञा भारती, महावीर कॉलोनी में आयोजित की गयी। कार्यशाला अणुव्रत दर्शन तथा संस्था संचालन विषय पर वक्ताओं द्वारा विचार व्यक्त किए गए। इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका, अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा, मनोहर लाल बापना, शुभकरण चौरड़िया, ज्ञानचंद कांठेड़, प्रेमसिंह तलेसरा, विजय सिंह सिंघवी, आचार्य तुलसी सेवा संस्थान के अध्यक्ष मीठालाल गन्ना, सुरेन्द्र कुमार मेहता इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

कार्यशाला में अणुव्रत दर्शन विषय पर बोलते हुए साध्वी शांता कुमारी ने कहा अणुव्रत सम्प्रदाय विहीन धर्म है। यह किसी भी धर्म सम्प्रदाय से जुड़ा हुआ नहीं है। इसलिए सबका है। अणुव्रत की आचार संहिता को सभी धर्मों ने स्वीकार किया है। इसके पीछे कोई मतवाद या विचार का आग्रह नहीं है यह चरित्र विकास का सशक्त माध्यम है। वर्तमान युग भौतिकता का युग है। भौतिकता से संत्रस्त मानव को अणुव्रत ही त्राण दे सकता है।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने कहा अणुव्रत को हजारों लोगों ने अपनाया है, लाखों लोग इसके समर्थक हैं तथा करोड़ों लोगों तक इसकी गूंज गई है। अणुव्रती कार्यकर्ताओं को 100 दिन की 33-सूत्रीय कार्ययोजना पर कार्य करने हेतु आह्वान किया।

अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रत समितियों का संचालन कैसे हो विषय पर विस्तार से समझाया। समितियों के संचालन में आ रही दिक्कतों पर बोलते हुए उन्होंने कहा संगठन को सक्रिय तथा व्यवस्थित संचालन हेतु सशुल्क समिति के सदस्य बनाये, अणुव्रत समितियां निश्चित समय पर चुनाव करायें तथा यह सुनिश्चित करें कि एक व्यक्ति लगातार दो कार्यकाल से ज्यादा अध्यक्ष पद पर न रहे। समितियां अपने आय-व्यय के ब्यौरे को अपनी समिति के सदस्यों के बीच रखें, ताकि कार्य संचालन हेतु समितियों को स्थानीय स्तर पर आर्थिक संसाधान जुटाने में किसी प्रकार की दिक्कत न रहे।

राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा ने कहा संगठन को अणुव्रतमय करने के लिए सबसे पहले ''अणुव्रती बनाओ'' अभियान पर जोर देने की आवश्यकता है तथा अणुव्रत समितियों को स्थानीय स्तर पर ज्यादा से ज्यादा समिति के सदस्य सशुल्क बनाने चाहियें, ताकि अणुव्रत समितियों में कार्यकर्ताओं का अभाव न रहे तथा संगठन मजबूत बन सके। समितियां अणुव्रतियों का तथा समिति के सदस्यों का अलग-अलग रजिस्टर संसाधित करें। समितियों में प्राण का संचार निरंतर बना रहे इस हेतु अणुव्रत महासमिति द्वारा निर्धारित नियमों तथा निर्देशों का पालन हर अणुव्रत समिति को करना चाहिए।

संयोजकीय वक्तव्य में राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के मंत्री मनोहरलाल बापना ने कहा अणुव्रत आचार्य तुलसी की मानवता को बहुत बड़ी देन है। हिंसा के इस युग में अणुव्रत संजीवनी है।

कार्यशाला में अणुव्रत समिति गंगापुर, भीलवाड़ा, आसीन्द, शाहपुरा तथा पुर-भीलवाड़ा ने अपने कार्य प्रगति विवरण प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत से भिक्षु भजन मंडली द्वारा हुआ। साध्वी मधुरयशा ने गीतिका प्रस्तुत की। अतिथियों का स्वागत राजस्थान प्रदेश समिति से सम्पत सामसुखा, आचार्य तुलसी सेवा संस्थान से मिठालाल गन्ना, स्थानीय अणुव्रत समिति से लक्ष्मीलाल गांधी ने किया। संयोजन मनोहरलाल बापना ने किया। धन्यवाद ज्ञापन शुभकरण चौरिड़िया ने किया।

बिखरते परिवार - बढ़ती हिंसा

भीलवाड़ा 10 जनवरी। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति एवं अणुव्रत समिति भीलवाड़ा के संयुक्त तत्वावधान में ''बिखरते परिवार - बढ़ती हिंसा'' विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन प्रज्ञा भारती, महावीर कॉलोनी में साध्वी शांताकुमारी के सान्निध्य में किया गया। इसमें मुख्य वक्ता अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट, मुख्य अतिथि निर्मल एम. रांका, सम्पत सामसुखा ने विचार व्यक्त किये।

साध्वी शांताकुमारी ने कहा व्यक्ति दूसरे के विषय में खूब जानता है परन्तु अपने विषय में नहीं जानता, अपने आपको जानना बहुत जरूरी है। परिवारों में बढ़ती हिंसा का समाधान अणुव्रत हैं आदमी को ऐसा व्यवहार करना चाहिये जो वह अपने लिए दूसरों से चाहता है।

अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा व्यक्ति से समाज बनता है अगर व्यक्ति स्वस्थ है तो समाज स्वस्थ होगा और अगर व्यक्ति की मानसिकता रुग्ण है तो वह रुग्ण समाज का निर्माण करेगा। परिवारों में कई तरह की हिंसा हो रही है। बच्चों, औरतों, बूढ़े, बुजुर्गों तथा नई पीढ़ी में सहिष्णुता का अभाव आ गया है। जिससे परिवारों में बिखराव हो रहा है। परिस्थितिजन्य भी बिखराव हो रहा है। हम पाश्चात्य संस्कृति की बुराइयों की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। हमें अपनी संस्कृति की ओर लौटना होगा। परिवार में समानता का व्यवहार रखना होगा, ताकि परिवार के सदस्यों में कुंठा तथा हीनता के भाव उत्पन्न नहीं हो। आस्थाएं टूटने से परिवारों में हिंसा के नए-नए रूप सामने आ रहे हैं। पारिवारिक सौहार्द को बनाये रखने के लिए संवेगों पर नियंत्रण तथा सहिष्णुता का विकास बहुत आवश्यक है। अणुव्रत के ग्यारह नियम पारिवारिक हिंसा को रोकने के लिए बहुत ही कारगर है। जिन्हें अपनाकर पारिवारिक हिंसा को रोका जा सकता है।

सम्पत सामसुखा ने कहा परिवार बिखरने के कई घटक हैं। जिनमें सहिष्णुता, परिस्थितिजन्य, अहंकार, संग्रह प्रवृत्ति, संविभाग का अभाव, लोभवृत्ति, स्त्री-पुरुष दोनों का कामकाजी होना मुख्य है इन कारणों से परिवारों में जाने-अनजाने हिंसा हो रही है। इसका समाधान एकमात्र अणुव्रत है, जिसे अपनाकर हम पारिवारिक सौहार्द को बनाये रख सकते हैं।

व्याख्यानमाला का शुभारंभ अणुव्रत गीत से हुआ। कार्यक्रम का संयोजन मनोहर लाल बापना ने किया। आभार ज्ञापन ज्ञानचंद कांठेड़ ने किया। अतिथियों का स्वागत संस्थान अध्यक्ष मीठालाल गन्ना ने किया। कार्यक्रम में प्रेमसिंह तलेसरा, इन्द्रमल हिंगड़, शुभकरण चौरड़िया सहित स्थानीय अणुव्रत समितियों के पदाधिकारी एवं शहर के नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण समारोह

शेरपुर, 2 जनवरी। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' के सान्निध्य में अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण समारोह का आयोजन सभा भवन शेरपुर में हुआ। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर के निदेशक संजय भाई ने स्वागत करते हुए कहा सभी का सहयोग मिलने पर इस केन्द्र का नाम गांव से लेकर देश स्तर तक फैल रहा है। मंजीत कौर गोविन्दपुरा एवं अमनदीप कौर कातरो, ने अणुव्रत गीत का संगान किया एवं अपने अनुभव भी व्यक्त किए। किरणदीप कौर, ईना बाजवा ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। सरपंच गुरुचरण सिंह, संत बाबा निर्मल सिंह, दर्शन सिंह बाजवा ने शेरपुर केन्द्र की उपलब्धियों को लेकर अपने अनुभव बताए। इस कार्यक्रम में कातरो, ईना बाजवा खेड़ी खुर्द शेरपुर भगवानपुरा एवं गोविंदपुरा अहिंसात्मक रोजगार केन्द्र महिलाओं ने शामिल होकर अपने द्वारा निर्मित सामग्री को प्रदर्शनी एवं ग्राम मेला में सामान बेचने के लिए दुकान लगाई।

मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा नशा, कन्या भ्रूणहत्या, बेरोजगारी, दहेज-प्रथा इत्यादि समस्याओं को रोकने के लिए निरंतर प्रयास करते रहने की जरूरत है। 32 वां ग्राम श्री सेल मेला का उद्घाटन नायब तहसीलदार कंवरप्रीत सिंह पुरी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा महिलाओं को आजीविका प्रशिक्षण आज के लिए जरूरी है घर-घर में लघु उद्योग शुरू करके ही सारी समस्या का समाधान हो सकता है। महिलाओं को आत्मविश्वास के साथ हुनर सीखने की जरूरत है। नायब तहसीलदार पुरी की तरफ से नववर्ष के अवसर पर रोजगार प्रशिक्षण प्राप्त कर रहीं 61 महिलाओं को सुई, धागा, फीता आदि के पैकेट गिफ्ट के रूप में दिये। शेरपुर सभा एवं अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर की ओर से कंवरप्रीत सिंह पुरी, सरपंच गुरुचरण सिंह गोविंदपुरा एवं डॉ. हरेन्द्र प्रताप सिंह का शॉल एवं आचार्यश्री के साहित्य द्वारा सम्मानित किया गया। आभार ज्ञापन एडवोकेट पी.सी. सिंगला ने किया।

विद्यार्थियों द्वारा नशामुक्ति के संकल्प

लोहसना, 7 जनवरी। अणुव्रत शिक्षक संसद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अणुव्रत सेवी भीखम चंद नखत ने रा.मा. विद्यालय, लोहसना बड़ा की प्रार्थना सभा में अहिंसा प्रशिक्षण एवं जीवन विज्ञान की गतिविधियों का अवलोकन किया। सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास एवं नैतिकता की ओर अग्रसर होते हुए विद्यालय के समस्त 74 छात्र-छात्राओं ने आजीवन किसी भी प्रकार का नशा नहीं करने का संकल्प लिया।

अणुव्रत गीत का संगान तारामणि, ज्योति, सुनीता एवं प्रीति अग्रवाल ने किया। प्रधानाध्यापक लक्ष्मीनारायण ने स्वागत करते हुए भविष्य में इस प्रकार की प्रेरणा से लाभान्वित कराते रहने का अनुरोध किया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन शारीरिक शिक्षक प्यारेलाल ने किया। इस अवसर पर अहिंसा प्रशिक्षक के.जी. मूंदड़ा, झारखंड बी.एन. पांडे कार्यालय प्रभारी सुरेश कुमार एवं विद्यालय परिवार के समस्त शिक्षक उपस्थित थे।

सिलाई-मशीनों का वितरण

गंगापुर। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा संचालित अणुव्रत समिति गंगापुर के मार्गदर्शन में अणुव्रत ग्राम मैलोनी में आयोजित अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा सिलाई में प्रशिक्षित 10 महिलाओं को भीलवाड़ा के उद्योगपति चन्द्र सिंह/अशोक कुमार कोठारी के द्वारा अर्धमूल्य सौजन्य से उनकी मातुश्री धापूबाई कोठारी की स्मृति में समारोह मुख्य अतिथि शंकर सिंह राणावत एवं देवेन्द्र कुमार हिरण द्वारा सिलाई मशीनें वितरित की गयीं।

समारोह का प्रारंभ अणुव्रत गीत से हुआ। समिति के अध्यक्ष प्रकाश बोलिया ने समिति द्वारा संचालित गतिविधियों की चर्चा करते हुए अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। मुख्य अतिथि शंकर सिंह राणावत ने कहा अणुव्रत समिति गंगापुर का सघन कार्य है। विविध प्रवृत्तियां संचालित हैं। इस समिति ने देशभर में अपनी एक पहचान बनाई है। भविष्य में भी यह समिति गतिशील रहे और दूसरों के लिए प्रेरक बने।

अणुव्रत सेवी देवेन्द्र कुमार हिरण ने अणुव्रत समिति, अणुव्रत ग्राम एवं अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। जगदीश बैरवा, मांगीलाल शर्मा ने विचार व्यक्त किये। हस्तीमल नोलखा ने आभार व्यक्त किया एवं संचालन मदनलाल मंडोवरा ने किया।

अणुविभा का 27 वां स्थापना दिवस

राजसमंद, 30 दिसंबर। अणुविभा राजसमंद में 27 वें स्थापना दिवस का आयोजन बालोदय प्रकल्प के कार्याध्यक्ष सुरेश कावड़िया की अध्यक्षता, बसंतीलाल बाबेल के मुख्य आतिथ्य, साहित्यकार कमर मेवाड़ी व सुरेन्द्रपाल सिंह की प्रमुख उपस्थिति में मनाया गया। शुभारंभ कन्या मंडल द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। निदेशक बालमुकुन्द सनाढ्य ने विगत वर्षों की उपलब्धियों को रेखांकित किया। मनोहर गिरी, अफजल खां पठान, फतहलाल 'अनोखा' रमेश चपलोत, भगवानलाल बंशीवाल, सुरेन्द्र सिंघवी, पुष्पा कर्णावट व जीतमल कच्छारा ने अणुविभा एवं संस्थापक मोहन भाई को अन्योन्याश्रित बताते हुए इसे चमत्कारी घटना बताया। वक्ताओं ने अणुविभा को आचार्य तुलसी के आशीर्वाद का जीवंत स्वरूप बताते हुए उन्हें नमन किया।

मुख्य अतिथि डॉ. बसंतीलाल बाबेल ने कहा जीवन में जो अनमोल है वह नैतिक मूल्य है और अणुविभा के माध्यम से यह कार्य किया जा रहा है। प्राचार्य सुरेन्द्र सिंह पाल व साहित्यकार कमर मेवाड़ी ने अपने जीवन्त अनुभव प्रस्तुत किये। संयोजन मदन धोका ने किया।

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति

अहदाबाद, 7 जनवरी। मुख्य चुनाव अधिकारी सुरेन्द्र लूणिया की उपस्थिति में साधारण सभा में अहमदाबाद प्रवासी असाड़ा निवासी जवेरीलाल मुकनचंद संकलेचा को आगामी दो वर्ष के कार्यकाल हेतु गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पद हेतु सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया। अभातेयुप द्वारा श्रेष्ठ कार्यकर्ता अलंकरण से सम्मानित जवेरीलाल संकलेचा ने जैन विश्व भारती संस्थान लाडनूं से जैन विद्या एवं जीवन विज्ञान (दो विषयों) में एम.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। वे संघ एवं संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित हैं।

वर्तमान में सहयोग क्लॉथ एसोसिएशन के अध्यक्ष, अणुव्रत महासमिति कार्यसमिति में संगठन मंत्री तथा भारतीय रेडक्रॉस के आजीवन सदस्य सहित कई संस्थाओं में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इसके अलावा उन्होंने स्वयं 21 बार रक्तदान किया है।

www.terapanthinfo.com

स्वास्थ्य कार्यशाला एवं चिकित्सा शिविर

उदयपुर, 17 जनवरी। अणुव्रत समिति उदयपुर एवं एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज उमरड़ा के संयुक्त तत्वावधान में कॉलेज परिसर में ''स्वास्थ्य कार्यशाला एवं निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 493 ग्रामीणों एवं महाविद्यालय के छात्रों ने लाभ लिया। प्रचार मंत्री राजेन्द्र सेन ने कार्यशाला एवं चिकित्सा शिविर की जानकारी दी।

महाराणा भूपाल चिकित्सालय उदयपुर के चिकित्सा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. डी.पी. सिंह ने रक्तदान की महत्ता को प्रतिपादित किया। वरिष्ठ चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. असीत मित्तल ने सर्दी में त्वचा का रखरखाव विषय पर विचार रखे।

शिक्षाविद् पूर्व उपनिदेशक शिक्षा विभाग डॉ. रंगलाल धाकड़ ने छात्रों को व्यक्तित्व निर्माण एवं चारित्रिक निर्माण के गुर बताये तथा स्वाभिमान से जीने की कला को बताया।

कार्यशाला में समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया ने अणुव्रत समिति के कार्य-कलापों एवं उपाध्यक्ष सवाईसिंह पोखरना ने नशामुक्त जीवन जीने के लाभों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर कॉलेज के निदेशक अभय सिंघवी, संस्थापक मनमोहनराज सिंघवी, अणुव्रत समिति के महामंत्री अरुण कोठारी, जेल अधीक्षक एस.एस. शेखावत, राजेन्द्र सेन ने अपने विचार रखे।

कॉलेज परिसर में आयोजित निःशुल्क चिकित्सा शिविर में फिजीशियन डॉ. डी.पी. सिंह, शल्य चिकित्सक डॉ. के.सी. व्यास, वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. विमलेश माथुर, चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. असीत मित्तल, वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. देवेन्द्र सरीन एवं डॉ. धर्मसिंह ने अपनी सेवाएं दी।

सभी रोगियों को निःशुल्क दवाइयां एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज उमरड़ा के सौजन्य से दी गयी। शिविर संयोजक अरविन्द चित्तौड़ा ने बताया कि लगभग 493 रोगियों को सप्ताह भर की दवाइयां निःशुल्क दी गयी। इस अवसर पर उमरड़ा कॉलेज द्वारा शिविर में अपनी सेवाएं देने वाले चिकित्सकों को सम्मान शॉल एवं स्मृति चिह्न द्वारा किया गया। शिविर में अशोक राठौड़, जमनालाल दशोरा, सुधीर कोठारी, राजेन्द्र सेन, सुरेश सिंयाल, रूपशंकर पालीवाल, राकेश चित्तौड़ा, राजकुमार सोनी, डॉ. शोभालाल औदिच्य, राधा किशन व्यास, भंवर भारती, रामप्रसाद गुप्ता, गणपत सोनी, डॉ. जयराज आचार्य का सहयोग रहा।

अणुव्रत समिति सायरा

सायरा, 17 जनवरी। अणुव्रत समिति सायरा के मंत्री 'अणुव्रत सेवी' जसराज जैन के अनुसार समिति द्वारा करीबन दो वर्षों से किये जा रहे पत्राचार के प्रयत्न से सूचना अधिकारी अतिरिक्त जिला प्रबंधक उदयपुर द्वारा पत्र क्रमांक एफ-41/2/सू.अ5/दिनांक 4-1-2010 द्वारा जानकारी मिली है कि ब्लॉक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सायरा ने अपर महाप्रबंधक उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भंडार द्वारा समाज को दवाइयां उपलब्ध कराने के लिए दुकान खोलने की स्वीकृति दे दी है। यह समाज सेवा के क्षेत्र में अणुव्रत समिति सायरा की बड़ी उपलब्धि है। इस दुकान के खुलने से क्षेत्र के मरीजों को समय पर उचित और प्रामाणिक दवाइयां उपलब्ध हो सकेंगी। इससे कार्यकर्ताओं में प्रसन्नता झलक रही है।

अनुप्रेक्षा के प्रयोग से स्वभाव में परिवर्तन

नई दिल्ली, 15 जनवरी। शासन गौरव मुनि ताराचंद व मुनि सुमतिकुमार का अध्यात्म साधना केन्द्र में दो सप्ताह का प्रवास प्रेरणादायी रहा। मुनिश्री के सान्निध्य में दो दिवसीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन हुआ। मुनिश्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा व्यक्ति यदि अपने को चिंतामुक्त और सुखी बनाना चाहता है तो उसे अपने मन को शांत रखना अत्यावश्यक है। मन शांत रहेगा तो कर्मों का बंधन कम होगा। मुनि सुमतिकुमार, मुनि देवार्यकुमार ने विचार रखे। स्वामी धर्मानंद ने आसन-प्राणायाम के प्रयोग कराये।

मुनिश्री दादावाड़ी भी पधारे। वहां उपस्थित साध्वी युगल निधि कृपा से मुनिश्री ने आचार्य महाप्रज्ञ एवं अणुव्रत आंदोलन की चर्चा की।

मुनिश्री के अध्यात्म साधना केन्द्र प्रवास में गुड़गांव, महरौली व आसपास के क्षेत्रों से काफी लोगों ने उपस्थित हो धर्मलाभ लिया।

अणुव्रती कार्यकर्ताओं का सम्मान

● गंगापुर।

'अणुव्रत सेवी' देवेन्द्र कुमार हिरण द्वारा उत्कृष्ट धार्मिक एवं आध्यात्मिक लेखन के संदर्भ में मेवाड़ की 62 वर्षीय सामाजिक संस्थान श्री मेवाड़ कॉन्फ्रेन्स द्वारा वार्षिक अधिवेशन में वरिष्ठ लेखक के रूप में सम्मानित किया गया। संस्थान के अध्यक्ष एवं सेवानिवृत न्यायाधीश डॉ. बसंतीलाल बाबेल ने देवेन्द्र कुमार हिरण का शाल्यार्पण एवं सम्मान पत्र देकर सम्मान किया। हिरण पूर्व में मेवाड़ अणुव्रत समिति, राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति, अणुव्रत महासमिति, आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव समिति, प्रज्ञा पर्व समिति के साथ-साथ प्रशासन द्वारा प्रखंड स्तर पर एवं जिला स्तर पर सम्मानित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त मेवाड़ मंडल अहमदाबाद, गांधी सेवा सदन राजसमंद का स्वर्ण जयंती वर्ष, अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का स्वर्ण जयंती वर्ष एवं महावीर इंटरनेशनल इत्यादि संस्थाओं द्वारा भी सम्मानित हो चुके हैं। श्री हिरण का समूचा जीवन समाज सेवा, लोक सेवा, अणुव्रत सेवा एवं रचनात्मक सेवा के लिए समर्पित रहा है। अणुव्रत परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

● भिवानी, 20 जनवरी।

अणुव्रत समिति भिवानी के अध्यक्ष एवं समाजसेवी डॉ. जे.बी. गुप्ता के सेवाकार्यों का अंकन करते हुए महासभा कोलकाता द्वारा 'कल्याणमित्र' अलंकरण से सम्मानित किया गया है। समिति के मंत्री रमेश बंसल ने बताया कि उन्होंने श्रीडूंगरगढ़ में आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में यह सम्मान ग्रहण किया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा सेवा को प्रोत्साहन मिलना चाहिए और उन्हें अलंकृत करने से जहां एक ओर समाज में प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा होती है वहीं दूसरी ओर सम्मानित व्यक्ति व उसके परिवारजनों पर समाज की सेवा का उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है। आचार्यश्री ने सभी से आह्वान किया कि वे सेवा के पथ पर चलकर अपने जीवन को नई दिशा दें। अपने अलंकरण से अभिभूत डॉ. जे. बी. गुप्ता ने कहा कि वे और अधिक ऊर्जा से समाज के असहाय लोगों की सेवा में जुटेंगे। यह मेरा नहीं बल्कि पूरे भिवानी शहर का सम्मान है। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के संरक्षक सुरेन्द्र जैन एडवोकेट, प्रादेशिक समिति के अध्यक्ष प्रो. देवेन्द्र जैन, विकास जैन, गौरव जैन, सारिका जैन, श्यामसुंदर गौतम, अजीत तिगडाना, भरत सोलंकी कई अणुव्रती कार्यकर्ता उपस्थित थे। अणुव्रत परिवार की हार्दिक बधाई।

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना

अणुव्रत की आचार संहिता व्यापक आचार संहिता है। अणुव्रत का अर्थ है– नैतिकता। आज चहुँ ओर हाहाकार है। समूचा मानव समाज पीड़ित है अनैतिकता से। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, संचार माध्यम, शिक्षण संस्थान सभी भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर में लिप्त हैं। बढ़ते भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर ने हमारी विकास यात्रा की गति को मंद कर दिया है। समाज में व्याप्त इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाना भी आसान नहीं है क्योंकि हर डाल पर वे अपना डेरा डाले बैठे हैं। हाँ, इन बुराइयों के मूल कारणों पर प्रहार कर एक दीपक जला समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा को पुनः पैदा किया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन ने समाज में व्याप्त बुराइयों पर अँगुली उठाई है। हमारे साधन, शक्ति सीमित हैं। अँगुली निर्देश का यह क्रम न सिर्फ गतिशील रहे वरन् लोकव्यापी बने और अणुव्रत की कार्यकर्ता शक्ति अनैतिकता के सामने प्रतिरोधक शक्ति बनकर खड़ी हो इस दृष्टि से अणुव्रत महासमिति के पास पूरे साधन हो यह भी अत्यन्त आवश्यक है।

आने वाले पाँच वर्षों में अणुव्रत की सर्व प्रवृत्तियाँ सुचारू रूप से संचालित हों और अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप में तेजस्विता आए इस दृष्टि से अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना का वर्ष 2009–10 से प्रारंभ हुआ है। इस योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक निश्चित अर्थ राशि विसर्जित करने वाले अर्थ प्रदाताओं के तीन वर्ग हैं–

विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 51000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
विशेष अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 21000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 11000=00 रु. का अर्थ सहयोग**

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना के अन्तर्गत पाँच वर्षों तक नियमित रूप से अर्थ विसर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। महाप्रतापी अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए अणुव्रत महासमिति की प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन हेतु इस योजना का श्रीगणेश हुआ है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर अणुव्रत आंदोलन के प्रचार–प्रसार में सहभागी बनें। आपका अर्थ सहयोग हमारे कार्य का आधार सम्बल बनेगा। अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना में अभी तक निम्न महानुभावों ने जुड़कर अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप को निखारने में अपनी सहभागिता अंकित कराई है–

- **विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी**

1. श्री जुगराज नाहर	चैन्नई	2. श्रीमती शांता नाहर	चैन्नई
3. श्री बी.सी भलावत	मुम्बई	4. श्री रमेश धाकड़	मुम्बई
5. श्री कमलेश भादानी	तिरूपुर	6. श्री मगन जैन	तुषरा

- **विशेष अणुव्रत योगक्षेमी**

1. श्री बाबूलाल गोलछा	दिल्ली	2. श्री सम्पत वागरेचा	वाशी
3. श्री सम्पत सामसुखा	भीलवाड़ा	4. श्री जसराज बुरड़	जसोल
5. श्री निर्मल नरेन्द्र रांका	कोयम्बतूर	6. श्री गोविन्दलाल सरावगी	कोलकाता
7. श्री ताराचंद दीपचंद ठाकरमल सेठिया	जलगांव		

- **अणुव्रत योगक्षेमी**

1. श्री जी.एल.नाहर	जयपुर	2. श्री विजयराज सुराणा	दिल्ली
3. श्री मीठालाल भोगर	सूरत	4. श्री बाबूलाल दूगड़	आसीन्द
5. श्री गुणसागर डॉ. महेन्द्र कर्णावट	राजसमन्द	6. श्री अंकेशभाई दोषी	सूरत
7. श्री महावीर मेड़तवाल	राजाजी का करेड़ा	8. श्री इन्द्रमल हिंगड़	भीलवाड़ा
9. श्रीमती भारती मुरलीधर कांठेड़	दिल्ली	10. श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट	उदयपुर

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर हम सभी प्रयास करें स्वस्थ समाज संरचना के सपने को धरती पर उतारने का। इस क्रम में आपका त्वरित सहयोग प्राप्त हो यही अनुरोध है। आप अपनी विसर्जन राशि बैंक ड्राफ्ट से अणुव्रत महासमिति के नाम से नई दिल्ली भिजवायें या केनरा बैंक की किसी भी स्थानीय शाखा में अणुव्रत महासमिति के खाता क्रमांक **0158101010750** में जमा करायें।

आपका सहयोग : हमारा आधार संबल

www.terapanthinfo.com